२४८७

॥ गहूंली

एमां जूदा जु

एकशो ने दश

यथायो

सम्यक्दृष्टि श्र

वांचवा न्मण

श्री मुंबई

"निर्णयसागर" प्रेस

संवत् १९३७ ना श्रावण श

॥ एहने

१४८७

॥ अथ ॥

॥ श्री माहावीर स्वामीना पांच वधावा प्रारंभः ॥

॥ तत्र वधावो पहेलो ॥

॥ हुंतो मोही रे नंदना लाल, मोरली तानें रे ॥ ए देशी॥
॥ वंदी जगजननी ब्रह्माणी, दाता अविचल वाणी रे ॥ कल्याणक प्रभुनां गुणखाणी, थुणशुं उलट आणी ॥ १ ॥ एहने सेवोने ॥ प्रभु शासननो सुलतान ॥ एह ने सेवोने ॥ जस इंद्र करे बहु मान ॥ एहने सेवोने ॥ एतो भवोदधि तरण सुखान ॥ एहने सेवोने ॥ २ ॥ कीधुं त्रीजे भव वरथानक, अरिहा गोत्र निकाच्युं रे ॥ ते अनुसरवा वरवा केवल, करवा तीरथ जाचुं ॥ एहने० ॥ ३ ॥ कल्याणक पहेले जगवल्लभ, त्रण ज्ञानी महाराय रे ॥ दशमा स्वर्ग विमानथी प्रभुजी, भोगवी सुरनुं आय ॥ एहने० ॥ ४ ॥ जंबुद्वीपें भरत क्षेत्रमां, क्षत्रिकुंभ सुखकार रे ॥ श्रीसिद्धारथ त्रिशला उदरें, लेवे प्रभु अवतार ॥ एहने० ॥ ५ ॥ चउद सुपन देखे तब त्रिशला, गजवृषभादि उदार रे ॥ ह रखी जागी चिंते मनमां, माने धन्य अवतार ॥ एहने०

॥६॥ बहु उछरंगें जइ पीयुसंगें, सघली वात सुणावे रे ॥ सुभगे लाभ पुत्रनो होशे, पीयुनां वचन वधावे ॥ एहने० ॥ ७ ॥ स्वपनाफल पूछी पाठकने, गर्भ वहे नृपराणी रे ॥ दीप कहे इम प्रथम वधावो, गावे सुर इंद्राणी ॥ एहने० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ वधावो बीजो ॥

॥ श्रावण वरसे रे सुजनी ॥ ए देशी ॥

॥ बीजे वधावे रे सुजनी, चैतर शुदि तेरशनी रजनी ॥ जनम्या जिनवर जग उपकारी, हुं जाउं तेहनी बलि हारी ॥ बीजे वधावे रे सुजनी ॥ १ ॥ छप्पन दिशि कुमरी तिहां आवे, पूजी शुचिजलशुं नवरावे ॥ जीवो महीधर लगें जिनराया, अविचल रहेजो त्रिशलाना जाया ॥ बी० ॥ २ ॥ गिरुआ प्रभुनुं वदन निहाली, चाली चोपें चतुरा बाली ॥ हरख्यो सुरपति सोहम स्वामी, जाणी जनम्या जगविशरामी ॥ बी० ॥ ३ ॥ घोषा घंटा तव वजडावे, ततक्षण देव सहु तिहां आवे ॥ प्रभु ग्रही कंचनगिरि पर ठावे, स्नान करी जिननें नवरावे ॥ बी० ॥ ४ ॥ एक कोड वली ऊपर जाणो, शाठ लाख संख्या परमाणो ॥ सहु कलशा शुचि जलशुं भरिया, ततक्षण सोहम संशय धरिया ॥ बी०

॥ ५ ॥ चिंते लघुवय छे प्रभु वीर, किम सहेशे जल धारा नीर ॥ वीरें तस मन संशय जाणी, करवा चित्रित अतिशय नाणी ॥ बी० ॥ ६ ॥ महीधर निज अंगुठे चंप्यो, ततक्षण मेरु थर हर कंप्यो ॥ मानुं नृत्य करे छे रसिउं, प्रभुपद फरसे थइ उल्लसिउं ॥ बी० ॥ ७ ॥ जाण्युं इंद्रें सहु विरतंत, बोले कर जोडी भगवंत ॥ गुनहो सेवकनो ए सहेजो, मिथ्या दुःकृत एहनो होजो ॥ बी० ॥ ८ ॥ स्नात्र करी माताने समर्पे, हवी पहोता नंदीश्वर द्वीपें ॥ पूरण लाहो रे लेवा, अठाइ महोत्सव तिहां करेवा ॥ बी० ॥ ए ॥ पुत्रवधाई निसुणी राजा, पंच शब्द वजडावे वाजां ॥ निज परिकर संतोषी वारू, वर्द्धमान नाम हवे उदारु ॥बी०॥ १० ॥ अनुक्रमें जोवन वय जब थावे, नृपति राजपुत्री परणावे ॥ भोगवी प्रभु संसारिक भोग, दीप कहे मन प्रगट्यो जोग ॥ बी० ॥ ११ ॥ इति॥

॥ वधावो त्रीजो ॥

॥ भवि तुमें वंदो रे सूरीश्वर गछराया ॥ ए देशी ॥

॥ हवे कल्याणक त्रीजुं बोलुं, जगगुरु दीक्षा केरुं ॥ हर्षित चित्तें भावें गावे, तेहनुं भाग्य भलेरुं ॥ सहि तुमें सेवो रे कल्याणक उपकारी ॥ संयम मेवो रे आ

तमनें हितकारी ॥ १ ॥ लोकांतिक सुर अमृतवय
णें, प्रभुनें एम सुणावे ॥ बूझ बूझ जगनायक लायक,
इम कहीने समजावे ॥ स० ॥ २ ॥ एक क्रोडनें
आठ लाखनुं, दिनप्रत्यें दीए दान ॥ इणिपरें संव
त्सर लगें लईने , दीन वधारे वान ॥ स० ॥ ३ ॥
नंदीवर्द्धननी अनुमति लेईने, वीर थया उजमाल ॥
प्रभु दीक्षानो अवसर जाणी, आव्यो हरि ततका
ल ॥ स० ॥ ४ ॥ थापी दिसि पूरवने साहामा, दी
क्षामहोत्सव कीधो ॥ पालखीएं पधरावी प्रभुनें, ला
ज अनंतो लीधो ॥ स० ॥ ५ ॥ सुरगण नरगणनें स
मुदायें, दीक्षायें संचरिया ॥ माता धाव कहे शिखा
मण, सुण त्रिशला नानडिया ॥ स० ॥ ६ ॥ मोह
मल्लनें जेर करीने, धरजो उज्ज्वल ध्यान ॥ केवल
कमला वहेली वरजो, देजो सुकृत दान ॥ स० ॥ ७ ॥
इम शीखामण सुणते सुणते, थुणते बहु नर
नारी ॥ पंच मुष्टिनो लोच करीने, आप थया व्रत
धारी ॥ स० ॥ ८ ॥ धन्य धन्य श्री सिद्धारथनंदन,
धन्य त्रिशलाना जाया ॥ धन्य धन्य नंदीवर्द्धन बंधव,
इम बोले सुरराया ॥ स० ॥ ९ ॥ अनुमति लेई नि
ज बंधवनी, विचरे जगदाधार ॥ सुमतें सुमता गुप्तें

गुप्ता, जीवदयाजंमार ॥ स० ॥ १० ॥ सिंह स
मोवड कुर्द्धर थईनें, कठिन कर्म सहु टाले ॥ जगज्ज
यवंतो शासननायक, इणिपरें दीक्षा पाले ॥ स०॥
॥ ११ ॥ दीक्षाकल्याणक ए त्रीजुं, सहि तुमे दिलमां
लावो ॥ एम वधावो त्रीजो सुंदर, दीप कहे सहु
गावो ॥ स० ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ वधावो चोथो ॥

॥ अविनाशीनी सेजडीएं, रंग लागो मोरी सुजनी
जी ॥ ए देशी ॥

॥ चोथुं कल्याणक केवलनुं, कहुं हुं अवसर पामी
जी ॥ जग उपकारी जगबंधवने, हुं प्रणमुं शिर ना
मी ॥ सांजल सुजनी जी ॥ १ ॥ वैशाख शुदि दशमी
ने दिवसें, पाम्या केवल ज्ञान जी ॥ बार जोयण एक
रातें चाल्या, जाणी लाज निधान ॥ सां० ॥ २ ॥ अ
प्पापा नयरीएं आव्या, महसेन वन विकसंत जी ॥
गणधरनें वली तीरथ थापन, करवाने गुणवंत ॥
सां० ॥ ३ ॥ भुवनपति व्यंतर वैमानिक, ज्योतिषी
हरि समुदाय जी ॥ वीश बत्रीश दश दोय मलीने, ए
चोशठ कहेवाय ॥ सां० ॥ ४ ॥ त्रिगडानी रचना
करी सारी, त्रिदशपति अति नारी जी ॥ मध्य पीठ

ऊपर हितकारी, वेगा जग उपकारी ॥सां० ॥५॥ गुण पांत्रीश सहित प्रभुवाणी, निसुणे छे सहु प्राणी जी ॥ लोकालोक प्रकाशक वाणी, वरसे छे गुणखाणी ॥ सां० ॥ ६ ॥ मालकोश धुनराग समाजें, जलधरनी परें गाजे जी ॥ आतपत्र प्रभु शिरपर राजे, नामं फल छवि छाजे ॥ सां० ॥ ७ ॥ नीकी रचना त्रणे गढनी, प्रभुनां चारे रूप जी ॥ वली केवल कमला नी शोभा, निरखे सुर नर भूप ॥ सां० ॥ ८ ॥ इंद्र भूति आदे सहु मलीनें, जगन करे भूदेव जी ॥ विद्या वेदतणा अभ्यासी, अभिमानी अहमेव ॥ सां० ॥ ए ॥ ज्ञानी आव्या निसुणी कानें,. मनमें गर्व धरंत जी ॥ आव्यो त्रिगडे वाद करेवा, दीठो जग जयवंत ॥ सां० ॥ १० ॥ ततक्षण नामादिक बोला वे, तुल्य सहुने जाणी जी ॥ जीवादिक संदेह निवा री, थाप्यो गणधर नाणी ॥ सां० ॥ ११ ॥ त्रिपदि पामी प्रभु शिर नामी, द्वादशांगी सुविचारी जी ॥ पद छ लाख छत्रीश सहस्सनी, रचना कीधी सारी ॥ सां० ॥ १२ ॥ चालो तो जोवाने जइयें, वंदीजें जग वीर जी ॥ वली प्रणमीजें सोहम पटधर, गौतम स्वामी वजीर ॥ सां० ॥ १३ ॥ निरखीजें प्रभुजीनी

मुइा, नरभव सफलो कीजें जी ॥ प्रभुजीनुं बहु मा
न करीने, लाभ अनंतो लीजें ॥ सां० ॥ १४ ॥
वारे वारे कहुं छुं तो पण, तुंतो मनमां नाणे जी ॥
म्हारा मनमां हौंश अछे ते, केवल ज्ञानी जाणे ॥
सां० ॥ १५ ॥ सखिवयणें एम थई उजमाली, चा
ली सघली बाली जी ॥ निसुणी दश आशातना
टाळी, प्रभुवाणी लटकाली ॥ सां०॥ १६ ॥ इणीपरें
त्रीश वरश केवलथी, बहु नरनारी तारी जी ॥ इम
वधावो चोथो सुंदर, दीप कहे सुखकारी ॥ सां०॥१७॥

॥ वधावो पांचमो ॥

॥ आदिजिनेसर विनति हमारी ॥ ए देशी ॥

॥ कल्याणक पांचमुं जिनजीनुं, गावो हर्ष अपार वा
ला ॥ जगवल्लभ प्रभुना गुण गाई, सफल करो अवता
र वाला ॥ शासननायक तीरथ वंदो ॥ १ ॥ ए आं
कणी ॥ जग चातकने दान दीयंता, विचरंता जगभा
ण वाला ॥ मध्य अप्पापा नगरी पधास्या, प्रणमे प
द महिराण वाला ॥ शा० ॥ २ ॥ प्रभुएं लाभालाभ
न विचारी, अणपूछ्यो उपदेश वाला ॥ शोल पहोर
लगें अमृतवाणी, वरस्या भवि उपदेश वाला ॥
शा० ॥ ३ ॥ दीवालीदिन मुक्ति पधास्या, पाम्या पर

मानंद वाला ॥ अजर अमरपद ज्ञान विलासी, अक्षय सुखनो कंद वाला ॥ शा० ॥ ४ ॥ ए प्रभु कर्त्ता अकर्त्ता भोक्ता, निजगुणें विलसंत वाला ॥ दर्शन ज्ञान चरणनें वीरज, प्रगट्या सादि अनंत वाला ॥ शा० ॥ ५ ॥ छे आकाश असंख्य प्रदेशी, तेह्ना गुण छे अनंत वाला ॥ एतो एक प्रदेशें साहिब, अनंत गुणे भगवंत वाला ॥ शा० ॥ ६ ॥ ए प्रभु ध्येयने सेवक ध्याता, एह्मां ध्यान.मिलाय वाला ॥ त्रिक जोगें पूर्णता प्रगटे, सेवक ए समवाय वाला ॥ शा० ॥ ७ ॥ गावो पांचमो मोक्षवधावो, ध्यावो वीर जिणंद वाला ॥ शुभलेश्याएं जग गुरु ध्यानें, टालो भवभय फंद वाला ॥ शा०॥ ८ ॥ इम प्रभुवीरतणां कल्याणक, पांच भवोदधि नाव वाला ॥ श्रीविजयलक्ष्मी सूरीश्वर राजे, में गाया शुभ भाव वाला ॥ शा० ॥ ए ॥ श्रीजिनगणधर आणारंगी, कपूरचंद विशराम वाला ॥ तस आग्रहथी हर्षित चित्तें, खंभात नयर सुगाम वाला ॥ शा० ॥ १० ॥ पंडित श्रीगुरु प्रेमपसाएं, गाया तीरथराज वाला ॥ दीपविजय कहे मुजने होजो, तीरथफल महाराज वाला ॥ शा० ॥ ११ ॥ इति पांच वधावा संपूर्ण ॥

॥ अथ गहूंली लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम गहूंली ॥

॥ कुंमर पागले पग दइने चडिआ ॥ ए देशी ॥

॥ रूडी गहूंअली रंग रसाली, जिनशासनमांहे नित्य रे दीवाली ॥ रूडी राजगृही अति शोहे, ते देखी त्रिभु वन मन मोहे ॥ १ ॥ तिहांतो वीर आव्या रे चो मासें, राजा श्रेणिक वंदे उल्लासें ॥ तस अनय कुम र परधान, मंत्री बहु बुद्धिनिधान ॥ २॥ राजा श्रेणि कनी घर नार, शिरोमणि चेलणा सार ॥ बार व्र तनी साडीज पहेरी, नव वाडनी घाटडी घहेरी ॥३॥ पहेर्यां जिनगुण नूषण अंगें, गुरुगुण गावे ममरं गें ॥ समकित कचोलुं रे नरियुं, श्रद्धामांहे कुंकुम घोल्युं ॥ ४ ॥ पंचाचार ते पंच रतन, ठवणी उपरें करो रे जतन ॥ मन निर्मल मोती वधाये, ते तो शि वरमणीसुख पावे ॥ ५ ॥ बुध न्यायसागरनो शिष्य, जे नणशे जिनगुण जगीश ॥ तस घर होए कोड कल्याण, वली पामे मोक्ष सुजाण ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली बीजी ॥

॥ वालो माहारो आव्या श्रीगोकुल गाम रे ॥ ए देशी ॥

॥ चंद्र वदनी मृगलोयणी, एतो सजि शोले शणगार रे ॥ एतो आवी जगगुरु वांदवा, धरि हैडे हर्ष अपार रे ॥ १ ॥ एतो मुक्ताफल मूठी जरि, रचे गहूंली परम उदार रे ॥ जिहां वाणी जोजन गामिनी, घन वरसे अखंमित धार रे ॥ २ ॥ हांरे जिहां रजत कनक रत्नना, सुररचित त्रण प्राकार रे ॥ तस मध्य मणि सिंहासने, शोजित श्रीजगदाधार रे ॥ ३ ॥ जिहां नरपति खगपति लसपति, सुरपति युत परखदा बार रे ॥ लब्धिनिधान गुण आगरु, जिहां गौतमादि गणधार रे ॥ ४ ॥ जिहां जीवादिक नव तत्वना, षट्द्रव्यजेद विस्तार रे ॥ एतो श्रवण सुणि निर्मल करे, निज बोध बीज सुखकार रे ॥५ ॥ जिहां त्रण छत्र त्रिजुवन उदित, सुर ढालत चामर चार रे ॥ सखि चिदानंदकी वंदना, तस होजो वारंवार रे ॥६॥

॥ अथ गहूंली त्रीजी ॥

॥ घरे आवोजी आंबो मोरीउ ॥ ए देशी ॥

॥ महावीरजी आवी समोसख्या, राजगृही नयरी उद्यान ॥ समवसरण देवें रच्युं, तिहां बेग श्रीवर्द्धमान ॥ महा० ॥ १ ॥ वनपालकें आपी वधामणी, हरख्यो श्रेणिक नूपाल ॥ गौतम आदि गणधरु, साधवी ठ

त्रीश हजार ॥ महा० ॥ २ ॥ राजा गज शणगाख्या मलपता, तूर्य तणो नहिं पार ॥ राजा बहु सामग्री एं संचख्यो, साथें मंत्री अजय कुमार ॥ महा०॥ ३ ॥ ढोल ददामा गडगडे, सरणाइ अतिहि रसाल ॥ राय गजथकी हेठा ऊतख्या, आवी वांदे प्रजुजीना पाय ॥ महा० ॥ ४ ॥ राय त्रण प्रदक्षिणा देई करी, आवी बेठा सजा मोझार॥राणी चेलणा लावे गहुंअली, साथें सखियोनो परिवार ॥ महा० ॥ ५ ॥ राणिएं घाट उ ढयो रे घूटा तणो, राणी चेलणानो शणगार ॥ रा णीयें कुंकुम घोल्यां कुंकावटी, राणिएं लीधुं श्रीफ ल श्रीकार ॥ महा० ॥ ६ ॥ राणी चेलणा पूरे गहूं अली, महावीरने पावला हेठ ॥ राणी बहु परिवारें परवरी, राणी गावे गीत रसाल ॥ महा० ॥ ७ ॥ राणी लली ललीलीये रे लूंठणां, राणी पूजे प्रजुजी ना पाय ॥ महावीरनी देशना सांजली, समकित पाम्यो नरराय ॥ महा० ॥ ८ ॥ प्रजु तुम सरीखा गुरु मुऊ मल्या, महारी ऊुर्गति दूर पलाय ॥ प्रजु सेवक जाणी तारजो, मुने मुक्ति तणां सुख थाय ॥ महा०॥ए॥

॥ अथ जीवाजिगम सूत्रनी गहूंली चोथी ॥

॥ जवि तुमे वंदो रे सूरिश्वर गछराया ॥ ए देशी ॥

॥ सहियर सुणीएं रे जीवाजिगमनी वाणी, मीठी ला
गे रे मुजने वीरनी वाणी ॥ ए आंकणी ॥ सूत्रतणी
रचना गणधरनी, अर्थ ते वीरें जांख्या ॥ गौतम पू
छे बे कर जोडी, आतमहित करी दाख्या ॥ स० ॥
मी० ॥ १ ॥ जीव अजीव तणी जे रचना, पूछी
गौतम स्वामी ॥ नरक निगोद तणी जे वातो, जां
खे अंतरजामी ॥ स० ॥ मी० ॥ २ ॥ साते नरक
तणां डुःख जांख्यां, आतमहित करी शीख्या ॥ जे जे
प्रश्न पूछे गोयम, ते ते प्रजुजीएं जांख्या ॥ स० ॥
मी० ॥ ३ ॥ पांच अनुत्तर तणी जे रचना, विविध
प्रकारें जांखी ॥ जविक जीवने सुणवा कारण, श्री
जिन आगम साखी ॥ स० ॥ मी० ॥ ४ ॥ मीठी वा
णीएं गहूंली गावे, वीर जिणंद वधावे ॥ स्वस्तिक पूरे
जाव धरीने, अक्षतें करीने वधावे ॥ स० ॥ मी० ॥
॥ ५ ॥ नौतनपुरमां रंगें गाई, गहूंली चढते उमंगें ॥
कहे मुक्ति जिन राजनो वाणी, सुणजो अति उछरंगें
॥ स० ॥ मी० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ जगवती सूत्रनी गहूंली पांचमी ॥

॥ जवि तुमे वंदो रे सूरिश्वर गछराया ॥ ए देशी ॥
॥ सहियर सुणियें रे जगवती सूत्रनी वाणी ॥ पात

क हणीएं रे, आतमने हित आणी ॥ ए आंकणी ॥ समकितवंत तणी ए करणी, नवसागर उद्धरणी ॥ नरकनिगोद तणी गति हरणी, मोक्षतणी निशरणी ॥ स० ॥ १ ॥ पंचम अंग विवाह पन्नत्ती, बीजुं नगवती नाम ॥ शतक एकतालीश बहु उद्देशें, अनंतानंत गुणधाम ॥ स० ॥ २ ॥ वीर जगत गुरु गौतम गणधर, जोडी मोहनगारी ॥ प्रश्न छत्रीश हजार प्रकास्या, वाणीनी बलिहारी ॥ स० ॥ ३ ॥ गंग मुनि सिंहामुनिवरना, प्रश्न सरस छे जेहमां ॥ नाव नेद षट्द्रव्य प्रकास्यां, अमृतरस छे एहमां ॥ स०॥४॥ संगराम सोनी प्रमुख जे नावी, समकितवंत प्रसिद्धो ॥ प्रश्नें कंचन मोर ठवीने, नरनव लाहो लीधो ॥ स० ॥ ५ ॥ स्वस्तिक मुक्ताफलशुं वधावो, ज्ञाननक्ति गुरु सेवा ॥ नगवती अंग सुणो बहु नावें, चाखो अमृत मेवा ॥स०॥ ६॥ वीरक्षेत्रना सकल संघने, विघ्न हरे वरदाई ॥ दीपविजय कहे नगवती सुणतां, मंगल कोट वधाई ॥ स० ॥ ७ ॥ इति० ॥

॥ अथ गहूंली छठी ॥

॥ चालोने बाई चालोने जुउ, सोहम गणधर रचना रे ॥ चालोने बाई चालोने० ॥ ए आंकणी ॥

॥ राजगृही नगरी शोहामणी, तस वनमां सोहम आव्या रे ॥ राजा कोणीक वंदन आवे, जाव धरीने वधावे रे ॥ चा० ॥ १ ॥ चतुरंगिणी सेना लेई आवे, आणंद मंगल पावे रे ॥ बहु युक्तें करी सोहम वांदे, राजा मन आणंदे रे ॥ चा० ॥ २ ॥ केई मुनि तपसी केई व्रत धारी, केई संजमना रसिया रे ॥ केई मुनि जिनआणाने धारे, वारे विषय कषाय रे ॥ चा० ॥ ३ ॥ प्रत्येकें सहु मुनिने वांदे, जव जल पार उतरवा रे ॥ रजत रकेबी हाथ धरीने, सोहम स्वामी वधावे रे ॥ चा० ॥ ४ ॥ चिहुं गति वारक साथीउ पूरे, मोतीथालें वधावे रे ॥ पद्मावती राणी मनरंगें, शोल सज्या शणगार रे ॥ चा० ॥ ॥ ५॥ बहु सखीने परिवारें राणी, मनमां उलट आणी रे ॥ कोणिक राजा देशना निसुणे, वाणी अमृत सरखी रे ॥ चा०॥ ६ ॥ जाव धरीने राजा राणी, अभिनव निसुणी वाणी रे ॥ जलधर वाणी निसुणी राजा, वाज्यां सुजशना वाजां रे ॥ चा० ॥ ७ ॥ लुजपुर मंमण चिंताचूरण, श्रीचिंतामणि स्वामी रे ॥ चिहुं गति चूरण गहूंली गाई, संघने सदा वधाई रे ॥ चा०॥ ८ ॥ जे गहूंली गाशे मनरंगें, तस घर

नित्य उबरंग रे ॥ श्रीजिनआणा पाळे अहोनिश, मु क्तिपद पामे विशेष रे ॥ चा० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली सातमी ॥

॥ जात्रीणां जात्रा नवाणुं करीयें रे ॥ ए देशी ॥

॥ सखी सरस्वती जगवती माता रे, कांइ प्रणमीजें सुख शाता रे, कांइ वचन सुधारस दाता ॥ १ ॥ गुणवंता सांजळो वीर वाणी रे, कांइ मोक्ष तणी निशा णी ॥ गु० ॥ ए आंकणी ॥ कांई चोवीशमा जिन राया रे, साथें चौद सहस्स मुनि राया रे, जेहना सेवे सुर नर पाया ॥ गु० ॥ कां० ॥ २ ॥ सखी चतुरंग फोजां साथ रे, संखि आव्या श्रेणिक नर नाथ रे, प्रजु वंदीने हुआ सनाथ ॥ गु० ॥ कां० ॥ ३ ॥ वहु सखि संयुत्त राणी रे, आवी चेलणा गुणखाणी रे, एतो जामंफलमां उजाणी ॥ गु० ॥ कां० ॥ ४ ॥ करे सा थीउं मोहन वेल रे, कांई प्रजुने वधावे रंग रेल रे, कांई धोवा कर्मना मेल ॥ गु० ॥ कां० ॥ ५ ॥ बारे परषदा निसुणे वाणी रे, कांई अमृतरस सम जाणी रे, कांई वरवा मुक्ति पटराणी ॥ गु० ॥ कां० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली आठमी ॥

॥ आजो रे बाइ आजो रे, सोजागी गुरुनां पगलां

रे॥ पगले पगले रत्न जडावूं, मगले मगले हीरा रे॥
॥ ए देशी ॥
॥ चालो रे बाइ चालो रे, जूउं गौतम स्वामीनी रच
ना रे ॥ लब्धिवंत गुणवंता गिरुवा, करता संजम
जतना रे ॥ चा० ॥ १ ॥ छठ्ठे वरसें दीक्षा लीधी, ते
पण मुनि छे साथें रे ॥ जिनआणाथी संजम पाले,
करवा शिव वधू हाथें रे ॥ चा० ॥ २ ॥ केई मुनि
गणधर पद सेवे छे, केई मुनि ध्यानं धरेछे रे ॥ केई
मुनि आगम दान दिए छे, केई मुनि विनय करे छे
रे ॥ चा० ॥ ३ ॥ केई मुनि चउ अनुजोग जणे छे,
केई मुनि जोग वहे छे रे ॥ केई मुनि पूर्व सूत्र जणे
छे, केई मुनि अर्थ ग्रहे छे रे ॥ चा०॥ ४ ॥ केई मुनि
मास खमण तप धारी, केई मुनि तपिया कहीयें रे॥
केई मुनि विगय तणा परिहारी, केई मुनि आतम
ध्याय रें ॥ चा०॥ ५ ॥ केई आचारांग सूयगडांग ठा
णांग, केई समवायांग गोखे रे ॥ जगवती सूत्र प्रमु
ख बहु आगम, जणी आतमरस पोखे रे ॥ चा०
॥६॥ सहु सहिअर गुणशीला वनमां, आवी गण
धर वांदे रे ॥ अमृतथी पण अधिकी वाणी, निसु
णी मन आणंदे रे ॥ चा० ॥ ७ ॥ पट्टोधर आगल

गहूंली पूरी, मुक्ता फलशुं वधाया रे ॥ धन्य धन्य माता पृथ्वी जेणिएं, गौतम गणधर जाया रे ॥ चा० ॥ ॥ ८॥ प्रभु वाणी निज चित्त समरती, परषद निज घर आवे रे ॥ दीपविजय कहे गौतम नामें, महा मंगल पद पावे रे ॥ चा० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली नवमी ॥

॥ जयो तप रोहणी ए ॥ ए देशी ॥

॥ चंपा नगरी उद्यानमां ए, आव्या सोहम गणधार ॥ नमो गुरु नावशुं ए ॥ हर्षपूरित नगरीजना ए, वांदवा जाय उजमाल ॥ नमो० ॥ १ ॥ कोणिक राय तव पूछतो ए, आज किश्यो उछव थाय ॥ ॥ नमो० ॥ इंड उछव के कौमुदी ए, एवडा लोक किहां जाय ॥ नमो० ॥ २ ॥ के कोइ जैनमुनि आविया ए, के तिहां जाये सवि जन्न ॥ न० ॥ तेह कहे प्रभु सांजलो ए, हर्षे करीने मन्न ॥ न० ॥ ३ ॥ तव कोणिकें वात सांजली ए, उल्लसी साते धात ॥ ॥ न० ॥ गज रथ पायक सज्ज कस्या ए, करी वलि निर्मल गात्र ॥ न० ॥ ४ ॥ मस्तक मुकुट रतें ज

ड्या ए, हइए हार शोहंत ॥ न० ॥ एक सूरज ए क चंड्मा ए, ए दोय कुंमल ऊलकंत ॥ न०॥ ५ ॥ चतुरंगी सेनाएं परिवस्यो ए, श्रेणिक रायनो पुत्र ॥ न० ॥ तस राणी पद्मावती ए, नवसत अंग ध स्या शणगार ॥ न० ॥ ६ ॥ स्वामी सुधर्मा जिहां अबे ए, तिहां आव्या कोणिक राय ॥ न० ॥ पंच अजिगम साचवी ए, नक्तिएं हर्ष नराय ॥ न० ॥ ॥ ७ ॥ साथीयो पूरे प्रेमशुं ए, चौगति डुःखवारण हार ॥ न० ॥ पद्मावती राणी वधावतां ए, उछाले अक्षत सार ॥ न० ॥ ८ ॥ करे परम गुरुवंदना ए, नवजल तारण नाव ॥ न० ॥ लहे मुक्तिपद शाश्व तुं ए, जे वांदे गुरु नले नाव ॥ न० ॥ ए ॥ इति०॥

॥ अथ गहूंली दशमी ॥

॥ समुड्विजय सुत चांदलो ॥ शामलिया जी ॥

॥ ए देशी ॥

॥ वनिता नयरी निर्मली ॥ जिनरायाजी ॥ जिहां समोसस्या आदिनाथ ॥ सुर नमे पाया जी ॥ सम वसरण देवें रच्युं ॥ जि०॥ तिहां बेग त्रिजुवनना

थ ॥ सु० ॥ १ ॥ कंचनकांति तनु दीपती ॥ जि० ॥ गजसरखी जस चाल ॥ सु० ॥ दीर्घभुजा तनु दीपती ॥ जि० ॥ तस रूडां नयन विशाल ॥ सु०॥ २॥ नरना अमरना इंदला ॥ जि० ॥ तेणे थुणियां चरणसरोज ॥ सु० ॥ मुखशोनाएं लाजिउ ॥ जि० ॥ शशि गयण वसे हररोज ॥ सु०॥ ३ ॥ तप तरवारें वारिया ॥जि०॥ नाव रिपु जे आव ॥ सु० ॥ मुनिने शिवपद आपता ॥ जि० ॥ जेणें वाख्यो परनो गव ॥ सु० ॥ ४ ॥ क्षमासूरा नगवंत जी ॥ जि० ॥ चोत्रीश अतिशय धार ॥ सु०॥ पांत्रीश वाणी गुणें करी ॥ जि० ॥ देशना दे जलधार ॥ सु० ॥ ५ ॥ वनपालकना मुखथकी ॥ जि० ॥ तातजी आव्या उद्यान ॥ सु० ॥ सांनली नरत नरेसरू ॥ जि० ॥ आपे बहुलां दान ॥ सु० ॥ ६ ॥ चतुरंगी सेन्या लेइने ॥ ॥ जि०॥ वांद्या श्रीनगवान ॥ सु० ॥ प्रनुजीनी वाणी सुणे ॥ जि० ॥ चक्री नरत सुजाण ॥ सु० ॥७॥ वखाण अवसर साथिउ ॥ जि०॥ लावे नरतनी नारय ॥ सु०॥ अक्षास्वस्तिक पूरिउ॥ जि० ॥ गाये गोरी गीत उदार ॥ सु० ॥ ८ ॥ गीतारथ गुरु आगलें ॥ जि० ॥ जे करे श्रुत बहु मान ॥ सु० ॥ दर्शन

सागर इम कहे ॥ जि० ॥ तस थाये परम कल्याण ॥ सु० ॥ ए ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ गहूंली अग्यारमी ॥

॥ आज हजारी ढोलो प्राहुणो ॥ ए देशी ॥

॥ रतनत्रयी आराधवा, आणी अधिक उमेद ॥ सहिअर मोरी हे ॥ आगम आगमधर सुणी, गुण गुणी नाव अनेद ॥ १ ॥ सहीयर मोरी हे ॥ गहूंली करो गुरु आगले ॥ ए टेक ॥ पर परिणामने टालवा, लेवा शिवपुर शर्म ॥ स० ॥ ग० ॥ २ ॥ इव्य नाव संजोगथी, जे रहे नित्य अलेप ॥ स० ॥ स्याद वादनी दीये देशना, जाणंग नय निक्षेप ॥ स०॥ ग० ॥ ३ ॥ आत्मनाव स्वरूपना, नासन नानु समान ॥ स० ॥ स्वपर विवेचन श्रुतथकी, तेणे नक्ति बहुमान ॥ ॥ स० ॥ ग० ॥ ४ ॥ रुचिवंता सुश्राविका, करवा श्रुतनी बहु नक्ति ॥ स० ॥ विनयवती बहुमानथी, फोरवती आत्मशक्ति ॥ स० ॥ ग० ॥ ५ ॥ आत्म बाजोठ उपरें, समकित साथीउ पूर ॥ स० ॥ नली नली करती लूंठणां, मिथ्यामति करी दूर ॥ स० ॥ ग० ॥ ६ ॥ जे सुणे आगम इण विधें, जन्म सफल होए तास ॥ स० ॥ माहरे नवो नव नित्य होजो,

ज्ञान महोदय वास ॥ स० ॥ ग० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली बारमी ॥

॥ जीरे मारे देशना द्यो गुरुराज, उलट आणि अति घणो ॥ जीरे जी ॥ जीरे आवित्त हर्ष उल्लास, पूठ देइ संसारने ॥ जी० ॥ १ ॥ जीरे विलंबन कीजें गुरुराज, दास उपर दया करो ॥ जी० ॥ जीरे महेर करो मेहेरबान, अमृतवचनें सिंचिएं ॥ जी० ॥ २ ॥ जीरे सुणवा सूत्र सिद्धांत, हेजें हियडुं गहगहे ॥ जी० ॥ जीरे जिम मोरा मन मेह, सीताने मनें रामजी ॥ जी० ॥ ३ ॥ जीरे कमला मन गोविंद, पारवती ईश्वर जपे ॥.जी० ॥ जीरे तिम मुझ हृदय मझार, जिनवाणी रूचे घणी ॥ जी० ॥ ४ ॥ जीरे नयगम भंग निक्षेप, सुणतां समकित संपजे ॥ जी० ॥ जीरे उतपाद वय ध्रुव रूप, स्यादवाद रचना घणी ॥ जी० ॥ ५ ॥ जीरे नवतत्वने षट द्रव्य, चार निक्षेपें सप्तनयें करी ॥ जी० ॥ जीरे निश्चयने व्यवहार, इणिपरें मुझ उलखावियें ॥ जी० ॥ ६ ॥ जीरे कृपा करो गुरुराज, ते सुणवा इछा घणी ॥ जी० ॥ जीरे निज परसत्ता रूप, भासे ते सुणतां थकां ॥ जी० ॥ ॥ ७ ॥ जीरे जिन उत्तम माहाराज, तस पदपद्म सेवे

सदा ॥ जी० ॥ जीरे प्रगटे आतमस्वरूप, अनय कुअर एणी परें नणे ॥ जीरे जी ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली तेरमी ॥

॥ आठे लालनी देशी ॥

॥ नयरी राजगृही सार, लोक वसे रे अपार ॥ आठे लाल ॥ जंबुस्वामी समोसस्या रे ॥ १ ॥ पंचसया परिवार, तारे नरने नार ॥ आ० ॥ देशनापुष्कर जल धरें रे ॥ २ ॥ इंड्रिय जीपे पंच, वारे क्रोधनो संच ॥ आ०॥ गुरुमुख देखी नयणां ठरे रे ॥ ३ ॥ जिन मतकज दिनकार, सोहम स्वामी पट्टधार ॥ आ० ॥ चरणकरण नंमार ठे रे ॥ ४ ॥ सोनागी शिरदार, सुविहित मुनि आधार ॥ आ० ॥ पृथवी पीठें विचरंता रे ॥ ५ ॥ अप्रतिबंध विहार, समरस गुण सुखकार ॥ आ० ॥ वैरागें जनताने रीझवे रे ॥ ६ ॥ विचरे देश विदेश, दे बहुला उपदेश ॥ आ०॥ बूझवे जाण अजाणने रे ॥ ७ ॥ कोणिक नृप घरनार, स्वस्तिक पूरे उदार ॥ आ० ॥ ज्ञाननी नक्ति करे घणी रे ॥ ८ ॥ श्रुतनक्ति करे जेह, सुख विलसे नर तेह ॥ आ०॥ दर्शनसागर इम वदे रे ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली चौदमी ॥

॥ समुद्रविजय सुत चांदलो ॥ शामलिया जी ॥ एदेशी ॥
॥ राजगृही नगरी शोहामणी ॥ गुरु आवे छे ॥ श्री
सोहम गणधार ॥ सुगुरु वधावे छे ॥ पंचसया मुनि
साथ छे ॥ गु० ॥ आतम सुखना करनार ॥ सु० ॥
॥ १ ॥ गुणशील नामें उद्यानमां ॥ गु० ॥ उतस्या
ए वनमांय ॥ सु० ॥ वनपालकें जइ वीनव्या ॥
॥ गु० ॥ ते सांनली कोणिक राय ॥ सु० ॥ २ ॥ च
तुरंगी सेन्या सज्ज करी ॥ गु० ॥ गजरथ पायक नहिं
पार ॥ सु० ॥ घणे आमंबरें राजवी ॥ गु० ॥ वांदे
थइ उजमाल ॥ सु० ॥ ३ ॥ संसार समुद्रने तारवा
॥ गु० ॥ वार वार नवजंजाल ॥ सु० ॥ शोल शण
गार सजी करी ॥ गु०॥ वांदे पद्मावती नार ॥ सु०॥
॥ ४ ॥ गहूंली करे मन रंगशुं ॥ गु० ॥ अक्षत पूरे
सार ॥ सु० ॥ लली लली ले छे उवारणां ॥ गु० ॥
प्रदक्षिणा दे मन सार ॥ सु० ॥ ५ ॥ चिहुं गति वा
रक साथियो ॥ गु० ॥ करता मनने कोड ॥ सु० ॥
कहे मुक्ति कर जोडिने ॥ गु० ॥ संघ मनना पूरजो
कोड ॥ सु० ॥ ६ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ गहूंली पन्नरमी ॥

॥ गर्व न कीजें रे, ए सदगुरु शीखडली ॥ ए देशी ॥

॥ सरसती चरण नमी करी केशुं, गायशुं आगम वाणी ॥ अर्थ ते अरिहंत जीएं प्रकाश्यो, सूत्र ते गणधर वाणी ॥१॥ नवि तुमे सुणजो रे, सोहम गणधर वाणी ॥ मीठी लागे रे मुजनें वीरनी वाणी ॥ ए आंकणी ॥ चतुरा चालो गुरुनीपासें, गहूंली करीएं मन रंगें ॥ नवसत अंग धरी शणगार, प्रनु गुण गाउ उमंगें ॥ न० ॥ २ ॥ हाथे रजत रकेबी धरीने, मांहे डीपना पुत्रने लावो ॥ स्वस्तिक पूरो गुरुने वधावो, गुरु गुण मधुरा गावो ॥ न०॥३॥ राजगृही नयरें गुणशीलचैत्यें, तिहां प्रनु वीरजी आव्या ॥ नंनासार ते सांनली हरख्यो, चतुरंगसेनथी आव्या ॥ न० ॥४॥ चौद हजार मुनिराज संघातें, साध्वी सहस्स उत्रीश ॥ इंइनूति आदें देइ गणधर, प्रनुपरिवार जगीश ॥ ॥ न० ॥ ५ ॥ प्रनु आदि सरवेनें वांदी, मगधाधीश नूपाल ॥ चेलणा राणी करे ते गहूंली, प्रनुसन्मुख ततकाल ॥ न० ॥ ६ ॥ कुंकुम घोली साथीउ पूरे, अष्ट कर्मने चूरे ॥ चिहुं गति चूरण डुःख निवारण, मनवंछित सवि पूरे ॥ न० ॥ ७ ॥ श्रीअचल गछप

ति पूज्य पट्टोधर, पुण्यसागर सूरिराया ॥ सूरि छ
त्रीश गुणें करी शोहे, नवि प्रणमो तस पाया ॥ न०
॥ ८ ॥ जखौ बंदरे सुंदर श्रावक, गुरुगुणना छे रा
गी ॥ श्रीवीर प्रभुनो पसाय लहीनें, गातां शुभमति
जागी ॥ न० ॥ ए ॥ आषाढ वद्य एकमनें दीवसें,
गहूंली गाई मन रंगें ॥ चतुरा मलि सुकंठें गाजो,
नाव धरी उमंगें ॥ न०॥ १० ॥ जे सोहासण मली
गहूंली गाशे, एम कहे केवल नाणी ॥ सर्वारथ सिद्ध
तणां सुख विलसे, लेशे मुक्ति पट्टराणी ॥ न०॥ ११ ॥

॥ अथ गहूंली शोलमी ॥

॥ जीरे जिनवर वचन सोहंकरुं ॥ जीरे अविचल
शासन वीर रे ॥ गुणवंता गिरुआ वाणी मीठी रे
माहावीरतणी ॥ जीरे परखदा बार मली तिहां,
जीरे अरथ प्रकाशो गुणगंनीर रे ॥ गुणवंता गौत
म, प्रश्न पूछे रे माहावीर आगले ॥ १ ॥ जीरे नि
गोद स्वरूप मुजने कहो, जीरे केम ए जीवविचार रे
॥ गु० ॥ वा० ॥ जीरे मधुर ध्वनिएं जगगुरु कहे,
जीरे करवा नविक उपकार रे ॥ गु० ॥ वा० ॥ २ ॥
जीरे राजचउद लोक जाणिएं, जीरे असंख्याता जो
जन कोडाकोडी रे ॥ गु० ॥ वा०॥ जीरे जोजन ए

क एमां लीजीएं, जीरे लीजीएं एक एनो अंश रे ॥ गु०
॥ वा० ॥ ३ ॥ जीरे एक निगोदें जीव अनंत छे,
जीरे पुद्गलपरमाणुआ अनंत रे ॥ गु० ॥ वा० ॥
जीरे एकप्रदेशें जाणीएं, जीरे प्रदेशें वर्गणा अनंत
रे ॥ गु० ॥ वा०॥ ४ ॥ जीरे एक असंख्य गोलासं
ख्य छे, जीरे निगोद असंख्य गोला सेस रे ॥ गु०
॥ वा० ॥ जीरे परमाणुआ प्रत्यें गुण अनंत छे,
जीरे वरण गंध रस फरस रे ॥ गु०. ॥ वा० ॥ ५ ॥
जीरे लोक सकलमय इम लखो, जीरे कहे गौतम
धन्य तुम ज्ञान रे ॥ गु० ॥ वा० ॥ जीरे एवा गुरुने
आगल गहूंअली, जीरे फत्तेशिखर अमृतशिव निश्रे
णी रे ॥ गु० ॥ वा० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली सत्तरमी ॥

॥ राग धोल ॥ बेनी संचरता रे संसारमां रे, बेनी सद्
गुरु धर्मसंजोग ॥ वधावो गहूंअली रे ॥ बेनी सद्दहणां
जिनशासननी रे, बेनी पूरण पुण्यसंजोग ॥ व०॥१॥
बेनी सम संतोष साडी बनी रे, बेनी नवब्रह्म नवरंग
घाट ॥ व० ॥ बेनी तप जप चोखा उजला रे,
बेनी सत्यव्रत विनय सुपाट ॥ व० ॥ २ ॥ बेनी सम
कित सोवनथालमां रे, बेनी कनक कचोले चंग

॥व०॥ बेनी संवर करो शुन साथीउ रे, बेनी आणा तिलक अचंग ॥व०॥३॥ बेनी समिति गुप्तिश्रीफल धरो रे, बेनी अनुनव कुंकुम घोल ॥ व० ॥ बेनी नवतत्व हइए धरो रे, बेनी चरचो चंदन रंग रोल ॥ व० ॥४॥ बेनी नवजल जेह्मां नेदीएं रे, बेनी विवेकवधावो शाल ॥ व० ॥ बेनी वीर कहे जिन शासनने रे, बेनी रहेतां मंगलमाल ॥ व० ॥ ५ ॥

॥ अथ गहूंली अढारमी ॥

॥ वाह्लोजी वाए बे वांसली रे ॥ ए देशी ॥

॥ सोहमस्वामी समोसस्या रे, राजगृही उद्यान ॥ बहु मुनिपरिकर संजुता रे, चउनाणी नगवान ॥ सो० ॥ १ ॥ गुरुमुख कमल विलोकवा रे, आवे श्रेणिक माहाराय ॥ नाव नक्ति करी वांदिआ रे, गणधर केरा पाय ॥ सो० ॥ २ ॥ श्रीगुरुजी दोए देशना रे, ते सांनले श्रोतावृंद ॥ अमीअ समाणी वाणी सुणी रे, मनमां पामे आनंद ॥ सो० ॥ ३ ॥ वखाण अवसर जाणीने रे, ज्ञाननी नक्ति निमित्त ॥ सतीय शिरोमणि चेलणा रे, साथीउ पूरे पवित्त ॥ ॥ सो० ॥ ४ ॥ ज्ञान परम गुणजीवने रे, जे तस

नक्ति करेय ॥ तेहने ज्ञाननी संपदा रे, दर्शन एम कहेय ॥ सो० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली उगणीशमी ॥

॥ राजगृही समोसख्या ॥ गुरुराज रे ॥ सोहम स्वामी आज ॥ समारो काज रे ॥ सहीयर मोरी वांदवा ॥ गु० ॥ आवो लेई वर लाज ॥ स० ॥ १ ॥ गुरु आगल रचो गहूंअली ॥ गु० ॥ डुविधनाव बहु नावि ॥ स० ॥ अध्यातम वर थालमां ॥ गु० ॥ गुरुगुण मोती नावि ॥ स० ॥ २ ॥ गुणि मन सोवन फूलडां ॥ गु० ॥ शुन रति कुंकुम घोल ॥ स० ॥ श्रद्धा रकेबी कर ग्रही ॥ गु० ॥ दर्शन नूमि अमोल ॥ स० ॥ ३ ॥ अनुनव श्रीफल रूअडुं ॥ गु० ॥ उत्तरगुण बहु शाल ॥ स० ॥ पंचाचार करो लूंबणां ॥ ॥ गु० ॥ तिलक विवेक विशाल ॥ स० ॥ ४ ॥ इणि परें इव्यनें नावथी ॥ गु० ॥ मंगल आठ कराय ॥ स०॥ राणी कोणिक रायनी ॥ गु०॥ गहूंली गुरु गुण गाय ॥ स० ॥ ५ ॥ कंचनकमल विराजता ॥ गु० ॥ दिये देशना सार ॥ स० ॥ चरण करण रयणें नस्या ॥ गु० ॥ प्रज्जु पंचम गणधार ॥ स० ॥ ६ ॥ पंच समिति सुमता थका ॥ गु० ॥ नव कल्पी करय

विहार ॥ स० ॥ चउविह संघें परिवस्या ॥ गु० ॥ जींत्या विषय विकार ॥ स० ॥ ७ ॥ नाव धरी नमु तेहना ॥ गु० ॥ चरणयुगल अरविंद ॥ स० ॥ वीर वाणी संजलावता ॥ गु० ॥ मलुकनाव अमंद ॥ स० ॥ ८ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ गहूंली वीशमी ॥

॥ अने हांरे वालोजी वाए छे वांशली रे ॥ ए देशी ॥

॥ अने हांरे वीरजी दिए छे देशना रे ॥ चालो चालो सहीयरनो साथ ॥ सुरवर कोडा कोडि तिहां मिल्या रे, प्रजु वरसे छे त्रिजुवन नाथ ॥ वीर० ॥ १ ॥ अने हांरे समोवसरणनी शोजा शी कहुं रे, जिहां मुनि वर चौद हजार ॥ महासती चंदनबाला मावडी रे, सहु साधवी छत्रीश हजार ॥ वीर० ॥ २ ॥ अने हांरे गणधर पूज्य इग्यार छे रे, तेहमां गौतम स्वामी वजीर ॥ त्रणशें चउद पूर्वी दीपता रे, श्रुत केवली जगवड वीर ॥ वीर० ॥ ३ ॥ अने हांरे सातशें केवली जगत प्रजाकरु रे, तेतो पाम्या छे जवतीर ॥ पांचशें विपुल मति परिवार छे रे, सहु परिकर छे प्रजु वीर ॥ वीर० ॥ ४ ॥ अने हांरे आणंद श्रावक समकित उच्चरे रे, वली द्वादश व्रत जयकार ॥ ए

क लाख उंगणशाठ हजारमां रे, मुख्य श्रावक दृढ व्रत धार ॥ वीर० ॥ ५ ॥ अने हांरे सखी वयणे उजमाली बालिका रे, आवी वंदे प्रनुजीना पाय ॥ माहामंगल प्रनुजीनी आगलें रे, पूरे चउ मंगल सुखदाय ॥ वीर० ॥ ६ ॥ अने हांरे सातमुं अंग उपासक सूत्रमां रे, प्रनु दीपविजय कविराज ॥ आणंद सरिखा दश श्रावक कह्या रे, लहेशे एक नवें शिवपुर राज ॥ वीर० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली एकवीशमी ॥

॥ गाम नगर पुर विचरंता गुरु आवे छे, मुनि पंच सया परिवार साथें लावे छे ॥ सहस अढार सिलांगना जे धोरी छे, ब्रह्मचर्यना नेद अढार आप विचारी छे ॥ १ ॥ जीवनेद बत्रीशनी दया जाणी छे, निरुपाधिक देशना सार नाथ वखाणी छे ॥ दीक्षा दोष निवारवा नर तारे छे, पाप स्थानना दोष अढार दूर निवारे छे ॥ २ ॥ रत्नत्रयिआराधता गुरु राजे छे, गुरुराजगृहीउद्यान अधिक दिवाजे छे ॥ कनककमल वीराजता गुरु गाजे छे, प्रनुवीर पट्टोधर धीर नावठ नांजे छे ॥ ३ ॥ जंबु कुमरयुक्तें करी गुरु नेटचा छे, कहे मुखथी महारा आज पातिक मेटचां छे ॥ स

सुइसिरी जंबु तणी पटराणी ले, वलि बीजी सातें नार गुणनी खाणी ले ॥ ४ ॥ पहेरी करुणा कांचली मन मोती ले, उढी समकित साडी मांहे गुरुमुख जोती ले ॥ थिरता भावना थालमां व्रतमोती ले, भरी कुंकमराग कचोल पुण्यपनोती ले ॥५॥ श्रद्धाभाव नो साथियो त्यां पूरे ले, लवी पंचाचार रतनचिहुं गति चूरे ले ॥ ते देखी मोहरायनी मात झूरे ले, ए लेशे शिवसुखराज चढते नूरे ले ॥ ६ ॥ गहूंली करो गुरु आगलें मन माचे ले, हवे जंबु सोहम पास संजम जाचे ले ॥ पांचशें सत्तावीशशुं व्रत लिधुं ले, कहे मोहन माहाराज कारज सिधुं ले ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली बावीशमी ॥

॥ बेनी नरभव पुण्यें पामी रूअडा रे, शुचि रुचि करो शणगार रे ॥ वधावो गुरुने मोतीयें रे ॥ बेनी दरसन करो आदि देवनुं रे, बेनी वली वली वांदो रे अणगार रे ॥ व० ॥ १ ॥ बेनी मयगल परे मुनि मालतां रे, बेनी मधुकर परें लीये आहार रे ॥व०॥ बेनी आतमराम रमे रंगशुं रे, बेनी सूत्र अर्थ नय भंमार रे ॥ व० ॥ २ ॥ बेनी इम सोहासण पूरे साथीउ रे, बेनी गाउ मंगल गीत रे ॥ व० ॥ बेनी

वधिशुं वधावी करो लूंढणा रे, बेनी ए जिन शास न रीत रे ॥ व० ॥ ३ ॥ बेनी पच्चरकाण करो पाय पूजीने रे, बेनी वीरवाणी पीउ रसाल रे ॥ व० ॥ बेनी शुद्ध होए आतमा आपणो रे, बेनी शिवसुख लहीएं रसाल रे ॥ व० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली त्रेवीशमी ॥

॥ विमलगिरि रंग रसें सेवो ॥ ए देशी ॥

॥ मुनिवर मारगमां वसिया, वसि उनमारगथी ख सिया, शिववहू खेलणके रसिया ॥ मु० ॥ १ ॥ वीत्युं गुणगाणु बाल, नगवई अंगें सुविशाल, रहे प्रमत्तें घणो काल ॥ मु० ॥ २ ॥ अंतर मुहूरतथिति आवे, निद्रामां गुण पलटावे, पण अप्रमत्त तणे नावे ॥ मु० ॥ ३ ॥ द्रव्यनाव संजम धरिया, जंग म तीरथ संचरिया, पाखरिया सिंह केसरिया ॥ मु० ॥ ४ ॥ दुविहासित सहे न लहे, उष्ण परिसह वीस सहे, मुनिवर आचारांग कहे ॥ मु० ॥ ५ ॥ चक्रवाल दशविध पाले, चरणकरण गुण अजुआले, शून्यदहन अवधि टाले ॥ मु० ॥ ६ ॥ एहवा मुनि वरनें आगें, चतुरा अक्षर फल मागे, श्राविका मुनि गुणरागें ॥ मु० ॥ ७ ॥ गहूंली करी निजमल धोती,

वधावती फलके मोती, लली लली गुरु सनमुख जोती ॥मु०॥ ७ ॥ आगम रयण गुणें रमती, गुरुगुण गाती मन गमती, श्रीशुजवीर चरण नमती ॥ मु०॥ ए ॥

॥ अथ पार्श्वनाथनो विवाहलो चोवीशमो ॥

॥ पास कुमर महिमा निलो, गुणमणि रयण नंमार ॥ अवसर विवा जिन तणो, गायेशुं अति सुखकार ॥ पा० ॥ १ ॥ शुज मंमपें तोरण सोहियें रे, जोतां सुर नरनां मन मोहियें रे ॥ महाजन मलीयो ठे अति मनोहार, राय राणानो नहीं पार ॥ पा० ॥ ॥२॥ चंपक वरणी सुंदरी, वलि नील वरण सुखदाय॥ दीसे ठे अति रे दयामणी, पास कुमर देखी सुख थाय ॥ पा० ॥३॥ पासकुमर चड्या वरघोडे, शिर खूप जख्या ठे बहु मोडे ॥ मानुं रवि शशी आव्या ठे दोड, कानें कुंमल मस्तक जोड ॥ पा० ॥ ४ ॥ सजन संतोष्या बहुपरें, तिहां अश्वसेन महाराय ॥ शुज शिणगार सजि सुंदरी, पासकुमर सुखदाय ॥ पा० ॥ ५ ॥ देव उतारे आरती रे, वली नरनारी गुण गाय॥ सुवर्ण मुकुटें हीरा शोहीयें रे, तोरण आव्या श्री जिनराय ॥ पा० ॥ ६ ॥ जिनमुखें शोहीएं तंबोल रे, घणो दिसे ठे फाकजमोल रे ॥ परण्यां पर

एयां प्रनावती राणी, रूपें अपछरा नें इंड्राणी ।- पा० ॥ ७ ॥ जिन परणीने निजघर आविया रे, जाचकने दानशुं लाविया रे ॥ गुण गाये छे गंधर्व रंग, देवे उदय उलट अंग ॥ पा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ माहावीरस्वामीना महिना पच्चीशमा ॥

॥ पद्मसरोवर हुं गई रे, त्रिशला राणी करे रे कल्लोल ॥ आजनो दिन रलीयामणो रे ॥ पहेलेने मासें अमीअ पीउं रे, बीजे चंदन घोल ॥ आ० ॥ १ ॥ त्रीजेने मासें केसर कीयो रे, चोथे कपूरनी रेख ॥आ०॥ पांचमे इष्ट पूजी जिमो रे, छठे रह्या गरनावास ॥ आ० ॥ २ ॥ सातमे जाणुं सिंहे चडे रे, आठमे दीजें दान ॥ आ० ॥ नवमे मासें यतन करो रे, सवानवें पुत्र रतन ॥ आ० ॥ ३ ॥ धरणीएं पग देई जनमीया ए, जनम्या श्रीमाहावीर ॥ आ० ॥ सोनाछरीएं नाड वधारीयां रे, दाइने कोटी सोनइया दीध ॥ माहावीर कुअर जनम्या रे ॥ ४ ॥ पुत्र जनम निज सांनली रे, राय सिद्धारथने हरष न माय ॥मा०॥ वधामणीआने पंचांग पहेरामणी रे, वली कीधी लाख पसाय ॥ मा० ॥ ५ ॥ पाणी साथें दूधडे नवरावीआ रे, चोखा साथें मोतीडे वधाव ॥मा०॥

चीर फाडीनें बालोतियां रे, पलंग पालखडीएं पोढा व ॥ मा० ॥ ६ ॥ घर घर गूडिउं उछले रे, नीलां तो रण बांध्यां छे बार ॥ मा० ॥ वछजीनी फईजी तेडा वीयां रे, नाम दीधुं वर्द्धमान ॥ मा० ॥ ७ ॥ मेरु शिखर ऊपर स्नात्र करो रे, छप्पन कुमरी गावे छे गीत ॥ मा० ॥ नाम पडामण हाथीउ रे, दीधां दीधां रतन बे चार ॥मा०॥ ८ ॥ सोना ते केरुं फुमणुं रे, मांहे मोतीना फुमकार ॥ मा० ॥ त्रिशला राणी पुत्र तुमा रडो रे, देवतणो शिरदार ॥ मा० ॥ ए ॥ काग गहुं नी लापशी रे, मांहे मालवीउ गोल ॥ मा० ॥ जा जे घीएं लसलसी लापशी रे, गोत्रज आगल नैवेद्य कराय ॥ मा० ॥ १० ॥ कुअरनी माता इम जणे रे, कुअरजी अविचल राज ॥ मा० ॥ सोवन पालणी एं पोढाडीया ए, नीलुडां वस्त्र उगाड ॥मा०॥ ११ ॥ इति॥

॥ अथ गहूंली छवीशमी ॥

॥ सरसति सामीने दिल धरी रे, वांडु गुरुने उछाह ॥ कमल पोयण सम लोयणी रे, कामिनी कंचनवा न ॥ चमर ढलावो जिणंद प्रभु वीरने रे ॥ १ ॥ कं कण नेउर खलकती रे, ललकती कोकिलवान ॥ ग जगति चालशुं चालती रे, मलपती सहियर साथ ॥

च० ॥ २ ॥ कनक कचोलां कुंकुम भरी रे, थाल मुक्ताफल सार ॥ चरम प्रभुजीनें वांदवा रे, शोल स जि शणगार ॥ च० ॥ ३ ॥ प्रहृ उगमतानी गहूंली रे, वाजे वीणा सार ॥ चेलणा काढे छे गहूंली रे, श्रेणिकनी घरनार ॥ च० ॥ ४ ॥ मोतीनो पूख्यो छे साथियो रे, ढवीआ पांच रतन्न ॥ चेलणा वधावे छे मोतिएं रे, देशना दीए भगवन्न ॥ च० ॥ ५ ॥ पाट पीठ प्रभु पाउले रे, गाती रंगें रे साज ॥ सोवन सूर ज ऊगिउ रें, सुरतरु मोख्यो रे आज ॥ च० ॥ ६ ॥ पूर्वज तूग पुण्यथी रे, वांद्या वीर जिणंद ॥ सुणी देशना भगवंतनी रे, हरख्या नर नारी वृंद ॥ च० ॥ ७ ॥ चेलणा चतुराई चित्तमें रे, संभारे दिवसने रात्र ॥ त्रिशलानंदन देखतां रे, पवित्र थयां मोरां गात्र ॥ च० ॥ ८ ॥ सेवक लखमी सूरि तणो रे, प्र णमे नाण उदार ॥ वीर प्रभुजीने वांदता रे, सफल कीउ अवतार ॥ च० ॥ ए ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ षडावश्यकसूत्रनी गहूंली सत्तावीशमी ॥

॥ अहो मुनि चारित्रमां रमता, श्रीजिनआणा सुधि धरता, क्रियामारग अनुसरता ॥ अहो० ॥ १ ॥ षडावश्यक सूत्रतणी रचना, ते सांभलो भवि एक

मना, वाणी अमृत रस झरना ॥ अहो० ॥ २ ॥
प्रथम सामायक जे दाख्युं, बीजुं चोवीसंथो भा
ख्युं, तृतीय वांदण दिल राख्युं ॥ अहो० ॥ ३ ॥
प्रतिक्रमण चोथे सुणतां, काउस्सग्ग पांचमे अनुसर
तां, छठे पच्चख्काण करता ॥ अहो० ॥ ४ ॥ षडविध
आवश्यक जे धारे, शुभ परिणामें अवधारे, श्रीजिन
मारग अजुआले ॥ अहो० ॥ ५ ॥ थापना ज्ञानत
णी मांझो, ममता माया दूरें छांझो, तो शमतावृक्ष
होए जाडो ॥ अहो० ॥ ६ ॥ इणिपरें सोहमनी
वाणी, गहूंली करे चेलणा राणी, गुरु सनमुख जोवें
गुणखाणी ॥ अहो० ॥ ७ ॥ शीहोर नगरें गहूंली
गाई, कहे मुक्ति सुणो चित्त लाई, श्रीजिन आणा धरो
भाई ॥ अहो० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली अठावीशमी ॥

॥ अरिहा आया रे चंपावनके मेदान, सुरपति
गाया रे शासनके सुलतान ॥ ए आंकणी ॥ समव
सरण सुर मली विरचावे, फूल सचित्त जल थलनां
लावे ॥ विकसित जानु सम वरसावे, उपर बेसे रें
मुनिमुख परषदा बार ॥ प्रभु महिमाएं रे पीडा न
हुवे लगार ॥ तत्वावतारी रे प्रवचन सारउद्धार ॥

अ० ॥ १ ॥ पुरी शणगारी कोणिक राय, जल छटका यां फूल बिछाय, सजी सामईयुं वंदन आय, उववा ई सूत्रें रे देशना अमृत धार ॥ गौतम पूछे रे अंबडनो अधिकार ॥ अदत्त न लेवे रे सात सयां परिवार ॥ अ० ॥ २ ॥ पाणी छते तरशां व्रत पाली, गंगा रेव त वच्चें संथारी, देवलोकें पंचम अवतारी, अंबडनां में रे ते सहुनो शिरदार ॥ अवधिज्ञानी रे वैक्रियल ब्धि उदार ॥ तापस वेशें रे पाले अणुव्रत बार ॥ अ० ॥ ३ ॥ ते गुणदरिया कौतुक जरिया, कंपिलपुरमां हे संचरिया, नित्य नित्य सहु घर वसती वरिया, सहु कोजाणे रे अम घर उछव थाय ॥ घर घर होशे रे कौतक जोवा ते जाय ॥ देव जवांतर रे अंबड मु क्ति वराय ॥ अ० ॥ ४ ॥ सांजली हइडे हरष जरा णी, बहुत साहेलीनी ठकुराणी, नामें सुजद्रा धा रणी राणी, चीर पटोली रे पहेरी निकट ते जाय ॥ घुंघट खोली रे अंजलि शीश नमाय ॥ केशर घोली रे साथिए मोती पूराय ॥ अ० ॥ ५ ॥ चतुरा चउमु ख चित्त मिलावे, मुक्ताफल दोय हाथ धरावे, श्री शुजवीरना चरण वधावें, मंगल गावे रे रंजा अपछर नार ॥ जगतनो दीवो रे विश्वंजर जयकार ॥ बहु

चिरंजीवो रे त्रिशला मात मल्हार ॥ अ० ॥ ६ ॥

॥ अथ गहूंली ओगणत्रीशमी ॥

॥ अहो मुनि संजममां रमता ॥ वीरनी आणा शिर धरता, पवयणमायें सुविचरंता, सोहमपाट दीपावं ता ॥ अ० ॥ १ ॥ श्रीजिन आणामती रागी, द्रव्य नाव परिग्रह त्यागी, शिवरमणीशुं लय लागी ॥ अ० ॥ २ ॥ बत्रीश बत्रीशीयें पूरा, रागादिकथी र हे दूरा, शांत मुद्रामांहे सनूरा ॥ अ० ॥ ३ ॥ वी रवाणी चित्त अनुसरता, कुमति तणा मद गालंता, आव्या राजगृही फरता ॥ अ० ॥ ४ ॥ कोणिक नू पतिनी राणी, नामंमलमां उजाणी, धवल मंगल करे गुणखाणी ॥ अ० ॥ ५ ॥ अनुनव ज्ञानें चित्त वरशे, सद्गुरु अंगें सदा वरसे, नविजलधर चात क वरशे ॥ अ०॥ ६ ॥ एणी परें जे गुरु गुण गावे, संवरनावें चित्त लावे, महींद्रसिंह सूरि सुख पा वे ॥ अ० ॥ ७ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ गहूंली त्रीशमी ॥

॥ सखि राजगृही उद्यानमां, उतरियाश्री जिनराज ॥ वारी जाउं वीरनें ॥ सखि मननो ते सांसो उपशमे, जाणीएं मलीयो छे शिवपुरीनो साज ॥ वा० ॥ १॥

सखि देवछंदो ते देवें रच्यो, तिहां बेठा छे त्रिभुवन राय ॥ वा० ॥ सखि बारे परषदा तिहां मली, जीरे सती सुणवाने जाय ॥ वा० ॥ २ ॥ राणी चेलणा ते लावे गहूंअली, राजा श्रेणिकनी घरनार ॥वा०॥ जीरे मुक्ता ते फलनो साथियो, जीरे उपर श्रीफल सार ॥वा०॥ ३ ॥ सखी रुवणीनें आगल गहूंअली, जीरे विच विच नागरवेल ॥ वा० ॥ जीरे दरभलुं रे दरिआ तणुं, जीरे जेमां छे जाजेरी·रेल ॥ वा० ॥ ॥ ४ ॥ जीरे वखाण भलुं रे वीरजी तणुं, जीरे सांभले गुणिजन लाख ॥ वा० ॥ जीरे नानी ते नानी नानडी, जीरे नानी छे शाकर डाख. ॥ वा० ॥ ॥ ५ ॥ जीरे नानी ते प्रभुजीनी जीभडी, जीरे बूजव्या जाण अजाण ॥ वा० ॥ जीरे नाट भणे रे बीरुदावलि, जीरे सईयर गावे गान ॥ वा० ॥ ६ ॥ जीरे आ जुगमां जोतां थकां, जीरे कोई न करे प्रभुजीशुं होड ॥ वा०॥ जीरे भव भव ए जिन जो मले, वसंतसागर कहे कर जोड ॥ वा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ गिरनारजीनो वधावो एकत्रीशमो ॥

॥ प्रथम रेवतगिरि पेखिउ, जीहो उपनो अधिक आणंद ॥ वधावो मारे आवीउ ॥ बीजे नेमीशर बहु

गुणा, जीहो दीगो दोलतनो दिणंद ॥ व० ॥ १ ॥
॥ ए आंकणी ॥ त्रीजे वधावे प्रभु तुं स्तव्यो, जीहो
अगर सुवास विहार ॥ व० ॥ केसर चंदन कुसुम
नी, जीहो पूजा सत्तर प्रकार ॥ व० ॥ २ ॥ चोथे
वधावे प्रभु चरणनुं, जीहो धरीएं मन शुभ ध्यान
॥ व० ॥ चतुर दरिशण चारित्रना, जीहो गुण गाउं
गुरुग्यान ॥ व० ॥ ३ ॥ आसन युक्ति अनुसरी,
जीहो जादव गुणलय लीन ॥ व० ॥ भावुं प्रभुगु
ण भावना, जीहो आतमशक्ति नवीन ॥ व० ॥४॥
एम सघलो टल्यो अंतरो, जीहो अम तुम अतिशय
एक ॥ व० ॥ ध्यायकनें वली ध्येयनो, जीहो अ
धिक विवेक अनेक ॥व०॥५॥ भाग्य भले मिलि भवि
जने, जीहो जोयो श्रीजिनराज ॥व०॥ संघवी सहित
स्वरूपनुं, जीहो सफल थयुं सहु काज ॥ व० ॥६॥

॥ अथ श्रीथूलीभद्रजीनी गहूंली बत्रीशमी ॥

॥ जीरे मारे थूलभद्र गुरुराय, सातमे पाटे शोहाम
णा जीरेजी ॥ जीरे मारे भद्रबाहु मुणींद, संभूति
विजय सूरि तणा ॥जीरे०॥१॥ जीरे मारे पाट विशे
ष सुजाण, शियलगुणें अलंकस्या ॥जी०॥ जीरे मारे
कोश्याएं बूजव्या ताम, जैनधर्मथी नवी पड्या ॥

जी० ॥ २ ॥ जीरे मारे जगमां राख्युं नाम, चोरा शी चोवीशी लगें ॥ जीरे० ॥ जीरे मारे संघ चतुर्विध जाण, उछव करे उलट अंगें ॥ जीरे० ॥ ३ ॥ जीरे मारे वाजे ढोल निशाण, सरणाईयुं मधुरे स्वरें ॥ जीरे० ॥ जीरे मारे गौरी गावे गीत, सोहागण गहूंली करे ॥ जीरे० ॥४॥ जीरे मारे धन्य सकमाल प्रधान, धन्य लाछलदे मातने ॥जीरे०॥ जीरे मारे धन्य ते नाग र नात, धन्य ते सिरीया भ्रातने ॥ जीरे० ॥ ५ ॥ जीरे मारे धन्य जक्खा प्रमुख, साते बेन्युं शोहामणी ॥ जीरे० ॥ जीरे मारे सूरीश्वर शिरदार, श्रीथूलिभद्र शि रोमणि ॥ जीरे० ॥ ६ ॥ जीरे मारे ध्यान धरो दिन रात, एवा मुनिनुं खंतशुं ॥ जीरे० ॥ जीरे मारे लेशो मंगलमाल, जे गावे नित्य भावशुं ॥जीरे०॥७॥इति ॥

॥ अथ गहूंली तेत्रीशमी ॥

॥ म्हारी सही रे समाणी ॥ ए देशी ॥

॥ परव पजूसण पुण्यने योगें, मलिया सद्गुरु सं योगें रे मारी सही रे समाणी ॥ सात पांच मिली मलीनें टोली, गहूंली करे मन भोली रे ॥ मा० ॥१॥ घुंघटपट खोलीनें गुरुमुख जोती, तन मनना मल धोती रे ॥ मा० ॥ समकितरागें ने धर्मनी बुद्धि, परि

णतिनी वली शुद्धि रे ॥ मा० ॥ २ ॥ वांदी वधावी गुरुजीनी वाणी, निसुणो नविजन प्राणी रे ॥ मा० ॥ उपशम नावो ने निंदा निवारो, जीव सहुशुं हित धारो रे ॥ मा० ॥ ३ ॥ गुरुपग पूजे संघ सहु खामो, कषायतणा मद वामो रे ॥ मा० ॥ इणदिन आवे व्रत तप कीजें, अधिक अधिक लाहो लीजें रे ॥ मा० ॥ ४ ॥ पूजा प्रनावना महिमाने देखी, हरपें धरमना गवेषी रे ॥ मा० ॥ चैत्य परवाडी जिनमुख जोवो, नवनवनां पाप खोवो रे ॥ मा० ॥ ५ ॥ कल्प सुणीजें प्रनावना दीजें, अठाइ महिमा इम कीजें रे ॥ मा० ॥ गहूंली गावोने वीरजिन ध्यावो, मलूक नावना नावो रे ॥ मा० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ चूनडी चोत्रीशमी ॥

॥ आढी सुरंगी चूनडी रे, चूनडी राती चोल रे ॥ रंगीली ॥ लाल सुरंगी चूनडी रे ॥ १ ॥ बुरान पुरनी बांधणी रे ॥ रंगाणी उरंगा वाद रे ॥ रंगीली ॥ चोल मजीठना रंगथी रे, कसुंबे लीधो हठवाद रे ॥ रंगीली ॥ आ० ॥ २ ॥ सूरत शेरमां संचस्था रे, जातां जिन वाणीनें माट रे ॥ रंगली ॥ चोराशी चोकने चोवटे रे, दोगं दोशीडानां हाट रे ॥ रंगीली ॥ आ० ॥ ३ ॥

नणदी वीराजीने वीनवे रे ॥ ए चूनडीनी होंश रे ॥ रंगीली ॥ चूनडीमां हाथी घोडला रे, हंस पोपटने मोर रे ॥ रंगीली ॥ आ० ॥ ४ ॥ समरथ ससरे मूलवी रे, पासें पीउजीने राख रे ॥ रंगीली ॥ समकित सासुना केणथी रे, सोनइया दीधा सवा लाख रे ॥ रंगीली ॥ आ० ॥ ५ ॥ सासूजीने साडीयो रे, नानी नणदीनें घाट रे ॥ रंगीली ॥ देराणी जेठाणीनां जोडलां रे, शोक्यने लावो शा माट रे ॥ रंगीली ॥ आ० ॥ ६ ॥ चूनडी ओढिनें संचर्यां रे, जातां जिनदरबार रे ॥ रंगीली ॥ माणकमुनीएं कोडथी रे, गाई ए चूनडी सार रे ॥ रंगीली ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति० ॥

॥ अथ गहूंली पांत्रीशमी ॥

॥ आसणरा जोगी ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीगुरुपद पंकजनी सेवा ॥ लागी छे मुज मन हेवा रे ॥ गुरुजी उपकारी ॥ ए आंकणी ॥ गुरु गुण दरीयो सुपरें जरियो, मुजथी किम जाए तरियो रे ॥ गु० ॥ १ ॥ पांच ज्ञान मांहे उपकारी, ए श्रुतनी बलिहारी रे ॥ गु० ॥ असंख्य जीवना जव सुविलासें, संख्याता जव प्रकासे रे ॥ गु० ॥ २ ॥ लोकना जाव ते ज्ञानथी कहीएं, सद्गुरु मुखथी लहीएं रे

॥ गु० ॥ दर्शन सहित ज्ञान ते नासे, दर्शन मोहनी नासे रे ॥ गु० ॥ ३ ॥ विघटे मिथ्यात्व आतम केरो, टाले ते नवनो फेरो रे ॥ गु० ॥ समकितवि ण संजम नहीं रचना, आगम मांहे छे वचनां रे ॥ गु० ॥ ४ ॥ समकित सहित करे जे किरिया, ते नवसमुद्रथी तरिया रे ॥ गु० ॥ एहवी वाणी सोह म केरी, नासे करमजो वेरी रे ॥ गु० ॥ ५ ॥ सोह म पाट परंपर राजे, विजयदेवेंद्र सूरि गाजे रे ॥गु०॥ स्वस्तिक पूरे दुःखने चूरे, वधावे चढते नूरें रे ॥ गु० ॥ ६ ॥ सूरि गुणे छत्रीश सोहावे, विजयानं द पद पावे. रे ॥ गु० ॥ प्रेमथी नावे नवनिध पावे, अमृत शिव सुख ध्यावे रे ॥ गु० ॥ ७ ॥ इति संपूर्ण॥

॥ अथ गहूंली छत्रीशमी ॥

॥ मोतीवाला नमरजी ॥ ए देशी ॥

॥ चरणकरणशुं शोनता ॥ व्रतधारी रे सुगुरु जी ॥ नविजन मानस हंस रे ॥ जगत उपकारी रे सुगुरुजी ॥ जंगमतीरथ साधु जी ॥ व्र० ॥ लोन तणो नहीं अंश रे ॥ ज० ॥ १ ॥ पडिरूवादिक गुण नस्या, ॥ व्र० ॥ षटकारण लिए आहार रे ॥ ज० ॥ सामु दाणी गोचरी ॥ व्र० ॥ ज्ञानरतन नंमार रे ॥ ज०

॥ २ ॥ गीतारथ गुरु आगलें ॥ ब्र० ॥ वनिता धरिय विवेक रे ॥ ज० ॥ सरखी साहेलिएं परवरी ॥ ब्र० ॥ समकितनी घणी टेक रे ॥ ज० ॥ ३ ॥ अस्तिक पीठनी उपरें ॥ ब्र० ॥ अनुनव मुक्ताश्वेत रे ॥ ज० ॥ चिहुं गति चूरण साथीयो ॥ ब्र० ॥ वधावती धरी हेत रे ॥ज०॥ ४ ॥ गुणवंती गावे गहूंअली ॥ ब्र० ॥ मुनिगुण मणि धरी हाथ रे ॥ ज० ॥ श्रीशुनवीरनी देशना ॥ ब्र० ॥ सुणतां मले शिवसाथ रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली साडत्रीशमी ॥

॥ केसरिया चडो वरघोडे ॥ ए देशी ॥

॥ राजगृही वनखंम विचाल, आव्या वीरजिणंद दयाल, वंदे श्रेणिकनामें नूपाल तो ॥ वीर जगत गुरु वंदना करिएं ॥ वंदना करिएं ने नवजल तरिएं तो ॥ वी० ॥ १ ॥ कुष्टि कुरूप एक देव ते वार, मरण जीवन जन चार विचार, श्रेणिकरायने हर्ष अपार तो ॥ वी० ॥ २ ॥ कोसंबी नगरीनो वासी, सेडूक ब्राह्मण धननो आशी, पुत्र कुटुंबने रोगें वासी तो ॥ वी० ॥ ३ ॥ आवे राजगृही डुवार, मरण लही जल तरश अपार, जलमां मेडकनो अवतार तो

॥ वी० ॥ ४ ॥ वारी हारी नारी वचनथी, पूर वभव लही चाल्यो वनथी, मुज वंदन हरख्यो तन मनथी तो ॥ वी० ॥ ५ ॥ तुझ घोटक पद हणियो जाम, लही सुर भव आव्यो एणें गाम, श्रेणिक देखे तुज परिणाम तो ॥ वी० ॥ ६ ॥ मोक्षगमन कह्यो मुजने सार, दर्दूर रंक तणो अधिकार, उपदेशमाला ग्रंथ मोझार तो ॥ वी० ॥ ७ ॥ राणी चेलणा हर्ष न मावें, मुक्ताफलशुं गहूंली बनावे, श्री शुभवीर जिणंद वधावे तो ॥ वी० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली आडत्रीशमी ॥

॥ द्वारका नगरी दीपती ॥ जिन वंदीएं ॥ वसे जादव कुलनो परिवार ॥ रे जिन वंदीएं ॥ जिनजी ते आवी समोसर्या ॥ जि० ॥ साथें गणधर वर अढार ॥ रेजि० ॥ १ ॥ अढार सहस साधु भला ॥ जि० ॥ ते तो लब्धि तणा रे भंडार ॥ रेजि० ॥ समोसरण देवें रच्युं ॥ जि० ॥ तिहां बेठी पर्षदा बार ॥ रेजि० ॥ ॥ २ ॥ कृष्णजी वांदवा आविया ॥ जि० ॥ साथें अंतेउरनो परिवार ॥ रेजि० ॥ गहूंली ते करे मन रंग शुं ॥ जि० ॥ सत्यभामा रुक्मिणी नार ॥ रेजि० ॥ ॥ ३ ॥ पेरी पटोला दाडमी ॥ जि० ॥ पायें झांजरनोज

मकार ॥ रेजि० ॥ मुक्ताफलनो साथीयो ॥ जि० ॥ पांचरतन्न ते पंचाचार ॥ रेजि० ॥ ४ ॥ लली लली लेती लूंबणां ॥ जि० ॥ जिनमुखडां जूवे रे निहाल ॥ रेजि० ॥ कृस्नजीयें प्रभुजीने पूछियुं ॥ जि० ॥ मुज श्रम चडयो रे अपार ॥ रेजि० ॥ ५ ॥ प्रभुजी कहे श्रम उतर्यो ॥ जि० ॥ तमे कारज कर्युं मनो हार ॥ रेजि० ॥ सातमीनी त्रीजी करी ॥ जि० ॥ तमे समकेत नमो निर्धार ॥ रेजि० ॥ ६ ॥ रोम रोम हर्षित हुआ ॥ जि० ॥ प्रभु तार तार मुज तार ॥ रेजि० ॥ न्यायसागर प्रभु निरखतां ॥जि०॥ तमे जयजय भणो नर नार ॥ रेजि० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ ॥ गहूंली उंगणचालीशमी ॥

॥ आर्यदेश नरभव लह्यो रे, श्रावक कुल मनोहार रे ॥ जिननी वाणी नित्य सुणे रे, धन्य तेहनो अवतार ॥ गुरुने बोलडीये, मोह्या मोह्या रे त्रिभुवन लोक, गुरुने बोलडीये ॥ १ ॥ उठी सवारें प्रभु नमे रे, करें नवकारसी सार रे ॥ शोल शणगार सजी करीने, आवे गुरु दरबार ॥ गु० ॥ २ ॥ त्रण प्रदक्षिणा देइ करीने, वांदी बेसे ठाय रे ॥ बे हाथ अलगी रहिनें, गहूंली पूरवा जाय ॥ गु० ॥ ३ ॥ चिहुंगति दुःख

निवारवा रे, माहामंगल उच्चार रे ॥ आठ मंगल मांहेवडो ने, साथीयो कीजें उदार ॥ गु० ॥ ४ ॥ व धावे गुरुरायने रे, पछे करे पच्चरकाण रे ॥ लूंछणीयां लटके करेने, जाव जलो मन आण ॥ गुं० ॥ ५ ॥ आगम अरथने धारती रें, करती विनय विशेष रें ॥ एम आतमने तारती रे, सौनाग्यलक्ष्मी सुविशेष ॥ ॥ गु० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली चालीशमी ॥

॥ रुडी रे राजगृही उद्याने, पंचसया मुनिमान हो ॥ स्वाम ॥ आवीया गुरु गोयम स्वामी ॥ वनपालें जई राय वधाव्या, हरष वधामणी लाया हो ॥स्वा०॥१॥ आव्या वीरतणा आदेशी, कइएं केवा केशी हो ॥ स्वा० ॥ श्रेणिक अंतेउर सहु तेडी, जीत नगारां गेडी हो ।।स्वा०॥२॥ चेला रायतणी तस बेटी, चेलणा गुणमणि पेटी हो ॥ स्वा० ॥ श्रेणिक रायतणी पट राणी, वीरें आप वखाणी हो ॥ स्वा० ॥ ३ ॥ सा थीयडो कीधो लटकालो, मंगल रंगरसाल हो ॥ स्वा०॥ लली लली गुरुजीने लूंछणां करती, कीर्त्तिनां दानज देती हो ॥स्वा०॥ ४ ॥ देशना सांजली आनंद पामी, धर्म यथोचित राख्यो हो ॥ स्वा०॥ उपगारी गुरुना

गुण गाती, समकित रतनने लाध्यो हो ॥ स्वा० ॥ ॥ ५ ॥ श्री श्रीपालतणीपरें तरसे, शिव रमणी सुख वरसे हो ॥ स्वा० ॥ जे कोई गहूंली एणी परें करशे, मुक्ति तणां सुख वरशे हो ॥ स्वा० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली एकतालीशमी ॥

॥ सोहमस्वामी परंपरा ॥ सुखकारी रे साहेब जी ॥ मुनिगुणरत्न भंमार रे ॥ वालो मारो एही रे साहेब जी ॥ सूरि छत्रिशगुणें शोभता ॥ सु० ॥ धरता माहा व्रत सार रे ॥ वालो० ॥ १ ॥ पंचेंद्रिय संवरपणे ॥ सु० ॥ नवविध ब्रह्मचर्य धार रे ॥ वा० ॥ पंचाचारज पा लता ॥ सु० ॥ टाले क्रोधादिक चार रे ॥ वा० ॥ २ ॥ सुमति गुपति निजशुद्धता ॥ सु० ॥ षटकायक प्रति पाल रे ॥ वा० ॥ एहवा गुरुपद सेवीएं ॥ सु० ॥ पामीएं मंगलमाल रे ॥ वा० ॥ ३ ॥ विहार करंता आवीया ॥ सु० ॥ मुंबई बंदर मकार रे ॥ वा० ॥ संघ सकल अति भावशुं ॥ सु० ॥ सेवा करे नर नार रे ॥ वा० ॥ ४ ॥ अचल गह्णपति दीपता ॥ सु० ॥ रत्नसागर सूरिराय रे ॥ वा० ॥ प्रेमचंद कहे प्रणम तां ॥ सु० ॥ संघने कल्याण थाय रे ॥ वा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली बेंतालीशमी ॥

॥ आवो हरि लासरीया वाला ॥ ए देशी ॥

॥ चालो सखि वंदनने जइयें, वंदीने पावनतो थइयें॥ चालो० ॥ ए आंकणी ॥ माता त्रिशलाना जाया, धरम धुरंधर कहेवाया, गुणशील वनमांहे आया ॥ चालो० ॥ १ ॥ शोना शी वरणवुं बहेनी, त्रिनुवनमां कीरति जेहनी, बलिहारी जाउं हुं एहनी ॥ चालो० ॥ २ ॥ वाजे केवल ठकुराइ, सादि अनंत गुण पाइ, गणधर आगममां गाइ ॥ चालो० ॥ ३ ॥ सुरकोडी सेवा करता, उगणीश अतिशय अनुसरता, नावें नवसायर तरता ॥ चालो० ॥ ४ ॥ चौद हजार मुनि संगें, धारक चरण करण रंगें, शील सन्नाह धस्या अंगें ॥ चालो० ॥ ५ ॥ श्रेणिक चेलणा सहु आवे, मुक्ता फल नरीने लावे, मंगल आठ करी गावे ॥ चालो० ॥ ६ ॥ गातां डुःख दोहग नांजे, मंगल महामंगल काजे, इम कह्यो दीप कविराजें ॥ चालो० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली त्रेंतालीशमी ॥

॥ वाडीना नमरा डाख मिठी रे चांपानेरनी देशी ॥

॥ जीरे कामनी कहे सुणो कंत जी, जीरे फलिया

मनोरथ आज रे ॥ नणदीना वीरा गणधर आव्या छे चालो वांदवा ॥ जीरे नवोदधि पार उतारवा,जीरे तारण तरण जहाज रे ॥न०॥ १ ॥ जीरे गुणशैल्य चैत्य समोसर्या, जीरे वीरतणा छे पटोधार रे ॥न०॥ जीरे पांचशें मुनि परिवार छे, जीरे तीरथना अवतार रे ॥ न० ॥ २ ॥ जीरे कंचन कामिनी परिहर्यां, जीरे प्रगट्या छे गुण वीतराग रे ॥ न० ॥ जीरे परिसहनी फोजने जीतवा, जीरे कर धरी उपशमखड्ग रे ॥न०॥३॥ जीरे प्रवचन मातने पालता, जीरे समिति गुपति धरनार रे ॥ न० ॥ जीरे मेरुगिरि सम मोटका, जीरे पंचमाहाव्रत भार रे ॥ न० ॥ ४ ॥ जीरे सुरपति नरपति जेहने, जीरे दोय कर जोडी हजूर रे ॥ न० ॥ जीरे अमृतसमी गुरुनी देशना, जीरे पाप पमल होये दूर रे ॥ न० ॥ ५ ॥ जीरे कामिनी वयण रे मीठडां, जीरे वांद्या छे गुरु गणधार रे ॥न०॥ जीरे गुरुमुखथी सुणी देशना, जीरे आणंद अंग अपार रे ॥ न०॥६॥ जीरे मुक्ताने रयणें वधावती, जीरे गहूंली चित्त रसाल रे ॥ न०॥ जीरे निजभव सुकृत संभारती, जीरे जेहना छे भाव विशाल रे ॥ न० ॥ ॥ ७ ॥ जीरे दीपविजय कविराज जी, जीरे पृथ्वीनं

दन बलिहार रे ॥ न० ॥ जीरे गौतम गणधर पूज्य जी, जीरे वीरशासन शणगार रे ॥ न० ॥८॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली चुम्मालीशमी ॥

॥ प्रभुजी वीरजिणंदने वंदीयें ॥ ए देशी ॥

॥ सुरिजन विचरता वसुधा तलें, राजगृही उद्यान हे, अलबेली हेली ॥ सुरिजन सुर नर कोडीशुं परिवर्या, ज्ञातनंदन भगवान हे, अलबेली हेली ॥ १ ॥ सुरिजन शासन नायक वंदीयें ॥ ए आंकणी ॥ सुरिजन तेजें तरणी परें झीपता, समतायें सारद चंद हे, अलबेली हेली ॥ सुरिजन गोपथकी शुं भामने, थिरतायें मेरु गिरींद हे, अलबेली हेली ॥ सु० ॥ शा० ॥ २ ॥ सुरिजन योगासन धारी घणा, शमताधर मुनिसंग हे, अलबेली हेली ॥ सुरिजन ज्ञान गजें कोइ गाजता, राजता ध्यान तुरंग हे, अलबेली हेली ॥ सु० ॥ शा० ॥ ३ ॥ सुरिजन प्रातिहार्य वर आठशुं, सेवित सुरसुलतान हे, अलबेली हेली ॥ सुरिजन गुणशील चैत्यमां भविकनें, दे उपदेशनुं दान हे, अलबेली हेली ॥ सुरि० ॥ शा० ॥ ४ ॥ सुरिजन नंदावती नंदोत्तरा, शोल सजी शणगार हे, अलबेली हेली ॥ सुरिजन कुंकुम

अकृत फल लइ, श्रेणिकनी घर नारि हे, अलबेली हेली ॥ सुरि० ॥ शा० ॥ ५ ॥ सुरिजन सुंदरी पूरे साथीयो, प्रणमी वधावे जिणंद हे, अलबेली हेली ॥ सुरिजन अरिहा मुख अवलोकीने, पामे परमानंद हे, अलबेली हेली ॥ सुरि० ॥ शा० ॥ ६ ॥ सुरिजन कीजें उंची एम साचवी, शासन नक्ति विशाल हे, अलबेली हेली ॥ प्रनुनी वाणी अमृत समी अछे, रंगें सुणीयें रसाल हे, अलबेली हेली ॥ सुरि० ॥ शा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली पीस्तालीशमी ॥

॥ सुण गोवालणी गोरसडावाली रे उनी रहेने ॥

॥ ए देशी ॥

॥ सुण साहेली जंगम तीरथ जोवा उनी रहेने ॥ मुनि मुख जोतां मन उल्लसे तन विकसे आपण बेने ॥ ए आंकणी छे ॥ थावर तीरथ दुर्गति वारे, पण घर मेली जइयें ज्यारें, विधियोगें ध्यान धरे त्यारें, संसार समुद्रथकी तारे ॥ सुण० ॥ १ ॥ जंगम मुनि मारगमां फिरता, संयम आचरणा आचरता, जगजीव उपर करुणा धरता, पुण्यशाली घर पावन करता ॥ सुण० ॥ २ ॥ अनाचिरण बावन परिहर

ता, बोले दशवैकालिक करता, गणि पेटी बहु श्रुत नी धरता, मुखचंद्रथकी अमृत जरता ॥ सुण० ॥ ॥ ३ ॥ वर ज्ञान ध्यान हय गय वरिया, तप जप च रणादिक परिकिरिया, विरति पटराणीशुं ठरीया, मु निराज सवाइ केशरीया ॥ सुण० ॥ ४ ॥ सुविहित गीतारथ गुरु आगें, विधियोगें वंदे गुणरागें, कर कंकण पग फांजर वागे, गहूंली करतां अनुनव जा गे ॥ सुण० ॥ ५ ॥ कुंकावटीयें केशर लेती, करी स्व स्तिक पातिकडां धोती, वधावती उज्ज्वल मोती, वल ती नजती गुरुमुख जोती ॥ सुण० ॥ ६ ॥ कलकंठ वती मधुरा रावे, गुणवंती तिहां गहूंली गावे, आ नव सौनाग्यपणुं पावे, शुनवीर वचन हैयडे नावे ॥ सुण साहेली जंगम तीरथ जोवा उनी रहेने ॥ ७ ॥

॥ अथ अगीआर गणधरनी गहूंली ठेतालीशमी ॥

॥ जनक रायने रे मांफवे ए देशी ॥

॥ पहेलो गोयम गणधरु, इंद्रनूति जेहनुं ठे नाम ॥ अग्निनूति वखाणीयें, बीजो प्रनुगुण धाम ॥ १ ॥ गणधर शोना हुं शी कहुं ॥ वायुनूति त्रीजा वजीर ठे, गौतमगोत्र नगवंत ॥ चोथा व्यक्तजी जाणीयें, कीधा नवना रे अंत ॥ गण० ॥ २ ॥ स्वामी सुध

र्मा छे पांचमा, मंम्हित छठा गणधार ॥ मोरिय पुत्र छे सातमा, सहु ए जगना आधार ॥ गण० ॥ ३ ॥ अकंपितजी छे आठमा, अचलजी नवमा रे जाण॥ मेतारय जग पूज्य जी, गणपति दशमो वखाण ॥ गण० ॥ ४ ॥ स्वामी प्रनासजी वंदीयें, एकादश मा गणधार, गणधर गछपति गणपति, तीरथ ना अवतार ॥ द्वादशांगी धरनार, सहु मुनिना शिरदार, पाम्या नवनो रे पार, नामें जय जयकार, वंदो वार हजार ॥ गण० ॥ ५ ॥ आणा लेइ प्रनु वीरनी, सहुने सुखदाय ॥ गुणशीला चैत्य पधा रीया, श्रेणिकवंदन आय ॥ अमृतवाणी सवाय, निसुणी हरख न माय, सुणतां मनडां लोनाय ॥ गण० ॥ ६ ॥ चेलणा पूरे रे गहूंअली, सहीयर गावे छे गीत ॥ दीपविजय कवि राजनी, ए जिनशास न रीत ॥ गण० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली सडतालीशमी ॥

॥ गछ राया रे ए देशी ॥

॥ चित्त समरुं सरसति माय रे, वली वदूं सद्गुरु पा य रे, हुंतो गाइश तपगछ राय रे ॥ गछ राया रे ॥ १ ॥ छत्रीश गुणें गुरु राजे रे, गौतम गणधर पट

बाजे रे, गुरु पंचाचार दीवाजे रे ॥ ग० ॥ २ ॥ गुरु सारण वारण दाता रे, जिनराज सदा मन ध्याता रे, गुरु संयम धरमें बे राता रे ॥ ग० ॥ ३ ॥ गुरु पंच महाव्रत पाले रे, गुरु आतम तत्व संभाले रे, गुरु जिनशासन अजुआले रे ॥ ग० ॥ ४ ॥ जेणे ज्ञाननी दृष्टि निहाली रे, गुरु देशना दे लटकाली रे, गुरु प्रतपे कोड दीवाली रे ॥ ग० ॥ ५ ॥ गुरु मधुरे वचनें वरसे रे, भव्य जीव तणा मन हरसे रे, गुरु गुण सुणवा मन तरसे रे ॥ ग० ॥ ६ ॥ करो गहूंली गछपति आगें रे, वधावो गुरु महाभागें रे, गाउं मंगल मधुरें रागें रे ॥ ग० ॥ ७ ॥ गुरु धन्य आणंदिबाइ जाया रे, साहेब राजकुलमां सवाया रे, श्री श्रीविजयलक्ष्मी सूरिराया रे ॥ ग० ॥ ८ ॥ गुरु प्रेम पदारथ पाया रे, जेणें धर्मना पंथ बताया रे, एम दीपविजय गुण गाया रे ॥ ग० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ केशीकुंमारनी गहूंली अडतालीशमी ॥

॥ जीरें वर वरघोडे संचस्यो, जीरे बिहुंपासें चमर ॥

॥ वींजाय ॥ जीयावरनी घोडली ॥ ए देशी ॥

॥ जीरे कुंकुम बडो देवरावीयें, जीरे मोतीना चोक पूरावो ॥ वधाइ वधाइ बे ॥ जीरे घेर घेर गुडी रें

सज करो, जीरे सोहागण मंगल गावो ॥ वधाइ वधा इ छे ॥ १ ॥ जीरे आज वधाइना कोड छे, जीरे सेतंबी नगरी मोझार ॥ वधा० ॥ जीरे पाश प्रभुजी ना पटधरु, जीरे आव्या छे केशीकुमार ॥ वधा० ॥ २ ॥ जीरे पांचशें मुनि परिवार छे, जीरे जीवद या प्रतिपाल ॥ वधा० ॥ जीरे दुःकर परिसह झीप तां, जीरे जगजसकार प्रनाल ॥ वधा० ॥ ३ ॥ जीरे छंमद्या छे मोह संसारना, जीरे व्रतधारी संयम धार ॥ वधा० ॥ जीरे चरण करणनी सीत्तरी, जीरे सेवा लहे नवतार ॥ वधा० ॥ ४ ॥ जीरे तपीया छे केइ मुनिराज जी, जीरे त्यागी छे केइ मुनिराज ॥ वधा० ॥ जीरे मुनि गुणठाणे वरतता, जीरे शिव वधू वरवाने काज ॥वधा०॥५॥ जीरे नृप परदेशी रे हरखीयो, जीरे पहोतो छे वंदन काज ॥ वधा० ॥ जीरें गुरु उपकार संभारतो, जीरे पूज्य छे गरीबनि वाज ॥ वधा० ॥ ६ ॥ जीरे नृपपटराणी रे गहूंअली, जीरे पूरे छे पूज्य हजूर ॥ वधा० ॥ जीरे दीपविजय कविराजने, जीरे वंदो उगमते सूर ॥वधा०॥७॥इति॥

॥ अथ गहूंली उगणपच्चाशमी देशीउपरली ॥

॥ जीरे सूर उगमती गहूंअली, जीरे गुरु आगल श्री

कार ॥ मनोहर गहूंअली ॥ जीरे सहीरे समाणी संच
री, जीरे पूठें बहु परिवार ॥ म० ॥ १ ॥ जीरे चालो
रे सहीउ उतावली, जीरे हयडे हर्ष न माय ॥ म०॥
जीरे समकेतने अजूवालवा, जीरे वंदीयें श्री गुरुरा
य ॥ म० ॥ २ ॥ जीरे सरखा सरखी सुंदरी, जीरे
टोलें मली गह घाट ॥ म० ॥ जीरे आगा शालु उ
ढणी, जीरे उपरें नवरंग घाट ॥ म० ॥ ३ ॥ जीरे
नावें सहगुरु नेटवा, जीरे सहू मलीने साथ ॥म०॥
जीरे उलटें आव्या अप्पा सहि, जीरे सोवनथाली
हाथ ॥ म० ॥ ४ ॥ जीरे हीरे जडित कुंकावटी,
जीरे मांहे कपूर बरास ॥ म० ॥ जीरे मांहे मृगमद
महमहे, जीरे केसर चंदन खास ॥ म० ॥ ५ ॥
जीरे चतुरा चाली चमकती, जीरें गमकेशुं ठवती
पाय ॥ म० ॥ जीरे चरणे नेउर रणजणे, जीरे मा
निनी मानें गाय ॥ म० ॥ ६ ॥ जीरे पाये वीछूआ
वाजणा, जीरे कांजरना रमजोल ॥ म० ॥ जीरें प्रे
मेशुं गहूंअली करी, जीरे नवखंमी रंगरोल ॥म०॥
॥ ७ ॥ जीरे पूरि सोहासण साथीउ, जीरें मोतीडे
मनरंग ॥ म० ॥ जीरे नूंगल नेरी नण हणे, जीरे
वाजे ढोल मृदंग ॥ म० ॥ ८ ॥ जीरे त्रण खमा

समण देइने, जीरे वंदे सहु नर नार ॥ म० ॥ जीरें संघ मल्यो सहु सामटो, जीरे उत्सवनो नहीं पार ॥ म० ॥ ए ॥ जीरे सह गुरु दीये तिहां देशना, जीरे वांचो सूत्रविचार ॥ म० ॥ जीरे जलधरनी पेरे गाजता, जीरे वरसता अमृतधार ॥ म० ॥ १० ॥ जीरे मीठी रे मीठी मीठडी, जीरे मीठी शाकर डाख ॥ म० ॥ जीरे तेहथकी पण मीठडी, जीरे मीठी म ह्वारा गुरुजीनी जाष ॥ म० ॥ ११ ॥ जीरे एकचित्तें जे सांजले, जीरे पामे ते जवपार ॥ म० ॥ जीरे नित्य नित्य रंग वधामणा, जीरे सुख पामे संसार ॥ म०॥ ॥ १२ ॥ जीरे हीररतन सूरि राजीया, जीरे तपगछ केरा राज ॥ म० ॥ जीरे अमे अमारा गुरुजीने गा यडुं, जीरे न गमे ते उठीने जाउ ॥ म० ॥ १३ ॥ जीरें दानशीयल तप जावना, जीरे जे सुणे ए जि नवाणी ॥म०॥ जीरे उदयरतन मुनि एम कहे, जीरे ते लहे कोड कल्याण ॥ म०॥ १४॥ इति गहूंली गीत ॥

॥ अथ गहूंली पच्चाशमी ॥ गरबानी देशी ॥

॥ बेनी राजगृही उद्यानके, वीर प्रजु आवियारें लोल के ॥ बेनी समवसरण मंमाण, रचे सुरवर तिहां रे लोल ॥ बेनी चार निकायना देव, मली तिहां आ

विया रे लोल ॥ बेनी परखदा बेठी बार, सुणे प्रभु देशना रे लोल ॥ १ ॥ बेनी सोहम गणधर मुनि राय के, नरनारी मली रे लोल ॥ बेनी चौद सहस परिवार के, आवी परवस्या रे लोल ॥ बेनी श्रेणिक राय प्रमुख, वंदन मन भावियां रे लोल ॥ बेनी राणी चेलणा नार, भरी थाल वधावीया रे लोल ॥ २ ॥ बेनी गुरुमुख जोती सार के, मनमां गह गहे रे लोल ॥ बेनी सहियरो मली मंगल गाय के, वाजे डुंडुभि रे लोल ॥ बेनी समकित धरती सार के, प्रभु गुण आलवे रे लोल के ॥ बेनी सूत्र सुणे मनभाव के, अरथने धारती रे लोल के ॥ ३ ॥ बेनी प्रभुवंदन सुपसाय के, चिहुं गति चूरती रे लोल ॥ बेनी सोहम गणधर पाट, परंपर शोभता रे लोल ॥ बेनी चंद्रोदयरत्न गणधार के, लवणपुर राजता रे लोल के ॥ बेनी चउविध संघ सुपसाय के, मांहे गाजता रे लोल के ॥ ४ ॥ बेनी धर्मोपदेश सुणाय, मिथ्यात्वने वारता रे लोल ॥ बेनी शांतिचरित्र कहेवाय के, भविने तारता रे लोल ॥ बेनी गहूंली करती जोय के, लली लली लूंछणां रे लोल ॥ बेनी सामायक पोसह समुदाय, करे वली पूछणां रे लोल के ॥ ५ ॥ बेनी

थानक तप आराधे, मन अति नावशुं रे लोल ॥ बेनी वली रोहणी तप अति नाव के, पाले प्रेमशुं रे लोल के ॥ बेनी समेतशिखर गिरि नेटण, अल जो छे घणुं रे लोल के ॥ बेनी पुण्य पसायें तेह, मनोरथ सवि फल्या रे लोल के ॥६॥ बेनी संवत उगणीशें वीशमां, कारज साधीयां रे लोल के ॥ बेनी चइतर शुदि तेरशने, नोमे वांदीया रे लोल के ॥ बेनी कहे क वियण कर जोड, करी एक वीनति रें लोल के ॥ बेनी चंडोदयरत्नसूरींदने, नित्य नित्य वंदती रे लोल के ॥७॥

॥ अथ गहूंली एकावन्नमी ॥ गरबानी देशीमां ॥

॥ बेहनी गुरु गछपति गुरुराज के, गौतम जाणीयें रे ॥लो०॥ बेहनी मुनि मंमल महाराज के, मनघर आणीयें रे ॥ लो० ॥१॥ बेहनी शासनना सुलतान, वजीर श्री वीरना रे ॥लो०॥ बेहनी लब्धिवंत निधान, के श्रीगुण हीरना रें॥ लो० ॥ २ ॥ बेहनी मगधदेश मझार के, गोवरगाम छे रे ॥ लो० ॥ बेनी वसुनूती पृथिवी नार के, माता नाम छे रे ॥लो०॥ ३ ॥ बेहनी सोवन वान समान, शरीर सकोमलां रे ॥लो०॥ बेहनी लोचन युगल प्रधान के, करक्रम कोमला रे ॥ लो० ॥४ ॥ बेहनी ज्ञान रयण नंमार, सिद्धांतना

सागरु रे ॥ लो० ॥ बेहनी महाव्रत जस मनोहार, महिमागुण आगरू रे ॥ लो० ॥ ५ ॥ बेहनी नहीं प्रतिबंध विहार, नहीं ईहा कशी रे ॥ लो० ॥ बेहनी सकल जंतुहितकार, दया जस मन वसी रे ॥ लो० ॥ ६ ॥ बेहनी नयरी चंपाउपवन्न के, पूज्य पधारीया रे ॥ लो० ॥ बेहनी श्रेणिकसुत धन्यधन्य के, वंदन पधारीया रे ॥ लो० ॥ ७ ॥ बेहनी देशना दीये गुरु राय, नविक प्रति बोधता रे ॥ लो० ॥ बेहनी प्रह उठी प्रणमुं पाय, समिति पंच शोधता रे ॥ लो० ॥ ॥ ८ ॥ बेहनी कोणिक नृपति नारके, गहूंली लावती रे ॥ लो०॥ बेहेनी स्वस्तिक पूरति खास के, मोतीयें व धावती रे ॥ लो०॥ ए ॥ बेहनी कामिनी कोकिलवाणि के, गुरुगुण गावती रे ॥लो०॥ बेहनी सौनाग्य लक्ष्मी सुखखाण के, सदा सुख पावती रे ॥ लो०॥ बेहनी गुरु गछपति गुरुराज के, गौतम जाणीयें रे ॥ लो०॥ १० ॥

॥ अथ गहूंली बावन्नमी गरबानी देशीमां ॥

॥ बेनी अपापा नयरी उद्यान के, वाजां वागियां रे लोल ॥ बेनी देववाजिंत्र अनेक के, घनाघन गाजीया रे लोल ॥ १ ॥ बेनी इंद्रजूत्यादि अग्यार के, ब्राह्मण दीपता रे लोल ॥ बेनी वेदवादना जाण के, बहु वा

द झींपता रे लोल ॥ २ ॥ बेनी संशय छे अति गूढ, मिथ्यामति पूरिया रे लोल ॥ बेनी श्रीजिन अमृत वाणी के, सुणि सुख पामीया रे लोल ॥ ३ ॥ बेनी छांडी सकल जंजाल के, हुवा व्रत नाविया रें लोल॥ बेनी इंद्र सनानो थाल, केवा जश आविया रे लोल ॥ ४ ॥ बेनी अरिहा ए आचार के, तीरथ थापिया रे लोल ॥ बेनी लावो गहूंली गेल के, हरखे वधा विया रे लोल ॥ ५ ॥ बेनी वधावो श्री जिनराज, करो नित्य नामणां रे लोल ॥ बेनी गाउ मंगल गी त के, लीजें वारणां रे लोल ॥ ६ ॥ बेनी बांधो तोर ण बार के, सुरतरु मालिका रे लोल ॥ बेनी गाउ मंगलगीत के, मली बहु बालिका रे लोल ॥७॥ बेनी गौतम केवलज्ञान के, सोहम गछधणी रें लोल ॥ बेनी आपी जंबूने पाट के, पहोता शिवमणि रें लोल ॥ ८ ॥ बेनी करतां एहनुं ध्यान के, लहीयें जश घणो रे लोल ॥ बेनी विबुध कहे श्रीविरने, सहु जय जय नणो रे लोल ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली त्रेपनमी ॥

॥ पंचम गणधर वीरना रे ॥ मुनि वंदीयें ॥ साथें पांचशें मुनि गुणधाम रे ॥ गुरु वंदीयें ॥ राजगृही

उद्यानमां रे ॥ मु० ॥ गुरु समवसख्या गुन गाम रे ॥ गु० ॥ १ ॥ पंच महाव्रत पालता रे ॥ मु० ॥ दशविध संयतनो धर्म रे ॥ गु० ॥ संयम सत्तर प्रकारथी रे ॥ मु० ॥ लही पाले तेहनो मर्म रे ॥गु०॥ ॥ २ ॥ दश प्रकार विनय नलो रे ॥ मु० ॥ ब्रह्मचर्य नववाडें युत्त रे ॥ गु०॥ रत्नत्रयि आराधता रे ॥ मु०॥ बार नेदें तपमां रत्त रे ॥ गु० ॥३॥ क्रोध मान माया लोनने रे ॥मु०॥ झींपता करे उग्र विहार रे ॥गु०॥ चरण सित्तरी पालता रे ॥ मु० ॥ तिम करण सित्तरी सार रे ॥ गु० ॥ ४ ॥ वंदनहेतें आविया रे ॥ मु०॥ राय श्रेणिक बहु परिवार रे ॥ गु० ॥ चेलणा लावे गहूंअली रे ॥ मु० ॥ घाट शील पहेरी मनोहार रे ॥ गु० ॥ ५ ॥ आनूपण सत्यवचननां रे॥ मु०॥ करे स्वस्तिक विनय प्रधान रे ॥ गु० ॥ श्रद्धा अक्षत था पती रे ॥ मु० ॥ करे लूंबणां सुप्रणीधान रे ॥ गु० ॥ ॥ ६ ॥ देशना सांनले हर्षशुं रे ॥ मु० ॥ कहे धन्य धन्य तुम गुरुज्ञान रे ॥ गु० ॥ उत्तम गुरु पद पद्मनी रे ॥ मु० ॥ सेवा करतां लहे शिवगाण रे ॥ गु० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ गुरु आगल गहूंली चोपन्नमी ॥

॥ तमे पीतांबर पेर्यांजी मुखने मरकडले ॥ ए देशी ॥

॥ चेलणा लावे गहूंली ॥ गुरु ए रूडा ॥ श्रेणिक नृप घरनार ॥ सजनी ए रूडा ॥ सोहम स्वामी समोसर्या ॥ गु० ॥ प्रभु पंचम गणधार ॥ स० ॥ १ ॥ छत्रीश छत्रीशी गुणें ॥ गु० ॥ शोभित पुण्य पवित्त ॥ स० ॥ आगमवयण सुधारसें ॥ गु० ॥ वरसी ठारे चित्त ॥ स० ॥ २ ॥ पडिरूवादिक चौद ले ॥ गु० ॥ खांतादिक दश धर्म ॥ स० ॥ बारह भावना भावियां ॥ गु० ॥ एह छत्रीशी मर्म ॥ स० ॥ ३ ॥ दंसण नाण चरण तणा ॥ गु० ॥ तप आचारें युक्त ॥ स० ॥ क्रोधादिक चिहुं परिहरे ॥ गु० ॥ पंचेंद्रिय त्याग प्रयुक्त ॥ स० ॥ ४ ॥ नवविध तत्वनी देशना ॥ गु० ॥ नव कल्पी उग्र विहार ॥ स० ॥ नव नीयाणां परिहर्यां ॥ गु० ॥ नव वाडें व्रत धार ॥ स० ॥ ५ ॥ आतम बाजोठ उपरें ॥ गु० ॥ समकेत साथियो पूर ॥ स० ॥ मूल उत्तरगुण गहूंअली ॥ गु० ॥ उपशम अक्षत भूर ॥ स० ॥ ६ ॥ कोकिल कंठें कामिनी ॥ गु० ॥ सोहव गावे गीत ॥ स० ॥ माणिक मोती छूंछणां ॥ गु० ॥ श्री जिनशासन रीत ॥ स० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ समवसरणनी गहूंली पच्चावन्नमी ॥

॥ श्रावण वरसे रे स्वामी ॥ ए देशी ॥

॥ सांभल सजनी रे म्हारी, समवसरणनी शोभा सारी ॥ प्रथम गढ रूपानो राजे, सोवन कोसीसां तस बाजे ॥ सांभल०॥ १ ॥ बीजो कंचननो गढ निरखो, रत्न कोसीसां जोइ जोइ हरखो ॥ त्रीजो रत्न तणो गढ शोहे, मणि कोसीसें मनडुं मोहे ॥ सां० ॥ २ ॥ जुगतें सुरवर रे जडीयां, वीश हजार जेहनां पावडीयां ॥ मध्यें रत्न पीठ मनोहार, जडित सिंघासण शोहे अपार ॥ सां० ॥ ३ ॥ तखतें राजे श्रीवर्द्धमान, जाणे अभिनव उदयो भाण ॥ देव दुंदुभि नादें गाजे, वाजित्र कोडी गमे तिहां वाजे ॥सां०॥ ४ ॥ सुगंध पाणी परिमल पूर, वरसे पंच वरणनां फूल ॥ जाणे वंसत ऋतु बहु फूली, भ्रमरा कुसुम कुसुम रह्या फूली ॥ सां० ॥ ५ ॥ थेथै नाचे सुरवधू बाला, गावे गीत सुकंठ रसाला ॥ चिहुं दिशि चामर रे ढलके, मणिमुक्ताफल तोरण झलके ॥ सां० ॥ ६ ॥ शिर पर छत्र अनोपम सार, पुंठे भामंडल तेज अपार ॥ बेठी परषदा रे बार, वाणी वरसे जिम जलधार ॥ सां० ॥ ७ ॥ राजा श्रेणिकनी राणी, नामें चेलणा

गुणनी खाणी ॥ कुमकुम चंदन रे घोळी, करती ग
हूंळी जमर जोळी ॥ सां० ॥ ८ ॥ ळळी ळळी नम
ती रे जावें, मुक्ताफळशुं वीरने वधावे ॥ हसी हसी
जिनमुख रे जोती, जाणे जवदुःखडानें खोती ॥सां०
॥९॥ एणी परें जे कोइ गहूंळी करशे, पुण्य पनोती
जवजळ तरशे ॥ कीर्त्ति गुरुनी रे गावो, माणक शिव
सुख वेगें पावो ॥ सां० ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंळी बपन्नमी ॥

॥ वर अतिशय कंचन वाने, राजगृही नयरी उद्या
ने हो ॥ धन धन मुनिराया ॥ आवीया गुरु गौतम
स्वामी, सुर असुर नमे शिर नामी हो ॥ धन० ॥१॥
ज्ञानादिक गुण मणि जरीया, उपशम रस करा दरी
या हो ॥ धन०॥ मुनि पंचसया वरिवारें, जे आप त
र्या पर तारे हो ॥ धन० ॥ २ ॥ आव्या जाणी चत्र
नाणी, श्रेणिक नरपति पटराणी हो ॥ धन० ॥ चे
लणा नामें गुण पेटी, चेटक महाराजनी बेटी हो
॥ धन० ॥ ३ ॥ आवे गणधर वांदवा, शुद्ध समके
त लाज लहेवा हो ॥ धन० ॥ करे स्तुति नित्य कर
जोडी, दुर्दम मद आठने मोडी हो ॥ धन० ॥ ४ ॥
करे कुंकुम स्वस्तिक मोती, वधावे पुण्य पनोती हो

॥ धन० ॥ करे लूंढणा गुरुमुख निरखी, हैयडामांहे घणुं हरखी हो ॥ धन० ॥ ५ ॥ निसुणी सद्गुरुनी वाणी, मीठी जे अमीय समाणी हो ॥ धन० ॥ करे निर्मल समकित करणी, घरे पहोती समकित घरणी हो ॥ धन० ॥ ६ ॥ एम शासन सोह वधा वो, करो नवियण सफल जमारो हो ॥ धन० ॥ ध्यावो अविनाशी धाम, उलसे निज आतम राम हो ॥ धन० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली सत्तावन्नमी ॥

॥ नदी यमुनाके तीर उडे दोय पंखीआं ॥ ए देशी ॥

॥ चंपानयरी उद्यानमां, गणधर आवीया ॥ नामे सोहम स्वामी, नविकमन नाविया ॥ बिषय प्रमाद कषाय, हास्यादिक तजी ॥ रमता आतमराम के, निजपरिणति नजी ॥ १ ॥ नीरागी नगवान, करे गुण देशना ॥ उपकारी असमान के, तारे नविजना ॥ सुणवा जिनवर वाण, तिहां आव्या सहु ॥ नर नारीना थोक के, हर्ष मनें बहु ॥ २ ॥ वसन आनूषण व्रत, तणा अंगें धरे ॥ कोणिक नूपति नार, हवे गहूंली करे ॥ समिति गुप्ति सहियरने, साथें आवती ॥ आतम असंख्य प्रदेश, रकेबी लावती ॥ ३ ॥ श्रद्धा कुंकु

म घोली, स्वस्तिक करे नावथी ॥ आतम पीठने उपर, जिनगुण गावती ॥ विनयवती बहुमानथी, इम गहूं ली करे, अनुनवनां करि लूंठणां, आणा तिलक धरे ॥ ४ ॥ इव्यनावथी इणी परें, जे गहूंली करे ॥ समकितवंती श्राविका, नव सायर तरे ॥ मणि उद्योत गुरुराजना, गुणसखी मन धरो ॥ पामी मनुज अवतार के, शंका नवि करो ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली अठावन्नमी ॥

॥ चरण करण गुण आगरु रे ॥ गणधर, गिरूआ गौतम स्वाम ॥ सुहावो गहूंअली रे ॥ सुरगुरु सुरतरु सुरमणि रे ॥ गणधर ॥ प्रगटे जेहने नाम ॥ सु०॥१॥ नयरी विशाला उद्यानमां रे ॥ गणधर ॥ वर्द्धमान वड शिष्य ॥ सु० ॥ चौद सहस्त्र अणगारमां रे ॥ ग०॥ तिलक समान जगीस ॥ सु० ॥ २ ॥ सुररचित कज उपरें रे ॥ ग० ॥ बेसी वरसे वयणां ॥ सु० ॥ कनकाचल चूला चढ्यो रे ॥ ग०॥ पुष्कर जलधर अयेन ॥ सु० ॥ ३ ॥ राणी चेलणा रायनी रे ॥ ग० ॥ फाल जबूके कान ॥ सु०॥ स्वामी वीरजिणंदनी रे ॥ ग०॥ चतुरा चंपकवान ॥ सु०॥ ४ ॥ कुंकम रयण कचोलडी रे ॥ ग० ॥ रजत रकेबी हाथ ॥ सु० ॥

मुक्ताफलनो साथीउ रे ॥ ग० ॥ सात पांच सखी साथ ॥सु०॥५॥ पंचाचार उवारणे रे ॥ ग० ॥ वारू पंच रतन ॥ सु० ॥ जिनशासन मुनि दीपतो रे ॥ ग० ॥ कीजें कोडी जतन ॥ सु० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली उगणशाठमी ॥

॥ आज हजारी ढोलो प्राहुणो ॥ ए देशी ॥

॥ राज गृही रलीयामणी, जिहां गुणशीलचैत्य सुगाम ॥ साथण मोरी हे ॥ सहीयर मोरी हे ॥ बहेनड मोरी हे ॥ आवो सवाइ गुरु नेटवा, कांइ मेटवा कर्म कठोर ॥ सा० ॥ स० ॥ बे० ॥ आ० ॥ मुनि गणतारा चंद्र ज्युं, आव्या गणधर गौतम स्वाम ॥ सा० ॥ १ ॥ जेह पंच इंद्रिय वश करे, वली पाले पंचा चार ॥ सा० ॥ जेह पंच समिति गुप्ति धोरी परें, वहे पंच महाव्रत नार ॥ सा० ॥ २ ॥ नव वाडें ब्रह्म धरे सदा, वली परिहरे चार कषाय ॥ सा० ॥ जे लब्धि अठावीशनो धणी, जयो आठ प्रनावक राय ॥सा०॥ ॥ ३ ॥ पहिरण पीत पटोलडी, उपर उढण नव रंग घाट ॥ सा० ॥ कुंकुम रोल सुसाथीउ, करे अक्षत पूरि सुघाट ॥ सा० ॥ ४ ॥ वली लली लली कीजें लूंछणां, लेइ रजत कनकनां फूल ॥सा०॥

करो जिन शासन प्रनावना, वजडावो मंगल तूर ॥ सा० ॥ स० ॥ बे० ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली शारमी ॥ गरबानी देशीमां ॥

॥ वाला महारा राजगृही उद्यान के, वीर समोसर्या रे लोल के ॥ वाहाला मलिया चोशठ इंद्र के, बहु परिवारशुं रे लोल के ॥ वा० ॥ १ ॥ वाला वधामणी महाराजनी, श्रेणिक सांनली रे लोल के ॥ वाला श्रेणिक पुरी जन लोक के, सौ मली एकठा रे लोल के ॥ वा० ॥ २ ॥ वाला वंदी बेठो नूप के, प्रनुजी आगलें रे लोल ॥ वाला चेलणा घूंघट ताणी के, उठी मन गहगही रे लोल के ॥ वा० ॥ ३ ॥ वाला स्वस्तिक पूरी पास, वधावे मन रुली रे लोल के ॥ वाला लूंछणा करे वार वार, सोहागण सहु मली रे लोल के ॥ वा० ॥ ४ ॥ वाला सजी शोले शणगार के, मली घणी बालिका रे लोल के ॥ वाला एणी परें जे जिन आगल, करे नित गहूंअली रे लोल ॥ वा० ॥ ५ ॥ वाला जाय सकल जंजाल के, नवोदधि दुःख हरे रे लोल के ॥ वाला कहे गौतम निरधार के, चित्त चोखे करी रें लोल के ॥ वा० ॥ ६ ॥

॥ अथ पर्यूषणने विषे कल्पसूत्र पधरा ॥
॥ ववानी गहूंली एकशठमी ॥

॥ जीरे ललित वचननी चातुरी, जीरे चतुर कहे गुरुराज ॥ जीरे सुगुण सनेही सांभलो ॥ जीरे पर्व पर्यूषण आज ॥ जीरे ललित० ॥ १ ॥ जीरे आश्र वभाव निवारीने, जीरे स्वजन सहित बहु मान ॥ जीरे कल्पसुत्तर घर लावीयें, जीरे अठाइ धर धरी ध्यान ॥ जीरे ललित० ॥ २ ॥ जीरे दीपक अगर उखेवीयें, जीरे रात्री जागरण नित्य ॥ जीरे पूजा विविध रचावीयें, जीरे त्रण दीवस इणि रीत ॥ जीरे ललित० ॥ ३ ॥ जीरे सुण सज्जनी रजनी गइ, जीरे कल्प धूरा परभात ॥ जीरे सहीयर मली मंगल भणे, जीरे हयगय रथ मेलात ॥ जीरे ललित० ॥ ४ ॥ जीरे वर घोडे भली भातशुं, जीरे सुचि तनु पुस्तक हाथ ॥ जीरे इम मंभाणे आवीया, जीरे जिहां श्रुत निधि गुरुनाथ ॥ जीरे ललित० ॥ ५ ॥ जीरे गुरुस नमुख लही वांचना, जीरे प्रमुदित परषदामांह ॥ जीरे इणि अवसर गजगति सती, जीरे मुनिपद नमत उछाह ॥ जीरे ललित० ॥६॥ जीरे समकितवंती श्राविका, जीरे सहियर मली समदिठ ॥ जीरे अनु

नव तत्त्व मोतीयें, जीरे अस्तिक लक्षण पीठ ॥ जीरे लखित० ॥ ७ ॥ जीरे स्वस्तिक पूरी वधावती, जीरे बेसती बेसणगाय ॥ जीरे पंच कल्याणक देशना, जीरे नव व्याख्यान सुणाय ॥ जीरे लखित० ॥ ८ ॥ जीरे छठ अठम तप जिन नमी, जीरे सांजलशे नर नारि ॥ जीरे श्री शुजवीरने शासने, जीरे करशे एक अवतार ॥ जीरे लखित० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली बाशठमी ॥

॥ हाररो हीरो माहारो साहेबो ॥ ए देशी ॥

॥ जगगुरु जगचिंतामणि ॥ सहियर मोरी ॥ जगबंधव जगत्रात हो ॥ द्वारिकां नगरी समोसख्या ॥ सहि० ॥ बावीशमा जगतात हो ॥ उलट आणी, एतो लाज ने जाणी, एतो पुण्यनी खाणी, शुद्ध श्राविका ॥ न वि तमे गहूंली करो मनरंग हो ॥ १ ॥ हरि वांदी नमी करी ॥ सहि० ॥ बेठा बे कर जोडी हो ॥ अमृतसम जिनदेशना ॥ सहि० ॥ सांजले मनने खोडी हो ॥ उल० ॥ लाज० ॥ पुण्य० ॥ शुद्ध० ॥ नवि० ॥ ॥ २ ॥ श्याम शरीरें शोजता ॥ सहि० ॥ तेज तणो नहीं पार हो ॥ ऊबक बनी जिनराजनी ॥ सहि० ॥ विश्व मानस हितकार हो ॥ उल० ॥ लाज० ॥

॥ पुण्य० ॥ शुद्ध० ॥ नवि० ॥ ३ ॥ धन्य धन्य राणी रुक्मिणी ॥ सहि० ॥ व्रत नूषण धरी अंग हो ॥ तप सुघाट घूंटी समो ॥ सहि० ॥ चूनडी सुशील सुचंग हो ॥ उल० ॥ लाल० ॥ पुण्य० ॥ शुद्ध० ॥ नवि० ॥ ४ ॥ क्रिया कुंकावटी कर ग्रही ॥ सहि० ॥ जिनगुण कुमकुम घोल हो ॥ मननिर्मल जल नेलती ॥ सहि० ॥ चित्त उल्लसी तनरंग रोल हो ॥ उल० ॥ लाल० ॥ पुण्य० ॥ शुद्ध० ॥ नवि० ॥ ५ ॥ समकित बाजोठ उपरें ॥सहि०॥ श्रद्धा स्वस्तिक जोर हो ॥ रुचि मुक्ताफल पूरती ॥ सहि० ॥ चूरती कर्म कठोर हो ॥ उल० ॥ लाल० ॥ पुण्य० ॥ शुद्ध० नवि० ॥ ६ ॥ नाण चिंतामणि थापती ॥ सहि० ॥ अनुनव कुसुम सुरंग हो ॥ विनयें करी वधावती ॥ सहि० ॥ ललती जेम सुरंग हो ॥ उल० ॥ लाल० ॥ पुण्य० ॥ शुद्ध० ॥ नवि० ॥ ७ ॥ सम्यक्दृष्टि निरखती ॥ सहि० ॥ हरखती हृदय मोजार हो ॥ क्षण क्षणमां जिनराजने ॥ सहि० ॥ तृप्ति न पामे लगार हो ॥ उल० ॥ लाल० ॥ पुण्य० ॥ शुद्ध० ॥ नवि० ॥ ८ ॥ द्रव्य नावें करी गहूंअली ॥ सहि० ॥ रुक्मिणी राणी एम

हो ॥ तेम करो तमे श्राविका ॥ सहि० ॥ कीर्त्ति पामो जेम हो ॥ ज्ञ० ॥ लान० ॥ पुण्य० ॥ ॥ शुद्ध० ॥ नवि० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली त्रेशठमी ॥

॥ हारनो हीरो माहरो ॥ ए देशी ॥ अथवा ॥ साचनो शूरो नृप चंदजी राजिंद माहारा ॥ ॥ नाग्य तणी बलिहारी हो ॥ ए देशी ॥

॥ चननाणी चोखे चित्तं, सहियर मोरी ॥ श्री सोहम गणधार हो ॥ आप स्वनावमां खेलता, सहियर मोरी, धरता ध्यान उदार हो ॥ सहेज सोनागी गुरु, शिवसुखरागी गुरु, शुनमति जागी गुरु वंदवा ॥ सहियर मोरी चालो हर्ष उल्लास हो ॥ १ ॥ बारे नावना नावतां, सहियर मोरी ॥ अनित्यादिक गुणगेह हो ॥ महाव्रत पामीने वली ॥ सहि० ॥ नावे पण वीश तेह हो ॥ सहे० ॥ शिन० ॥ शुन० ॥सहि०॥ चालो० ॥ २ ॥ संज्ञादिक योगें करी ॥ सहि० ॥ स हस अढार जे थाय हो ॥ तेहने शील कहीजीयें ॥ सहि० ॥ ते पाले निरमाय हो ॥सहे०॥ शिव० ॥ ॥ शुन० ॥ सहि० ॥ चालो० ॥ ३ ॥ समिति गुपति सूधी धरे ॥ सहि० ॥ चरण करण गुणधाम हो ॥

पडिलेहण आवश्यकादिकें ॥ सहि० ॥ अहोनिश रहे सावधान हो ॥ सहे० ॥ शिव० ॥ शुन० ॥ ॥ सहि० ॥ चालो० ॥ ४ ॥ सदाचार एम पालता ॥ सहि० ॥ वर्त्ते आतमनाव हो ॥ नयरी राजगृही आविया ॥ सहि० ॥ नवोदधि तारणनाव हो ॥ सहे० ॥ शिव० ॥ शुन० ॥ सहि० ॥ चालो० ॥ ॥ ५ ॥ उदंत सुणीने आवियो ॥ सहि० ॥ वंदन श्रेणिकराय हो॥ साथें राणी चेलणा ॥ सहि० ॥ गहूंली करे गुण गाय हो ॥ सहे० ॥ शिव० ॥ शुन० ॥ ॥ सहि०॥ चालो०॥ ६ ॥ मनमोहन गुरु तिहां कणे ॥ सहि० ॥ देई देशना हितकार हो ॥ नाव धरीने जे सुणे ॥ सहि० ॥ ते लहे सुख श्रीकार हो ॥ सहेज सोनागी गुरु, शिवसुखरागी गुरु, शुनमति जागी गुरु वांदवा ॥ सहियर मोरी चालो हर्ष उल्लास ॥ हो ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली चोशठमी ॥

॥ जगजीवन यमुना रे, जल नरवा द्यो ॥ ए देशी ॥

॥ आतमरुचि गुणधारणी रे, मनोहारणी ॥ करे गहूंअली तजी खेद रे, सुखकारणी ॥ नाम थापना

द्रव्यथी रे, मनोहारणी ॥ नावे मंगल चिहुंनेद रे, सुख० ॥ १ ॥ जीव अजीवने मिश्रथी रे ॥ म० ॥ एतो नाम मंगल त्रिहुं नाम रे ॥ सु० ॥ आपें मंगल ए सही रें ॥म०॥ कीजें नित्य नित्य शुन काम रे ॥ सु० ॥ २ ॥ आगम नोआगम थकी रे ॥ म० ॥ एतो द्रव्यमां होय विचार रे ॥सु०॥ नावमांहे दोय ए वली रे॥ म० ॥ तेह नोआगम अधिकार रे ॥सु०॥ ॥ ३ ॥ नंदी दाखी सूत्रमां रे ॥ म०॥ सही नाव मंगल होये तेह रे ॥ सु० ॥ पंच नाण निर्विघ्नता रें॥ म० ॥ एतो तेहनुं कारण तेह रे ॥ सु०॥ ४ ॥ अंग कह्यां ए नावनां रे ॥ म० ॥ एतो सद्दहियें शुनचित्त रे ॥ सु० ॥ द्रव्य मंगल मेली करो रें ॥ म०॥ एतो गहूंअली जिनमत रीत रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ टाले जन्म मरण थकी रे ॥ म० ॥ कह्यो मंगल शब्द निरुत्त रे ॥ सु० ॥ अध्यवसाय ए आदरी रे ॥ म० ॥ नवि कीजें जन्म पवित्त रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ योग जेह जिनशासनें रे ॥ म० ॥ सवि अध्यातम संयुत्त रे ॥ सु० ॥ शिवफल दायक ते सही रे ॥ म० ॥ कहे राम सदागमरीत रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली पांशठमी ॥

॥ धवलशेठ लइ नेटणुं ॥ ए देशी ॥

॥ आगम अमृत पीजीयें, बहुश्रुतथी गुरु पासें रे ॥ श्रोता गुण अंगें करी, विनय करी उल्लासें रे ॥आ०॥ ॥ १ ॥ शुद्ध नायक समता धरा, पंचम कालें थोडा रे ॥ दीसे बहु आमंबरी, जेहवा उद्धत घोडा रे ॥ आ० ॥ २ ॥ वस्तुधर्मनी देशना, जे दीये हेत राखी रे ॥ कीजें तेहनी सेवना, उपकारी गुण दाखी रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ आगमतत्व प्रकाशमां, जे नविय ण चित्त फूले रे, अनुनव रस आस्वादथी, धुणीयें जेह रसीले रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ नय निक्षेप प्रमाण थी, साधुनो बंध सुरीतें रे ॥ तत्वातत्व विशेषणा, ल हीयें परम प्रतीतें रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ तत्वारथ श्रद्धा न जे, समकित कहे जिनराया रे, नापण रमण पणें लहे, नेद रहित मति पाया रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ स्व स्तिक पूजन नावना, करता नक्ति रसाला रे, पुण्य महो दय पामीयें, केवल ऋद्धि रसाला रे ॥आ०॥ ७॥इति ॥

॥ अथ गहूंली ठाशठमी ॥

॥ प्रनुजी वीरजिणंदने वंदीयें ॥ ए देशी ॥

॥ सजनी शासन नायक दील धरी, गाशुं तपगब

राय हो ॥ अलबेली हेली ॥ सजनी जाणीयें सोहम गणधरु, पटधर जगत गवाय हो ॥अलबेली हेली॥ सजनी वीर पटोधर वंदीयें ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ स जनी वसुधापीठने फरसता, विचरता गणधार हो ॥ अ० ॥ स० ॥ छत्रीश गुणशुं बिराजता, छे नवि जनना आधार हो ॥अ०॥ स० ॥ वी० ॥ २ ॥ स०॥ तखतें शोहे गुरुराज जी, उदयो जिम जग नाण हो ॥ अ० ॥ स० ॥ निरखतां गुरुराजने, बूजे जाण अजाण हो ॥ अ० ॥ स० ॥ वी० ॥ ३ ॥ स० ॥ मु खडुं शोहे रे पूरण शशी, अणीयालां गुरुनेण हो ॥ अ० ॥स०॥ जलधरनी परें गाजता, करता नवि जन सेण हो ॥ अ० ॥ स० ॥ वी० ॥ ४ ॥ स० ॥ अंग उपांगनी देशना, वरसता अमृतधार हो ॥अ०॥ स०॥ श्रोता सर्वेना दील ठरे, संयमशुं धरे प्यार हो ॥ अ० ॥ स० ॥ वी० ॥ ५ ॥ स० ॥ शुन शणगार सजी करी, मोतीयडें नरी थाल हो ॥ अ० ॥ स०॥ श्रद्धा पीठने उपरें, पूरे गहूंली विशाल हो ॥ अ०॥ स० ॥ वी० ॥ ६ ॥ स० ॥ सौनाग्य उदयसूरि पा टना, धारक गुरुगुणराज हो ॥ अ० ॥ स० ॥ श्री

विजयलक्ष्मी सूरिंद जी, दीपविजय कविराज हो ॥
॥ अ० ॥ स० ॥ वी० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली सडशठमी ॥

॥ रुडीने रढीआली रे वाह्ाला तारी वांशली रे
॥ ए देशी ॥

॥ सुकृत तरुनी वेल वधारवा रे, सींचती उपशम उदकनी धार, ·गुरुगुण हृदय धरंती प्यार, मानुं रं नानो अवतार ॥ सु० १ ॥ पुण्य पनोती रे साथें साहेलीयो रें, मली मली शोल सजी शणगार, कर धरी रजत रकेबी सार, कुंकम घोली करी मनोहार ॥ सु० ॥२॥ अक्षत सारा रे उज्ज्वलता नथा रे, पूरती स्वस्तिक मंगल सार, चूरती चहुं गति क्रोध ज चार, ठवती श्रीफल हर्ष अपार ॥ सु० ॥ ३ ॥ अनुनव रंगें रे मोती वधावती रे, ललित परिणामें नमती पाय, गुरुमुख देखी हर्ष न माय, सन्मुख बेसती बेसण गाय ॥ सु० ॥ ४ ॥ नोजन पामे रे अमृत नूखमां रे, नागर ग्रीषम पाम्यो गंग, जिन वाणी सुणवानो रंग, अर्थ मनोहर नय गम नंग ॥ सु० ॥ ५ ॥ श्रीजिनवीरनुं शासन पामीने रे, धरति

हैयडे समकितवास, अनुक्रमें केवलज्ञान प्रकाश, मलती मुक्ति सहेली पास ॥ सु० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली अडशठमी ॥

॥ उपरली गहूंलीनी देशी ॥

॥ गिरिवैन्नारें रे वीर समोसर्या रे, चौद सहस मुनिवर संघाय, त्रिगडे बेठा त्रिभुवनराय ॥ १ ॥ रूडी ने रढीयाली रे जिनजीनी देशना रे ॥ टेक ॥ वरसे जिम पुष्कर जलधार, सांनलवा बेठी परखदा बार ॥ रूडी० ॥ २ ॥ निजनिज नाषायें समजे सहु रे ॥ जिम समजावी नीलें नार, योजन जिनवाणी उदार ॥ रूडी० ॥ ३ ॥ नय गम नंग प्रमाण निक्षेपथी रे ॥ जीवादिक नवतत्व विचार, उत्पाद व्यय ध्रुवथी धार ॥ रूडी० ॥ ४ ॥ दान शीयल तप नाव नेदें करी रे ॥ चउमुखथी चौ जिनवर वाण, निसुणिपामे पद निरवाण ॥ रूडी० ॥ ५ ॥ पटराणी श्रेणिकनी चेलणा रे ॥ आदरथी उठे धरीने प्यार, लेइ सहस सहीयो संगें सार ॥ रूडी० ॥ ६ ॥ सोवन जवथी स्वस्तिक पूरती रे ॥ वांदी वधावे थइ उजमाल, लूंबणडां लटके करे रसाल ॥ रूडी० ॥ ७ ॥ चतुरा उसरती पाछे पगें रे, जोती जिनमुखचंद अमंद, पामे

मनमां परमानंद ॥ रूडी० ॥ ८ ॥ जिनवचनामृत सांनले रंगथी रे ॥ नक्ति पूर्वक चित्त मजार, धरती अरथ सरूप विचार ॥ रूडी० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली उंगणोतेरमी ॥

॥ वीरजी आया रे गुणशील वनके मेदान, विप्र पडिबोह्यो रे केवलज्ञान प्रधान, अरिहा तीन जगतके नाण, समवसरण तखतें महेराण, जलके नामंमल गुणखाण, श्रेणिक हरख्यो रे आयो वंदन काज, चतुरंगी फोजां रे वांकडीया करी साज, साथें तरुणी रे पंचसयाको समाज ॥ वी० ॥ १ ॥ धर्म प्रकाशे बारे परखदा मांहे, मजकुर पूछे गोयम उछाहे, चउ अनुयोगें उत्तर सोहाय, श्रेणिक पूछे रे बेशी यथोचित ठाय, वाणी निसुणी रे मनमां हरखित थाय, संशय टाले रे आतमअनंत सुख थाय ॥ वी० ॥ २ ॥ बत्रीश बद्ध नाटक रची सार, करी नर नारी रूप रसाल, खलके कंकणना खलकार, प्रजुने वंदे रे दर्डुरांक सुर सार, ज्ञातासूत्रें रे वरणवीयो अधिकार, समकित संगें रे मटे मिथ्यात्व निर्धार ॥ वी० ॥ ३ ॥ चेलणा नारी मन हरखाणी, अंगें अनेक शणगार सोहाणी, बहुत साहेलीकी ठ

कुराणी, कुंकुम घोली रे साथीयो रंग रसाल, रयणें पूरी रे वधावे नरी थाल, नेह धरीने रे गुण गाये उजमाल ॥ वी० ॥ ४ ॥ त्रीशला नंदन सूरिजन वंदो, अवसर लइ आ फंद निकंदो, पामे नित्य नवन वा आनंदो, बहु चिरंजीवो रे तीरथपति सुलतान, दील नरी ध्यायो रे प्रनुगुणनुं घणुं मान, संपदा पामो रे लक्ष्मी सूरि गुण गाण ॥ वी०॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली सीत्तेरमी ॥

॥ प्रनुजी आव्या रे शहेर नरुअचके मेदान, अश्व प्रतिबोध्यो रे जाणे पूरवको सयाण, जलके उगमते परनात, नृपति हरख्यो रे साख्यो अर्थीको काज, स्वामीजी वांद्या रे बहु फोजां के साज, नक्ति रागें रे जीव पामे शिवराज ॥ प्रनु० ॥ १ ॥ उपदेश आपे त्रिनुवननाण, सुणे परपदा बारे वाण, मन मां जाणे कोइ सुजाण, नृप पूछे रे मुनि सुव्रत जिनराय, प्रतिबोध्यो रे कोइ जीव एणे गाय, देवें दीठो रे एक तुरंग धर्म ध्याय ॥ प्र० ॥ २ ॥ अणशण लेइ प्रनुके पाय, पहोतो सुरलोकें दील लाय, तीरथ थापे मन उमाय, संघ सेवे रे दूरदेशथी आय, नावना नावे रे तजी विषय कषाय, दुःसम कालें रे

ए महिमा गवराय ॥ प्र० ॥ ३ ॥ नाटिक नाचे नव नव रंग, करे अशुन करमनो नंग, साचो समकित गुणनो रंग, सूत्रें दीसे रे सूरियान सुरनो अधिकार, पूजा कीधी रे सतर नेद सुखकार, शंका टाले रे न विक जीव निरधार ॥ प्र० ॥ ४ ॥ पद्मावतीनो नंदन महानाग, दाखे शिवगति पूरीनो माग, जगमांहे क हेवाये वीतराग, आठे रायो रे जिनशासन सुलतान, माग्या दीजे रे मनवंछित प्रनुदान, वांछा कीजें रे वि बुध विमल शुन ध्यान ॥ प्र० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली एकोतेरमी ॥

॥ वीरजी आया रे गुणशीलवनके मेदान ॥ ए देशी ॥

॥ नवियण वंदो रे चोवीशमो जिनराय, सुगति आपे रे टाले कुगति कुगाय ॥ ए टेक ॥ पावन देशां तर करता स्वाम, विचरंता वली गामो गाम, पातक जाये लीधे नाम, जग पडिबोहे रे ए त्रिहुं लोक नो नाथ, मुनि परिवार रें चउद सहसछे संघात, सायर छोडी रे कोण सेवे छीलर पाथ ॥ नवियण० ॥ १ ॥ राजगृही नयरी उद्यान, गुणशीला चैत्यके मेदान, आया पुंमरीक परधान, सुर तिहां रचे रे स मवसरण तेणि वार, इंद इंद्राणी रें वंदे प्रनुने

अपार, आनंद पावे रे देखी प्रभुनो देदार ॥ भवि०
॥ २ ॥ वननो पालक जेहनुं नाम, दीधी वधामणि
जइने ताम, श्रेणिक हरख्यो सुणीने नाम, चलचित्त
थयो रे मगधपति माहाराज, परिवार संयुक्त रे
साथें रमणी समाज, तिहांथी चाल्यो रे प्रभुने वं
दन काज ॥ भवि० ॥ ३ ॥ चतुरंगी सेन्या सजीय उ
दार, गजरथ पायक अमुल तुखार, बहु नव उतर
वाने पार, श्रेणिक हरखे रे वंदे प्रभुजीना पाय,
प्रभुपद वंदी रे बेठो यथोचित ठाय, तव उपदेशे रे
वीर जिनेसर राय ॥ भवि० ॥४॥ चेलणा राणी अति
सोभागी, जिन वंदिने भक्ति जागी, गहूंली करवा रढ
बहु लागी, कनकचोखा लइ रे हाथें अतिही रसाल,
गहूंली पूरे रे जगपति आगें विशाल, मोतीडे वधावे
रे टाले पाप प्रजाल ॥ भवि० ॥ ५ ॥ देशना दीधी
श्रीभगवंत, संशय टाल्या श्री अरिहंत, श्रेणिक वंदी
पूर पहोचंत, एम बहुभावें रे नित्य नित्य मंगल गाय,
सुकृत कमावे रे दीपविजय कविराय ॥भवि०॥६॥इति॥

॥ अथ गहूंली बहोत्तिरमी ॥

॥ जिनराज पूजी लाहो लीजीयें ॥ ए देशी ॥

॥केशरचंदन भरीय कुंकावटी, सोवनथाल ले कामिनी॥

गहूंअली करीने मंगल गाई, बलहारी गुरुनामनी ॥ गहूंली करे रे गजगामिनी ॥ १ ॥ शोल शणगार सजीने सुंदर, जाणे जबूके दामिनी ॥ साधु साधवी श्रावक श्राविका, नरी रे सनामां नामिनी ॥ गहूंली० ॥ २ ॥ नवखंमी नवरंगी निरुपम, विधविधरंग ब नावनी ॥ मोतीयें साथीया पूरे मनोहर, नक्ति करे शुननावनी ॥ गहूंली० ॥ ३ ॥ प्रवचन रचना जग जन पावन, देशना श्रीगुरुरायनी ॥ धवल मंगल गां धर्वगुणगाने, सांनले सहु सुखदायनी ॥ गहूंली० ॥ ४ ॥ उदयरतन वाचक उपदेशें, रूडी सना रसरा गनी ॥ प्रीछे ते परमारथ पामे, वाणी श्रीवीतरागनी ॥ गहूंली० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली तहोंतेरमी ॥

॥ सज्ञनी मोरी गुणशीलवनके मेदान रे, सज्ञनी मोरी आव्या श्रीवर्द्धमान रे ॥ स०॥ ज्ञानादिक गुण दरीया रे ॥स०॥ पतित पावन पीयरीया रे ॥ स०॥१॥ ॥ ए आंकणी ॥ स० ॥ श्रेणिक हरख्यों आवे रे ॥ स० ॥ समकित क्षायिक नावें रे ॥ स० ॥ कंचन वरणी नार रे ॥ स० ॥ पंचसया परिवार रे ॥ स० ॥ २ ॥ स० ॥ धर्मदेशना जिन नांखे रे ॥ स० ॥ न

वपद महिमा दाखे रे ॥ स० ॥ नवपद आतम जा
णो रे ॥ स० ॥ आतम नव पद वखाणो रे ॥ स०
॥ ३ ॥ स० ॥ नवतत्व भूषण सार रे ॥ स० ॥ रत्न
रकेबी उदार रे ॥ स० ॥ श्रवण मनन बहु मूल रे
॥ स० ॥ पहेरी वस्त्र अनुकूल रे ॥ स० ॥ ४ ॥ स० ॥
क्रिया कुंकावटी हाथ रे ॥ स० ॥ मन निर्मलने
पाथरें ॥ स० ॥ जिनगुण कंकु घोली रे ॥ स० ॥
मली सहीयरनी टोली रे ॥ स० ॥ ५ ॥ स० ॥
आणा तिलक धरावे रे ॥ स० ॥ चेलणा गहूंली
बनावे रे ॥ स० ॥ एणी परें गहूंली कीजें रे ॥ स०
॥ नरभव लाहो लीजें रे ॥ स० ॥ ६ ॥ स० ॥
विषय ते विषसम जाणो रे, ॥ स० ॥ बोले त्रण
भुवननो राणो रे ॥ स० ॥ शिवपुर सासरे चालो रे
॥ स० ॥ भुभवमांहे माहालो रे ॥ स० ॥ ७ ॥
॥ स० ॥ मणिउद्योत गुरु मलीया रे ॥ स० ॥ आज
मनोरथ फलीया रे ॥ स० ॥ शुं कहीयें वारो वार
रें ॥ स० ॥ ते कां करो परिहार रे ॥ स० ॥ ८ ॥ इति ॥
॥ अथ सिद्धचक्रनी गहूंली चम्मोतेरमी ॥ हांरे महारे
गामधर्मना साडा पच्चवीश देश जो ॥ ए देशी ॥
॥ हांरे महारे जिनआणा लेइ इंद्र भूति गणधार

जो, विचरे रे चउविह अप्रतिबंध विहारथी रे जो ॥ हांरे मह्हारे संयम धारी मुनिगणना शिरदार जो, चउग्यानी शुभध्यानी धर्मना सारथी रे जो० ॥ ॥ १ ॥ हांरे मह्हारे राजगृही उद्यानें आव्या नाथ जो, हरख्यो रे मगधाधिप त्रिकरण भावशुं रे जो०॥ हांरे मारे आवे नृप चेलणादिक राणी साथ जो, अंग नमावी वंदे गणधर पावने रे जो० ॥ २ ॥ हांरे मह्हारे भवनिस्तरणी जिनवाणी उपदेश जो, भांखे रे प्रभु गोयमस्वामी रंगथी रे जो० ॥ हांरे मारे सेवो भविजन सिद्धचक्र शुभ लेश जो, बहुसुख पाम्या मयणा तेहना संगथी रे जो० ॥ ३ ॥ हांरे मारे अवसर पामी मगधाधिपनी नार जो, उल्लसी रे मन हर्षी स्वस्तिक पूरवारे जो ॥ हांरे मारे सहियर मंगल गाती गीत अपार जो, मानुं भव भव संकटने ए चूरवारे जो० ॥ ४ ॥ हांरे मारे इणी विध स्वस्तिक पूरे श्रद्धा पीठ जो, पामे रे ते मंगल माला माननी रे जो० ॥ हांरे मारे शिवपद कारण भावे जोग उक्किठ जो, दीप कहे एम ए छे वात निदाननी रे जो० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली पच्चोत्तेरमी ॥

॥ धोलनी देशीमा ॥

॥ राजगृही उद्यानमां, श्रीसोहम गणधार ॥ समो
सरिया परिवारशुं, मुनिजनना आधार ॥ १ ॥ चा
लो सखि गुरु वांदवा ॥ ए आंकणी ॥ पंच महाव्रत
पालता, दशविध यतिधर्म सार ॥ सत्तर भेदें संयम
वस्या, वैय्यावच्च दश धार ॥ चा०॥ २ ॥ गुप्ति धरे न
ववाडशुं, ज्ञानादिक तप बार ॥ निग्रह क्रोध तणो
करे, चरण सित्तरि शणगार ॥ चा० ॥ ३ ॥ पिंम
विशुद्धि समिति धरे, भावना पडिमा बार ॥ इंद्रिय
रोधक पडिलेहणा, गुप्ति अभिग्रहधार ॥ चा० ॥४॥
करण सीत्तरी ए पालवे, टाले सकल कलेश ॥ कम
लासने बेशी कहे, भविजनने उपदेश ॥ चा० ॥५॥
श्रेणिक नृपति मानशुं, प्रणमी पट्टोधर राय ॥ उ
चित अवग्रह ते साचवे, धर्म सुणे सुखदाय ॥चा०
॥ ६ ॥ गुणवंती करे गहूंअली, चतुरा चेलणा
नार ॥ माणिक मोती वधावती, भरती सुकृत भंमार
॥ चा० ॥ ७ ॥ कोकिल कंठें कामिनी, सोहासणी
निर्मली वृंद ॥ गुरुगुण अमृत गावती, पामति पर
मानंद ॥ चा० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ जंबुगुरुनी गहूंली ढहेंलेरमां ॥

॥ अजब कियो रे मुनिराय, लघुवयें जोग लियो रे ॥ शोल वरस संयम लियो रे, तरुणी आठ विछोड ॥ मुनिवर योग लीयो रे ॥ कोडि नवाणुं सोवन तणी रे, छोडी मनने कोड ॥ मु० ॥१॥ तप द्वादश भेदें करे रे, भावता भावन बार ॥ मु०॥ पडिमा बारना उद्यमी रे, गुण छत्रीशना आधार ॥ मु० ॥२॥ पडिरूवादिक चउदे भला रे, निमित्त अठंग सुठाय ॥ मु० ॥ निपुण ते गुणठाणंग तणा रे, गुणसागर गुरुराय ॥ मु० ॥ ३ ॥ मुनि मंभलशुं परिवर्या रे, जंबू जुग प्रधान ॥ मु० ॥ विचरंता पाउधारिया रे, राजगृही उद्यान ॥ मु० ॥ ४ ॥ कोणिक नरपति वांदवा रे, साथें लइ परिवार ॥ मु० ॥ पद्मावती करे गहूंअली रे, द्रव्य प्रधान विचार ॥ मु० ॥ ५ ॥ चउ गति चूरण साथियो रे, श्रद्धा पीठ बनाय ॥ मु० ॥ वसन आभूषण व्रत तणां रे, शिवफल श्रीफल ठाय ॥ मु० ॥ ६ ॥ उत्तम गुरु गुणभक्तिथी रे, वधावे गुरुराज ॥ मु० ॥ गुरुमुख पद्मनी देशना रे, सुणि पामे शिवराज ॥ मु० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली सीत्तोत्तेरमी ॥

॥ वाले महारे मारगडो रुंध्यो रे रतिणा हाथ, तेनी मुने जापटुं लागी रे ॥ ए देशी ॥

॥ जग उपकारी रे वीरजिणंद, मगधें विचरता आवे रे ॥ साथें सुर नरना लइ वृंद, गिरिवैजारे सुहावे रे ॥ १ ॥ गोयम सोहम जास वजीर, मुनिगण सुपद सेवतां रे, अनिग्रह धारी रे केइ मुनि धीर, रविशुं दृष्टि लगावता रे ॥ २ ॥ आवें जुवनाधिपना वीश, बत्रीश व्यंतरना राजा रे, मलिया वैमानिकना इश, दश शशी रवि तेजें ताजा रे ॥ ३ ॥ इणि परें चारे जातना देव, कोडाकोडि मली घणा रे ॥ करता समवसरण ततखेव, निज निज कृत्यनी नहिं मणा रे ॥ ४ ॥ त्रिगडे बेशी त्रिजुवन तात, धर्म कहे करुणा आणी रे॥ जेहवी सत्ता गतनिज जात, आत्म तत्व लहे प्राणी रे ॥ ५ ॥ नरपति श्रेणिकनी घरनार, चंडमुखी चेलणा राणी रे ॥ करती स्वस्तिक मंगल सार, निज गुरु आगल गुण खाणी रे ॥ ६ ॥ प्रजुने माणिक मोती वधावे, विच विच पद प्रणमे तिहां रे ॥ अंतर आतमजाव जगावे, पुण्य जंमार जरे जिहां रे ॥ ७ ॥ सोहल गावे रे मधुरां गीत, गहूंली

नाव उमंगशुं रे ॥ साची वाणी करी ए रीत, अमृत वाणी रंगशुं रे ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली अष्टोत्तरमी ॥

॥ आवी हुं देवा उलंजडो सासुजी ॥ ए देशी ॥

॥ सद्गुरु पद पंकज नमी, सामणीजी ॥ गाशुं गुरु गुण माल रे ॥ सद्गुरु विचरंता वंदीयें ॥ सामणी जी ॥ १ ॥ द्वादश अंग सिद्धांतना ॥ सा० ॥ पारग धारक एह रे ॥ स० ॥ गुरु गुण छत्रीशी अलंकस्या ॥ सा० ॥ चरण करण नंमार रे ॥ स० ॥ सा० ॥ ॥ २ ॥ नव्य जीवने प्रतिबोधता ॥ सा० ॥ रत्न त्रयादि गुणधाम रे ॥ स० ॥ गहूंअली करो गुरु आगलें ॥ सा० ॥ हर्ष धरी मन चंग रे ॥ स० ॥ सा० ॥ ॥ ३ ॥ समकेत कुंकुम तिण समे ॥ सा० ॥ समता निर्मल नीर रे ॥ स० ॥ थाल नस्यो शुन नावनो ॥ सा० ॥ चोखा अखंम परिणाम रे ॥ स० ॥ सा० ॥ ४ ॥ मंगल साथीयो तिहां बन्यो ॥ सा० ॥ रत्न त्रयादि गुण पीठ रे ॥ स० ॥ जिनशासन सिंहासणे ॥ सा० ॥ बेशी करे उपदेश रे ॥ स० ॥ सा० ॥ ५ ॥ पोहवी मंमल विहरता ॥ सा० ॥ तारण तरण ज हाज रे ॥ स० ॥ श्रीकल्याण सागर सूरि जे नमे

॥ सा० ॥ देखी सकल गुणखाण रे ॥ स० ॥ सा० ॥ ६ ॥ विशाल सागर कहे वंदीयें ॥ सा० ॥ एह वा मुनि नित्यमेव रे ॥ स० ॥ आतम मंगल अनु भवे ॥ सा० ॥ तेहिज नित्य प्रत्येंमेव रे ॥ स० ॥ सा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली उंगण्याएंशीमी ॥

॥ हस्तियाम वन खंममकार, राजगृही नालिंदा बार, आव्या इंद्रभूति गणधारतो ॥ १ ॥ गौतम गुरुवंद वा जइयें ॥ वंदना करीयें ने शिवसुख वरीयें तो ॥ गौतम गुरु० ॥ ए आंकणी ॥ उदक पेढाल मुनीसर दोय, पार्श्वनाथ संतानीया सोय ॥ पूछे प्रश्न ए णी परें जोय तो ॥ गौ० ॥ २ ॥ श्रावकने अणुव्रत उच्चरावे, मुनिवर देशथी विरति करावे, थावर अनु मति मुनिने आवे तो ॥ गौ० ॥ ३ ॥ कहे गौतम सुणो मुनिवर वात, शेठपुत्र पटनो दृष्टांत, नृप अ न्यायथी मारण जात तो ॥ गौ० ॥ ४ ॥ तास पिता करे वीनति राय, मुज कुलनो उछेद ते थाय, पंच पुत्रने मूको ताय तो ॥ गौ० ॥ ५ ॥ इम विनति करता तस आपे, पुत्र एक तस हर्ष ते व्यापे ॥ मार णनी नहिं अनुमति आपे तो ॥ गौ० ॥ ६ ॥ राय

प्रमुख सुणी वंदन आवे, अंतरंग राणी गहूंली लावे॥ उत्तम गुरुपद पद्म वधावे तो ॥ गौ० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली एंशीमी ॥ झुमकडानी देशी ॥

॥ ज्ञानदीवाकर शोजता, श्रुतसागर मुनिराज ॥ सुहंकर साधु जी ॥ मूकी काम विडंबना, कुखी संबल साज ॥ सुहंकर साधु जी ॥ १ ॥ नहीं ममता समता धरा, शांत सुदंत महंत ॥सु०॥ षटपद वृत्ति आहारता, देश काल मतिमंत ॥सु०॥२॥ पंच महाव्रत जावना, जावंता पचवीश ॥ सु० ॥ पणवीश चित्त न धारता, अशुन जावन निश दीश ॥सु०॥३॥ शिवनारी रंजन जणी, पहेस्यो साधुनो वेश ॥ सु० ॥ ते आगल मृग लोचना, करती विनय विशेष ॥ सु० ॥ ॥४॥ क्रोधादिक चउ जींतवा, वरवा चार अनंत ॥ सु० ॥ स्वस्तिक पूरी वधावती, सज्जुरु चरण नमंत ॥ सु० ॥ ५ ॥ गावे सोहागण गहूंअली, धरती हर्ष अमंद ॥ सु० ॥ श्रीशुनवीर वचन सुणी, पामे पद महानंद ॥ सु० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली एक्याशीमी ॥

॥ अने हारें सरसतीने चरणे नमी रे, वांडुं गुरुना पाय ॥ अलिय विघन सवी टले रे, मागुं एक पसा

य ॥ १ ॥ चालो सखि गुरु वांदवा रे ॥ अने हांरे राजगृह्ही रलीयामणी रे, तिहां श्रेणिक राजा अमंद ॥ समकित शुद्ध ते सद्दहे रे, अविदारे सविफंद ॥ चा० ॥ २ ॥ अ० ॥ वीर प्रज्जु तिहां आवीया रे, तेह नयरी उद्यान ॥ वनपालकें दीधी वधामणी रे, हरख्यो दइ तस दान ॥ चा० ॥ ३ ॥ अ० ॥ लाख दान देइ करी रे, राजा श्रेणिक आय ॥ चार निकायना देवता रे, वंदे प्रज्जुना पाय ॥ चा० ॥ ४ ॥ अ० ॥ त्रण प्रदक्षिणा दइ करी रे, बेठा इंद नरींद ॥ वीर वाणी तिहां सांजली रे, मनमां हुउ आनंद ॥ चा० ॥ ॥ ५ ॥ अ० ॥ जविजनने पडिबोहता रे, जस आतम उद्धार ॥ पाप चक्र सवि चूरता रे, पामे सुरगति सार ॥ चा० ॥ ६ ॥ अ० ॥ चेलणा करे तिहां गहूंअलीरे, सोवन जरी ने थाल ॥ प्रज्जुने मोतीडे वधावती रे, मुख जोति सुविशाल ॥ चा० ॥ ७ ॥ अ० ॥ धर्मलाज तिहां उच्चरे रे, वरसता अमृत वाण ॥ जे जवि जावें ते सांजले रे, तस घर कोड कल्याण ॥ चा० ॥ ८ ॥ अ० ॥ समवसरण बिराजता रे, नवकमलें ठवता पाय ॥ इम अनेक गुणें शोजता रे, चंद्रमुनि गुण गाय ॥ चा० ॥ ए ॥ इति॥

॥ अथ गहूंली व्याशीमी ॥

॥ सही चालो श्री महावीरने, नमवा जइयें रे ॥ गणी गौतम स्वामी वजीर, बेनी तिहां जइयें ॥सही०॥१॥ त्रिगडानी रचना करी सारी, त्रिदशपति अतिभारी रे ॥ मध्यपीठ उपर अती तकारी, बेठा वीरजी तारी ॥ बे० ॥ सही०॥२ ॥ चौद सहस मुनिशुं परिवरिया, गुण शीलावन उतरीया रे ॥ अनंत अनंत गुणें करी भरिया, समता रसना दरिया ॥ बे० ॥ सही० ॥ ॥ ३ ॥ श्रेणिक स्वामी समागत जाणी, साथें चेल णा राणी रे ॥ जेती समकित लाभ कमाणी, वंद्या उलट आणी ॥ बे० ॥ सही० ॥ ४ ॥ बाल कुमरी शुभराज समाजें, जलधरनी परें गाजे रे ॥ आतप त्र प्रभु शिरपर राजे, भामंमल छवि छाजे ॥बेनी०॥ सही० ॥५॥ एम निसुणी चाली ते बाला, छोडी सहु जंजाला रे ॥ गति चालती ज्ञिम गजबाला, शुणवा जिन गुण माला ॥ बेनी० ॥ सही० ॥ ६ ॥ तिहां आवी प्रभुमुद्रा परखी, बेठी अवसर निरखी रे ॥ गहूंली पूरे अति मनहरखी, सहीयर सरखा सरखी ॥ बे० ॥ सही० ॥ ७ ॥ चरण ठवी मुगताशुं व धावे, हरख अति दील लावे रे ॥ बहु बाला मली

गहूंली गावे, सरवे कंठ मिलावे ॥ बे० ॥ सहि० ॥ ॥ ८ ॥ अंग उपांग सुणी जिन पासें, धारी अति उल्लासें रे ॥ दीप कहे प्रभुध्यान विलासें, पहोती निज आवासें ॥ बे० ॥ सही० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ अध्यात्म गहूंली प्रारंभः ॥

॥ भवि तुमे वंदो रे शंखेश्वर जिन राया ॥ ए देशी ॥ ॥ अमृत सरखी रे सुणीयें वीरनी वाणी, अति मन हरखी रे प्रणमो केवल नाणी ॥ ए आंकणी छे ॥ योजनगामिनी प्रभुनी वाणी, पांत्रीश गुणथी भांखे ॥ पूरव पुण्य अपूर्व जेहनां, प्रभुवाणी रस चाखे ॥ अमृत सरखी० ॥ १ ॥ जेहमां द्रव्य पदारथ रचना, धर्माधर्म आकाश ॥ पुद्गल काल अने वली चेतन, नित्यानित्य प्रकाश ॥ अमृत० ॥ २ ॥ द्रव्य गुणने पर्याय प्रकाशे, अस्ति नास्ति विचार ॥ नय सातेथी मालकोशमां, वरषे छे जलधार ॥ अमृत० ॥ ३ ॥ गुणसामान्य विशेष विशेषें, होय मली गुण एकवीश ॥ तस चउ भंगी चार निक्षेपें, भांखे श्रीजगदीश ॥ अमृत० ॥ ४ ॥ भील दृष्टांतें खेचर भूचर, सुरपति नरपति नारी ॥ निज निज भाषायें सहु समजे, वाणीनी बलिहारी ॥ अमृत० ॥ ५ ॥ नंदी-व

ईनती पटराणी, चउ मंगल प्रभु आगें ॥ पूरे स्व स्तिक मुक्ताफलनो, चडवा शिवगति पागें ॥ अमृ त० ॥ ६ ॥ चउ अनुयोगी आतमदर्शी, प्रभु वाणी रस पीजें ॥ दीपविजय कवि प्रभुता प्रगटे, प्रभुने प्रभुता दीजें ॥ अमृत० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ जंबुकुमरनी गहूंली ॥ चोराशीमी ॥

॥ घरुडामें सहीयो फूले हाथणी॥ ए देशी ॥

॥ राजगृही नयरी समोसस्या, पांचशें मुनि परिवार ॥ मोरी सहियां हो ॥ केवलज्ञान दिवाकरु, श्री श्री सोहम गणधार ॥ मोरी० ॥ चालो पट्टोधर गुरु वां दवा ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जंबुकुमर आवे हेजशुं, पूज्यजीने वंदन काज ॥ मोरी० ॥ ब्रह्मचारी शिर सेहरो, लेवा मुक्तिगढ राज ॥ मोरी० ॥ चालो० ॥ ॥ २ ॥ गुरुमुखथी रे सुणी देशना, संयमें उल्लसित भाव ॥ मो० ॥ क्षायक समकेतनो धणी, तरवाने भवजल दाव ॥ मो० ॥ चा० ॥ ३ ॥ अणुव्रत लइ गुरु आगलें, संयमनो रे उजमाल ॥ मो० ॥ परणी ने घरणी आठने, बुजवी वयण रसाल ॥ मो० ॥ चा० ॥ ४ ॥ संयम लीये मुनि पांचशें, सत्तावीश परिवार ॥ मो० ॥ चरण करण गुण आगला, जेह

ना छे धन्य अवतार ॥ मो० ॥ चा० ॥ ५ ॥ सुध र्मा स्वामीना पाटवी, केवल लही गछराय ॥मो०॥ गुणशीला चैत्य पधारिया, उदायिन हरख न माय॥ मो० ॥ चा० ॥ ६ ॥ पटराणी राणी पूरे गहूंअली, करवा सफल अवतार ॥ मो० ॥ दीपविजय कविरा जने, प्रणमे छे बहु नर नार ॥मो०॥चा०॥७॥ इति॥

॥ अथ फूलडां पञ्चाशीमा ॥

॥ सखी रे में कौतुक दीठुं, साधु सरोवर झीलता रे ॥ सखी नाकें रूप निहालतां रे ॥ सखी लोचनथी रस जाणतां रे ॥ सखी मुनिवर नारीशुं रमे रे ॥१॥ सखी नारी हींचोले कंतने रे ॥ सखी कंत घणा एक नारीने रें ॥ सखी सदा यौवन नारी ते रहे रे, सखी वेश्या विलुधा केवली रे ॥ २ ॥ सखी आंख विना देखे घणुं रे ॥ सखी रथ बेठा मुनिवर चले रे ॥ सखी हाथ जलें हाथी मूबीयो रे ॥ सखी कुतरीयें केशरी हण्यो रे ॥ ३ ॥ सखी तरशो पाणी नवि पीये रे ॥ सखी पग विहूणो मारग चले रे ॥ सखी नारी नपुंसक भोगवे रे ॥ सखी अंबाडी खर उपरें रे ॥४॥ सखी नर एक नित्य उभो रहे रे ॥ सखी बेठो नथी नवी बेशशे रे ॥ सखी अर्द्ध गगनविचें ते रहे रे ॥

सखी मांकडे महाजन घेरीयो रे ॥ ५ ॥ सखी उंदरे मेरु हलावीउं रे ॥ सखी सूरिय अजवालुं नवि करे रे ॥ सखी लघु बंधव बत्रीश गया रे ॥ सखी शोकें घडी नहीं बेनडी रे ॥ ६ ॥ सखी शामलो हंस में दे खीयो रे ॥ सखी काट वल्यो कंचनगिरि रे ॥ सखी अंजनगिरि उज्ज्वल थया रे ॥ सखी तोहे प्रभु न सं जारीया रे ॥ ७ ॥ सखी वयर सामी सुता पारणे रे ॥ सखी श्राविका गावे हालरां रे ॥ सखी महोटा थइ अर्थ ते कहेजो रे ॥ सखी श्रीशुभवीरने वा लडा रे ॥ स० ॥ ८ ॥ इति ॥ हरियालीनी गहूंली ॥

॥ अथ चूनडी उपाशीमी ॥

॥ हांजी समकित पालो कपासनो, हांजी पेंजण पाप अढार ॥ हांजी सूत्र भलुं रे सिद्धांतनुं, हांजी टालो आठप्रकार ॥ हांजी शीयल सुरंगी चूनडी॥१॥ हांजी त्रण गुप्ति ताणो ताणो, हांजी नलीय भरी नव वाड ॥ हांजी वाणो वणो रे विवेकनो, हांजी खेमा खुंटीय खाय ॥ हांजी शीयल० ॥ २ ॥ हांजी मूल उत्तर गुण घूघरा, हांजी छेडा वणो ने चार ॥ हांजी चारित्र चंदो विचें धरो, हांजी हंसक मोर च कोर ॥ हांजी शीयल० ॥ ३ ॥ हांजी अजब बिराजे

चूनडी, हांजी कहो सखी केटलुं मूल ॥ हांजी लाखें पण लाने नहीं, हांजी एह नहीं सम तोल ॥ हांजी शीयल० ॥ ४ ॥ हांजी पहेली लेही श्री नेम जी, हांजी बीजी राजुल नेट ॥ हांजी त्रीजी गजसुकुमालजी, हांजी चोथी सुदर्शन शेठ ॥ हांजी शीयल० ॥ ५ ॥ हांजी पंचमी जंबू स्वामीने, हांजी बठी धनो अणगार ॥ हांजी सातमी मेघ मुनीसरू, हांजी आठमी एवंती कुमार ॥ हांजी शीयल० ॥ ६ ॥ हांजी सीता कुंता द्रौपदी, हांजी दमयंती चंदनबाल ॥ हांजी अंजनाने पदमावती, हांजी शीयलवती अतिसार ॥ हांजी शीयल० ॥ ७ ॥ हांजी अजब बिराजे रे चूनडी, हांजी साधुनो शणगार ॥ हांजी मेघ मुनीसर इम नणे, हांजी शीयल पालो नरनार ॥ हांजी शीयल० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली सत्याशीमी ॥

॥ घरे आवोजी आंबो मोरियो ॥ ए देशी ॥

॥ चालो सहियरोजी साधुजी वंदीयें, श्रीवीरतणा पट्टोधार रे ॥ चउनाणी सोहम गणधरु, सूत्र रयण तणा नंमार रे ॥ चालो० ॥ १ ॥ एकविध असंयम टालतां, धरम दोय जती गृही गमता रे ॥ त्रि

विध गारवने परिहरे, चार सुख सय्या मांहे रमता रे ॥
चालो० ॥ २ ॥ प्रमाद तजे नजे व्रतीने, नय टाले
मातने पाले रे ॥ नियाणा न करे साधु जी, दश श्र
मण धरम अजूवाले रे ॥ चा० ॥ ३ ॥ श्रद्धावंती
शुद्ध श्राविका, गुरु आगल नक्ति करंती रे ॥ गुरु आ
गल पूरे गहूंअली, शासन करती बहु उन्नति रे ॥
चा० ॥ ४ ॥ जिनवाणी अनुनवरस नरी, गुरु उत्त
म रत्नना मुखथी रे ॥ सुणतां पामे निज आतमा,
सुख अनुनवमां रहे एथी रे ॥ चा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ तपनी नाष्य अठ्ठाशीमी ॥

॥ साहेबा म्हारा अरज करुं हुं कंत, कहे सुणो का
मिनी जी ॥ साहेबा म्हारा गुरुउपदेशें हुं, सहियां
मांहे उपनी जी ॥ १ ॥ सा० ॥ आज्ञा आपो, मास
खमण तप आदरुं जी ॥सा०॥ अवसर पामी, मान
व नव सफलो करुं जी ॥ २ ॥ गोरी म्हारी हाथ
न चाले, मन नवि चाले माहेरो जी ॥ गोरी म्हा
री ए तप म्होटुं, शरीर खमे नहीं ताहेरुं जी
॥ ३ ॥ सा० ॥ त्योने आदरुं संवत्सरीना खोला
पाथरुं जी ॥ सा० ॥ मान मागुं हुं अंतराय तमे
कां करो जी ॥ ४ ॥ गोरी अमे आज्ञा आपी, पच्चखा

ए जइ उच्चरो जी ॥ ससरा मह्वारा ढोल वजडावो, धर्मथानक धन वावरो जी ॥ ५ ॥ सासु मह्वारी साथें आवो, चोक पूरावो गहूंली साथीयें जी ॥ सहीयर मह्वारी साथें आवो, गुरुजी वधावो गजमोतीयें जी ॥ ६ ॥ गुरुजी मह्वारा पच्चरकाण करावो, मास खमणनुं मन रूली जी ॥ जेठजी मह्वारा वाजां वजडावो, खेला नचावो खांतशुं जी ॥ ७ ॥ वीरा मह्वारा घाट घडावो, पाट धरावो शेरीयें जी ॥ सामणी मह्वारी, सांगी देवरावो वाजित्र नूंगल नेरीयें जी ॥ ८ ॥ सामणी मह्वारी आंगी रचावो, गुरुजी मनावो पाए लागीने जी ॥ पासे रहीने पोथी पूजावो, वास नखावो मांगीने जी ॥ ९ ॥ नवीयां एह्वी नावना नावो, तपें काया निर्मल करो जी ॥ तपीने मह्वारी वंदना होजो, उदयरतन इम उच्चरे जी ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ नव पदनी गहूंली नेव्याशीमी ॥

॥ आतमराम मुनिराजीया, नवजल तारण नाव ॥ मोरी सहीयो रे ॥ पांचे योगने साधवा, लीधो ते मुनिवरनाव ॥ मोरी० ॥ चालोने गीतारथ गुरुने वांदवा ॥ १ ॥ वृत्ति कहे योग पांचमो, साधन करे सुविलास ॥ मोरी० ॥ अनुनव अन्यासी सदा, कर

ता ज्ञान अभ्यास ॥ मो० ॥ चा० ॥ २ ॥ पहेलो
अध्यात्मयोग जे, भावनायोग तेम जाण ॥ मो० ॥
ध्यानयोगें त्रीजे सही, समता योग मन होय ॥
मो० ॥ चा० ॥ ३ ॥ एम अनेक गुणें शोभता, वीर
आणा लेइ मान ॥ मो० ॥ गोयमस्वामी समो सख्या,
राजगृही उद्यान ॥ मो० ॥ चा० ॥ ४ ॥ श्रेणिकराय
आवे वांदवा, सुणी आगमन उदंत ॥ मो० ॥ क्षायि
क समकितनो धणी, वांदे गुरु गुणवंत ॥मो०॥चा०
॥ ५ ॥ इणी अवसर राणी चेलणा, भाव सजी श
णगार ॥ मो० ॥ भद्रापीठ उपर सही, गहूंली करे
मनोहार ॥ मो० ॥ चा० ॥ ६ ॥ तव गोयम दीये
देशना, सेवो भविक सिद्ध चक्र ॥ मो० ॥ आंबिल
ओली आराधियें, जिम न पडो भवचक्र ॥ मो० ॥
॥ चा० ॥ ७ ॥ पांचे धर्मीने चार धर्म छे, धर्मी
सेव्या धर्म होय ॥ मोरी० ॥ मयणाने श्रीपालनो,
संबंध कहे सवि सोय ॥ मोरी० ॥ चा० ॥ ८ ॥
वली नवपदमय छे आतमा, आतम नवपद जोय
॥ मो० ॥ ध्येय ध्याता ध्यान एकथी, भेद लहो
नवि कोय ॥ मो० ॥ चा० ॥ ९ ॥ आतमधर्मीने देश
ना, धारजो हृदय मोझार ॥ मो० ॥ खिमावि

जय जस संपदा, शुनविजय सुखकार ॥ मो० ॥
॥ चा० ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली नेवुमी ॥

॥ अजित जिणंदशुं प्रीतडी ॥ ए देशी ॥

॥ सहियर चतुर चकोरडी, गुण उरडी हो थइने उज माल ॥ आवो गुरुने नेटवा, दुःख मेटवा हो सुणी धर्म रसाल ॥ १ ॥ बलिहारी गुणवंतनी, ऋजुमति हो होय कोड कल्याण ॥ ए आंकणी ॥ नावठ नांजे नवतणी, वलि वाजे हो घरे जित निशांण ॥ बलि हारी गुणवंतनी ॥२॥ वलि आतम तत्वनी सेवना, शुन देशना हो सुणतां जे रीफ ॥ तेहिज तत्व प्राप्ति तणुं, प्रनु नांख्युं हो आगममां बीज ॥ बलि० ॥ ३ ॥ नमनानोगमन वंदने, गुरु वीनयें हो होय लान अपार ॥ समकित शुद्ध ग्रही सही, ते वेहेलो हो लहे नवजलपार ॥ बलि० ॥४॥ स्वस्तिक कारण स्वस्तियुं, गुरु आगलें हो रचियें मनरंग ॥ कुंकुम रोल कचोलडां, धरी उपर हो श्रीफल शुनचंग ॥ बलि० ॥ ५ ॥ इव्य मंगलथी नावीयें, नाव मंगल हो दानादिक चोक ॥ उपर साकर संपदा, सही पामे हो शुन दृष्टि लोक ॥ बलि० ॥६॥ चोक पूख्यो

गति चारनो, करी फेरा हो नवमांहि अनंत ॥ आ
तमराम सुगुरु हवे, मुज दीजें हो सही सुख अनंत
॥ वलि० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली एकाणुमी ॥

॥ रुडीने रढियाली रे समकित श्राविका रे ॥ सज
करि शोल नला शणगार ॥ कर धरी रजत रकेबी
सार ॥ रूडीने० ॥ १ ॥ कुंकुम रुडी मांहे कुंकावटी
रे ॥ कुंकम थाल नर्यो करि श्रीकार ॥ निरखवा
चाली गुरु देदार ॥ रूडीने० ॥ २ ॥ सहियर टोली
रे साथें मली संचरी रें ॥ जई गुरुकेरा वंदे पाय ॥
गहूंली करे शुन चित्त लाय ॥ रूडीने० ॥ ३॥ मंगल
करती रे निज आतम नणी रे॥ वलि नलो कंकणवा
नो करे रणकार ॥ थाय रूडो झांझरनो झणकार ॥ रू
डीने० ॥ ४ ॥ लूंछणा करती रे गुरुगुण हेजशुं रे ॥
श्रीफल ठवती करे रंगरोल ॥ जाणती नथी कोइ
गुरुने तोल ॥ रूडीने० ॥ ५ ॥ मंगल करती हियडे
हेजशुं रे॥ वलि सुणी आगमनो समुदाय ॥ नवजल
सायर तरण उपाय ॥ रूडीने० ॥ ६ ॥ उत्तम घरनी
रे श्रवणें चेतना रे॥ सांजली हेयडे हरख न माय॥
प्रेम कहे जिम अमिय समाय ॥ रूडीने० ॥ ७ ॥

॥ अथ जयंती श्राविकानी गहूंली बाणुमी ॥

॥ फतमलनी देशी छे ॥

॥ चित्तहर चोवीशमा जिनराय, नयरी कोसंबी समो सर्या ॥ चि० ॥ मनमोहन मुनिराज, चउदहजारें परिवर्या ॥ १ ॥ चि० ॥ सुरनर परषदा बार, रतन गढें आवी ठर्या ॥ चि० ॥ बेठा सिंहासन नाथ, चा मर छत्र अलंकर्या ॥ २॥ चि० ॥ वंदे उदायन नृप, रूप चार दर्शन दीये ॥ चि० ॥ समकिति व्रतधर लोक, कोक कमल परें विकसियें ॥३ ॥ चि० ॥ रंभा अपछरा ताम, गहूंली करीने वधावती ॥ चि० ॥ रूपें जयंती समान, नामें जयंती महासती ॥ ४ ॥ चि० ॥ वीर अक्षर दोय मंत्र, जपती नित्य जपमालिका ॥ चि० ॥ भक्ति सोवन रसी देह, जेह हजूरी श्राविका ॥ ५ ॥ चि० ॥ नणंद भोजाइ साथ, नाथ आगल ऊभी रही ॥ चि० ॥ प्रश्न पूछे कर जोडी, प्रभुजी उत्तर देतां सही ॥६॥ चि० ॥ जागता ऊंघता कोण, उद्यमी आलसु कोण भला ॥ चि० ॥ धर्मी अधर्मी लोक, शतक बारमें भगवइ वरा ॥ ७ ॥ चि० ॥ सुणी हरखित कहे देव, महेर नजर मोटा तणी ॥ चि० ॥ थइ हुं जगविख्यात, जो प्रभु पोता

नी गणी ॥ ७ ॥चि०॥ विचरो देश विदेश, पण मुऊ हृदय वसो सदा ॥ चि० ॥ श्री ग्रुनविरजिणंद, ढेह न देशो मुऊ कद्दा ॥ ए॥ चि० ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली त्र्याणुमी ॥

॥ सुण वात कहुं साहेली रे, गुरु गुण गावा टेव प डी ॥ नहीं आवे फरी आ एवी रे, पुण्यतणी आ एक घडी ॥ सुण० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ सहु सखी उ मलीने चाली रे, गुरु आगल जइ पाय पडी ॥ ए केक थकी अधिकेरी रे, गुरु गुण गाति हरख धरी ॥ सु० ॥ २ ॥ नव अनंता नमतां रे, पुण्य संयोगें योग मल्यो ॥ जिनवाणी अतिमीठी रे, सुरतरु म्हारे आज फल्यो ॥ सु० ॥ ३ ॥ संसार समुद्रने तरवा रे, जोने एहिज जहाज समी ॥ जिनवाणी अतिसारी रे, नविजनने हृदयें अतिय गमी ॥ सु०॥ ४ ॥ योग्य जीवने हितकारी रे, शांत सुधारस ए वाणी ॥ नय निक्षेप प्रमाणी रे, अनेक गुणनी जे खाणी ॥ सु० ॥ ५ ॥ रत्न त्रयनुं कारण रे, तारण नव्यने एह स ही ॥ सरस सुधारस जेहवी रे, देवेंद्रसुरीएं एह कही ॥ सु० ॥ ६ ॥ प्रज्जु मुख बिटथी खरती रे, ग णधर लीए चित्तधरी ॥ अंग उपांगनी रचना रे, नय

गम नंग अनेक करी ॥ सु० ॥ ७ ॥ प्रवचन कुंसमे गुंथि रे, मूनिवर राजने कंठ ठवी ॥ देवेंद्र सूरि एम नांखे रे, नविजन प्राणी ए खेत नणी ॥ सु० ॥८॥ स्वस्तिक पूरे मनरंगें रे, गुरु मूख जोती सुविशाला ॥ प्रेमेथी नविजन नावो रे, अमर लहे वर शिव बाला ॥ सु० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली चोराणुमी ॥ धोलनी देशी ॥

॥ देश मूलकने रे परगणा, हाकेम हुकम करंत ॥ ठडीदार चोपदार नजडा, ए सहु महोटा नाइ धरंत ॥ रूपैयानी शोना रे शी कहुं ॥ १ ॥ कसबी ठोगाली पालखी, रथधरी घूघर माल ॥ सेवक हींफे रे मलप ता, धनपाल गोडीनी चाल ॥ रूपैया० ॥ २ ॥ उंचा उंचा मंदिर मालिया, खाजलीआला ठे गोख ॥ कोरणी आलाठे गोख ॥ रू० ॥ ३ ॥ आवो बेशो रे सहु करे, वली दीये आदर मान ॥ तोये पण बेसे नहीं, नहीं सांनले देइ कान ॥ रू० ॥ ४ ॥ निरधन आवे रे ढूंक डो, न दीये आदर मान ॥ महोढुं मरडीने नीचुं जूए, पग मेलवानुं नहीं ठाम ॥ रूपैया० ॥ ५ ॥ ग्रंथ विनानो रे गांगलो, ग्रथें गांगा रे शेठ ॥ ग्रंथविनाना रे शेठीआ, दीसे करता रे वेठ ॥ रू० ॥ ६ ॥ विवा

वाजमें भजला, संघपति नाम धराय ॥ जगमां कहे
वाया रे भजला, ए सहु महोटा नाइ पसाय ॥ रू० ॥ ७ ॥ संगराम शोनी रे वावरे, मोरो बत्रीश हजार ॥ वत्सपाल तेजपाल भजला, ए सहु जगत मझार ॥ रू० ॥ ८ ॥ दीपविजय कविराजने, होजो मंगल माल ॥ जगमां कहेवाया रे भजला, कोरडी आलाने मान, फूदडीआलाने मान ॥ रू० ॥ ए ॥

॥ अथ गहूंली पंचाणुमी ॥

॥ एतो अमल कप्प उद्यानमां, देवाची नारी ॥ एतो रूपकला गुण नारी हो ॥ एतो धारी रे समभाली रे, आवी वंदे वीरने जी ॥ १ ॥ दइ प्रदक्षणा स्वामीने, देवाची नारी ॥ एतो निज निज नाम सुणावी हो ॥ एतो नावे रे वधावे रे प्रभुने नाचे रंगशुं जी ॥ २ ॥ ठम ठम ठमके वींछीया, देवाची नारी ॥ एतो घम घम घूंघरा वागे हो ॥ एतो रागें रे प्रभु आंगें रे संगे स्वर आलापतीजी ॥ ३ ॥ जणणण विण वजावती, देवाची नारी ॥ एतो घणणण घुमणी लेती हो ॥ एतो देती रे करताली रे, ताली गाती गीतने जी ॥ ४ ॥ दोंदों धप मप्प ठंदशुं, देवाची नारी ॥ एतो वागे मृदंग सुढंगीहो ॥ एतो रंगी रे गुण संगी रे

चंगी वागें वांशली जी ॥५॥ थेइ थेइ थेइ मुख उच्चरे, देवाची नारी ॥ एतो बिच बिच अंगने वाली हो ॥ एतो बाली रे सुकुमाली रे, नाली मुखडुं वीरनुं जी ॥ ६ ॥ लली लली देती उवारणा, देवाची नारी ॥ एतो समकित निरमल करती हो ॥ एतो धरती रे गुण धरती रे, जिहां प्रजुजी विचरतां जी ॥ ७ ॥ एणीपरें नाची नमि करी, देवाची नारी ॥ एतो अनुजव सुख मत वाली हो ॥ एतो गाली रे निज नव टाली रे डुःखडुं पहोती स्वर्गमां जी ॥ ८ ॥ वाचक रामविजय कहे, देवाची नारी॥ एतो समकितवंतनी करणी हो ॥ एतो वरणि जिनजक्ति नीसरणी हो शिव मंदिर तणी जी ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली ब्त्रुमी ॥

॥ तेतरिया नाइ तेतरिया ॥ ए देशी ॥

॥ आज नगरमां महीमां उब्बव, जले अम्ह गुरु आव्या रे ॥ संघ सहुने मनमां जाव्या, आणंद हरखें वधाव्या रे ॥ आज० ॥ १ ॥ पंच समिति त्रण गुप्तें गुप्ता, बकाय जीवने पाले रे ॥ पंच महाव्रत सुधाधारे, पंचाचारशुं माले रे ॥ आज० ॥ २ ॥ आगम गुरुनो सांजली हर्षित, वंदन बहु जन आवे रे ॥ नर

नारीना मिली मिली टोलें, गुरुगुण गहूंली गावे रे ॥आज०॥ ३ ॥ शुभपरिणति वर पट्ट बिछाइ, आतम थाल लइ हाथें रे ॥ शुभरति कुंकुम निजगुण तांडुल, समकित श्रीफल साथें रे ॥आज०॥ ४ ॥ जिनवाणी बहुरंगी उढणी, उढी मनने भावें रे ॥ ज्ञानादिक गुण लूंछणां रूडां, भावशुं शालि वधावे रे ॥आज०॥ ५ ॥ इव्यने भावे गुरुने वंदी, सांभलो वीर प्रभु वाणी रे ॥ तप जप नियम व्रत बहु कीजें, मलुक भावना आणी रे ॥आज० ॥ ६ ॥इति ॥

॥ अथ गहूंली सत्तावीसमी ॥

॥ अंबसाल उद्यानमां, कांइ विचरंता वीरजिणंद रे॥ समवसरण देवें रच्युं, कांइ बेग नयणानंद ॥ जिन जीने बोलडीये ॥ मोह्या मोह्या रे सुर नर लोक ॥ जि० ॥ १ ॥ परषदा बार तिहां मली, कांइ बेठी नमी शुभ चित्त रे ॥ कोडी गमे सेवा करे, कांइ निर जर नेपूरहुंत ॥ जि० ॥ २ ॥ चउमुख चउदिशि वीर जी, कांइ देवे देशना सार रे ॥ दान शीयल तप भाव ना, कांइ शिवपुर मारग चार ॥ जि० ॥ ३ ॥ चार निकायना देवता, कांइ अण हूंते एक कोडी रे ॥ से वा करे प्रभुजी तणी, कांइ उभा बे कर जोडी ॥ जि०

॥ ४ ॥ वनपालकें जइ वीनव्यो, कांइ श्रीकोणिक महाराय रे ॥ सपरिवारशुं आवियो, कांइ वेगे नमि प्रभु पाय ॥ जि० ॥ ५ ॥ समतारस मयी देशना, कांइ भांखे वीर कृपाल रे ॥ नयगर्भित सुणी बोलडा, कांइ हरख्यो चित्त नृपाल ॥ जि० ॥ ६ ॥ मिथ्यामत दूरे टल्यो, कांइ उग्यो समकित सूर रे ॥ मोह महामद मोडीयो, कांइ प्रगट्यो आतमनूर ॥ जि० ॥ ७ ॥ कोणिक घरणी धारणी, कांइ भरी अक्षत शुचि थाल रे, जिन आगल स्वस्तिक करे, कांइ कुंकुम रंग रसाल ॥ जि० ॥ ८ ॥ मलीने सौ गावे तिहां, कांइ प्रभुगुण भक्ति सिलोग रे ॥ ज्ञान सुजस विनोदमां, कांइ मग्न हुआ बहु लोक ॥ जि० ॥ ९ ॥

॥ अथ गहूंली अठाणुमी ॥

॥ करमारा हो नणदि वाजां वाजीयां ॥ ए देशी ॥

॥ पंच महाव्रत हो पालतां, पालतां जीव छ काय ॥ मोरी आली बहेनी ॥ चतुर चोमासुं गुरुजी आविया ॥ ए आंकणी ॥ संघ सहुने हो मन भावता, भावता प्रवचन माय ॥ मोरी आली बेहनी० ॥ १ ॥ गाम गामहो भवि बोधता, रोधता विषय प्रमाद ॥ मोरी आली० ॥ पुण्य प्रभावें हो गुरु

इहां, मलिया धर्मना वाद ॥ मोरी० ॥ २ ॥ शोल
शिणगार सजी सुंदरी, गावेजी गीत रसाल ॥ मोरी०॥
गहूंली रचे मन रंगशुं, सुणीयेंजी सूत्र विशाल
॥ मोरी० ॥ ३ ॥ धवल मंगल गावे गोरडी, वाजते
ढोल निशान ॥ मोरी० ॥ लली लली कीजें जी लूंछ
णा, धरतांजी धर्मनुं ध्यान ॥ मोरी० ॥ ४ ॥ नगर
लोक सहु हरखीया, वाध्योजी धर्मनो रंग ॥ मोरी०॥
वीरशासन मांहे एहवा, मलूक नाव अनंग ॥ मोरी
आठी बहेनी० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ चक्केसरी मातानी गरबी नवाणुमी ॥

॥ अलबेली रे चक्केसरी मात, जोवाने जइयें ॥ जेह
नी सोवन वर्णी गात्र ॥ जोवाने जइयें ॥ ए आंक
णी ॥ जोवा जइयें पावन थइयें, देखी मन गहग
हीयें रे ॥ एक तीरथ बीजी जगदंबा, वंदी संपत
लहीयें ॥ जो० ॥ अ० ॥ १ ॥ आठ भुजाली अति
लटकाली, मृगपति वाहन वाली रे, जिनगुण गाती
लेती ताली, तीरथनी रखवाली ॥ जो० ॥ अ० ॥
॥२॥ श्री सिद्धाचल गिरि पर गाजे, देवी देव समा
जे रे ॥ रंगित जाली गोंख बिराजे, घडी घडीयालां
वाजे ॥ जो० ॥ अ० ॥ ३ ॥ घाटडी लाल गुलाल

सोहावे, पीला राता चरणा रे ॥ बहु शोने छे जग जननीने, केशर कुंकुम वरणा ॥ जो० ॥ अ० ॥४॥ खलके कर कंकणने चूडी, नवसरो हैयडे हार रे ॥ रत्नजडित जांजरछे चरणे, घूघरीयें घमकार ॥ जो० ॥ अ० ॥ ५ ॥ नाके मोती उज्ज्वल वाने, बाजुबंध बेहु बाहें रे ॥ केडें कटि मेखला रणजणती, फलके हीरा मांहे ॥ जो० ॥ अ० ॥ ६ ॥ देश देशना न्हाना महोटा, संघ लइ संघवी आवे रे ॥ ते सहु पहेलां श्रीफल चूनडी, जगजननीने चढावे ॥ जो० ॥ अ० ॥ ७ ॥ धन्य धन्य ए श्रीपुंमरगिरि जिहां, जगदंबा नो वास रे ॥ जे कोइ ए तीरथने सेवे, तेहनी पूरे आश ॥ जो० ॥ अ० ॥ ८ ॥ संघवी संघतणी रख वाली, श्रीजिन सेवा कारी रे ॥ दीपविजय कहे मंग लिक करजो, छे बहु शोना तारी ॥ जो०॥अ०॥ए॥

॥ अथ गहूंली शोमी ॥

॥ सामलिया सामजी रे ॥ ए देशी ॥

॥ ज्ञान गुणे वर्या रे, अरिहा अजित जिणंद नग वान ॥ आवी समो सर्या रे, नयरी साकेतन उद्या न ॥ साथें पटोधरा रे, सिंहसेनादिक वरगणधार ॥ एक लाख मुनिवरा रे, ज्ञान क्रियाना जे नंमार ॥१॥

क्षपक आरोहिने रे, मुनि गुणठाणे वधता जाय ॥ वर निरमोहीने रे, केइ मुनि घाति करम खपाय ॥ केइ परिपाटीयें रे, डुक्कर तप अनिग्रह करनार ॥ इम बहु घाटीयें रे, प्रभुने संघे छे परिवार ॥ २ ॥ सहु देवे मली रे, कीधुं समोसरण मंमाण ॥ बेठा मन रली रे, त्रीजा गढमां त्रिभुवन नाण ॥ जइ आ रामीयें रे, दीधी वधाइ प्रभुनी ताम ॥ षटखंम सा मीयें रे, पूरित मन वंछित काम ॥ ३ ॥ बहु आमं बरें रे, आवे चक्रिसगर उछाह ॥ भक्ति पुरस्सरें रे, वांदे प्रभुजीना पाय ॥ प्रभुदीयें देशना रे, भवियण ने प्रेम प्रकार ॥ चार प्रकारने अनुसरी रे, पामो भवियण भव निस्तार ॥ ४ ॥ सखीये परवरी रे, नामें रत्न सुकेशा नार ॥ अति हरखें करी रे, पूरे मंगल आठ उदार ॥ त्रण खमासणे रे, वांदे वधावे थइ उजमाल ॥ रंगभरथी सुणे रे, प्रभुना अमृत व यण रसाल ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली एकशो ने एकमी ॥

॥ द्वारिका नयरी सुंदरु ॥ तारुजी ॥ सहसावन अ भिराम हो ॥ गुणवंती गहूंली करे फागमां ॥ वारुजी ॥ १ ॥ नेम जिणंद समोसर्या ॥ तारुजी ॥ वन

पालक दीये वधाइ हो ॥ गु० ॥ श्रीकृष्ण अग्रमही
षी अच्छुं ॥ तारुजी ॥ वंदन पडह वजाय हो ॥
गु० ॥ २ ॥ पंच अनिगम साचवी ॥ तारुजी ॥ वांदे
तिहां गोविंद हो ॥ गु० ॥ जगगुरु आगल गहूंली
करे ॥ तारुजी ॥ देखी प्रन्नु मुख अरविंद हो ॥ गु०
॥ ३ ॥ अक्षारत्न चोक उपरे ॥ तारुजी ॥ नक्ति
कुंकुम रंग रोल हो ॥ पंच प्रमादनी तर्ज्जना ॥ ता
रुजी ॥ पंच रत्न रवित अमोल हो ॥ गु० ॥ ४ ॥
ज्ञान गुलाल उडावतां ॥ तारुजी ॥ तप अबीर न
री नरी मुठि हो ॥ गु० ॥ दर्शन पीचकारी नरी ॥
तारुजी ॥ चारित्र परिमल उत्कंठि हो ॥ गु० ॥ ५ ॥
नावना वसंत गाये तिहां ॥ तारुजी ॥ गिरुआ नेम
ने पास हो ॥ गु० ॥ समकित फगुवा तिहां दिये
॥ तारुजी ॥ जेथी जाये नवनी काश हो ॥ गु० ॥
६ ॥ गहूंली एणी परें कीजीयें ॥ तारुजी ॥ पामे मु
क्ति विलास हो ॥ गु० ॥ पंमित ग्यान शिवपद लहे
॥ तारुजी ॥ विनयें सफल होये आस हो ॥गु०॥७॥

॥ अथ गहूंली एकशो ने बेमी ॥

॥ रामचंदके बाग, चांपो मोरी रह्योरी ॥ ए देशी ॥
॥ चंपानयरी उद्यान, सुरतरु मोरी रह्योरी ॥ वीर

पटोधर धीर, सोहम आय रह्योरी ॥ १ ॥ जीय कोह जीय मान, माया लोभ दह्योरी ॥ संपूरण श्रुतज्ञान, जिनवर बिरुद वह्योरी ॥ २ ॥ आश्रव विषय प्रमाद, निद्रा पंच तजेरी ॥ दशविध सामाचारी, षट्विध जय णा भजेरी ॥ ३ ॥ उपकारें धरे बार, भावना तप पडिमारी ॥ निःकारण जगबंधु, रवि ससि मेरु समारी ॥ ४ ॥ कंचन कमल विचाल, बेसी धरम कहेरी ॥ जेहथी भवियण लोय, आतम तत्व लहेरी ॥ ५ ॥ कोणिक नृपति नारि, घौयली गेलि करेरी ॥ माणिक मोति वधाय, पुण्य भंडार भरेरी ॥ ६ ॥ जिन शास ननी भक्ति,. करतां पाप हरेरी, सोहव सरिखे साद, घौयली गीत भणेरी ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली एकशो ने त्रणमी आठे लालनी देशी ॥

॥ ज्ञानादिक गुणखाण, राजगृहि उद्यान ॥ गणधर लाल, सोहम सामी समोसर्या जी ॥ १ ॥ कंचन गौर शरीर, वाणी गंगा नीर ॥ ग० ॥ त्रिहुं पंथें प सरे सदाजी ॥ २ ॥ अंग उपांगह बार, दशविध रुचिनो धार ॥ ग० ॥ डुगविध शिक्षा उपदेशें जी ॥ ३ ॥ तेर क्रिया व्रत बार, गिहि पडिमा अगीआ र ॥ ग० ॥ श्रावक गुण भेद सिद्धना जी ॥ ४ ॥

विनय वैय्यावच्च कल्प, धरे दशविध ठ अकल्प ॥ ग० ॥ वंदण दोष विकथा तजे जी ॥ ५ ॥ कुंकुम रोल कचोल, गहूंली करे रंगरोल ॥ ग०॥ अक्षत श्री फल उपरें जी ॥ ६ ॥ मगधाधिपनी नारि, शोल सजी शणगार ॥ ग० ॥ लली लली करति लूंठ णांजी ॥ ७ ॥ जोति गुरुमुख चंद, पामती परमानंद ॥ ग० ॥ चतुर चकोरडी गोरडी जी ॥ ८ ॥ सुर वधू नरवधू कोडि, मलि मलि सरखी जोडि ॥ ग० ॥ गावे जिनशासन धणी जी ॥ ए ॥

॥ अथ गहूंली एकशोने चारमी ॥

॥ पंचम पदने गाइयें रे ॥ ए देशी ॥

॥ श्रुतनाणी श्रुतधर गुरु रे, पंचाश्रवना त्यागी रे ॥ दशत्रिक वेता भाव समेता, संवर तप सोभागी ॥ धन गुरु वंदो रे ॥ वंदो वंदोरे जगत हितकार ॥धन० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ जीवाभिगम ए सूत्रजमांहे, जीवाजीव विचार रे ॥ एग दुति चउ पण ठविहा, जूजूआ भेद उदार ॥ धन० ॥ २ ॥ शशी रवि ग्रह नक्षत्र तारा, जंबु लवणे बमणा रे ॥ धाइय त्रिगुणा भणजो सघले, चउदिशि फिरे परिभमणा ॥ धन० ॥ ३ ॥ इणीपरें देशना दीये गुरु नाणी, पुण्य

पाप उखाणी रे॥ श्रद्धा जासन तत्व रमणथी, थाये अनुजव नाणी ॥ धन० ॥ ४ ॥ श्रद्धावंत सुश्राविका रे, निसुणो श्रीजिन वाणी रे ॥ सन्मुख जोती अक्षत पूरती, मुक्ति पदनी निशानी ॥ धन० ॥ ५ ॥ चहुं गति डुःखडा चूरती रे, ठवती पंच रतन्न रे ॥ प्रजु गुण गाती पाप पखालती, प्रणमो थुणती धन्य ॥ धन० ॥ ६ ॥ मुक्ता फल वर थाल वधावी, लेती समकित रंग रे ॥ जगगुरुनो विनय साचवती खेमें, धरती ध्यान तरंग ॥ धन० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली एकशो ने पांचमी ॥

॥ गोकुल मथुरां रे वाला ॥ ए देशी ॥

॥ महासेन वनमां रे आवे, तिहां श्रीवीरजिणंद सुहावे ॥ समवसरण तिहां सुर विरचावे, चोशठ इंड नमे अरचावे ॥ महा० ॥ १ ॥ शम दम शांत गुणें ते जरीया, जाणे जंगम नाणना दरीया ॥ चौद सहस मुनिशुं परवरीया, राजगृही नयरी संचरीया ॥महा० ॥ २ ॥ राजा श्रेणिक वंदन आवे, चेलणा राणी साथें सुहावे ॥ बारे परषद वंदे जावें, देशना सुणी मन रंजन थावे ॥ महा० ॥ ३ ॥ गुरुमुख आगल गहूंली कीजें, नरजव पामी लाहो लीजें ॥ कुंकुम

घोली मोतीडे वधावे, नावें समकित शुद्ध थावे ॥ म
हा०॥४॥ श्री चंद्रोदय रत्न सूरिंद, निर्मल ऊग्यो पु
नम चंद ॥ जाणे जंगम मोहन वेली, टोली मलि मं
गल गाय साहेली ॥मह्ा०॥५॥ गहूंली गाइ रंग रसा
ली, गुणीजन हृदय कमलमां वाली ॥ श्रीविजयराज
सूरीश्वर राया, जे प्रणमे ते शिव सुख पाया ॥म०॥६॥

॥ अथ गहूंली एकशोने छमी ॥

॥ चालो साहेली जंगम तीरथ वंदन जइयें, हांरे
मुनि मुख निरखी आपण बे पावन थइयें ॥ चा० ॥
पंच महाव्रत जे नित्य पाले, सुमति समदृष्टि सम
नाले ॥ षटकायजीव नित प्रति पाले, पंचेंद्रि विषयने
टाले ॥ चालो० ॥ १ ॥ नवविध ब्रह्म गुप्ति जे धारे,
चार कषाय चोरने वारे ॥ वली त्रण दंडने मनशुं वारे,
त्रण गुप्तिशुं आतम तारे ॥ चा० ॥२॥ थावर निरय
तिरि गति नावे, देव मनुष्य पदवि पावे ॥ एम शुद्ध
संयम मन नावे, ते मुनिवर मुक्ति जावे ॥ चा०॥३॥
राग द्वेषनें जेणे परिहरिया, मुनि गुण समतारसना द
रिया ॥ एम गुण सत्तावीशों नरिया, ते मुनि वर शिवर
मणी वरिया ॥ चा० ॥ ४ ॥ गणधर आगल गहूंली
कीजें, कुंकुम अक्षत थाल नरीजें ॥ सुणी वाणी दी

लडा रीजे, नरनव पामी लाहो लीजें ॥ चा० ॥ ५ ॥ द्वादश अंग गुणे नरिया, जिन मारग आराधे किरिया ॥ जेणे तास्या छे आपणा परिया, संवेग सुधारस संचरिया ॥ चा० ॥ ६ ॥ विजयराज सूरिश्वगछराया, पट्टोधर चंद्रोदय गाया ॥ जिन वाणी सुधारस पाया, नवि जीवें निर्मल गुण गाया ॥ चा० ॥ ७ ॥

॥ अथ गहूंली एकशोने सातमी ॥ थारा महेला उपर ॥ मेह जरूखें वीजली हो लाल ॥ ए देशी ॥

॥ शोल करी शणगार, सोहागण नामिनी हो लाल ॥ सोहागण नामिनी ॥ उढी नवरंग घाट, चलि गज गामिनी हो लाल ॥ च० ॥ शीलवती करथाल, ग्रही कुंकुम नरी होलाल ॥ ग्रही० ॥ आवे समोसरण मांहे, हैये उलट धरी हो लाल ॥ हैये० ॥ १ ॥ सिंहासन मणि पीठ, विराजत जगधणी होलाल ॥ विरा० ॥ वीरजिनेश्वर वाणी, वखाणे अति घणी होलाल ॥ वखा० ॥ षट्घटि पर्यंत, प्रकाशे परवडो होलाल ॥ प्रका० ॥ नैगम अर्थ प्रवाह, त्रिजुवन दीवडो हो लाल ॥ त्रिजु० ॥ २ ॥ कुमति मत अंधकार, हरे ज्युं दिनमणि हो लाल ॥ हरे० ॥ परषद हर्षित थाय, लहे जिम सुरमणि होलाल ॥ लहे० ॥ सुणी

प्रभुनी वाणी, करे गुण गहूंअली हो लाल ॥ करे०॥ आढो चोखा मान, सोपारी उजली हो लाल सोपा० ॥ ३ ॥ वधावे मुनिरायके, दीलमांहे हरखती हो लालके ॥ दिल० ॥ गुरु मुख पूनम चंदके, नय णे निरखती होलाल के ॥ नय० ॥ पामी स्त्री अव तार, गणे ए सारता होलाल ॥ गणे० ॥ खारा स मुद्र मांहे, ए मीठी वारता होलाल ॥ ए मीठी० ॥४॥ गोरी गावे गीत, गुरु गुण रस चढी होलाल ॥ गुरु० ॥ राग द्वेष दोय चोर, संघाते अतिवढी हो लाल ॥ संघाते० ॥ करे प्रशंसा देवके, धन धन ए वशा होलाल के ॥ धन०॥ मनुज पणानो लाहो, ली ए छे शुभदिशा होलाल के ॥ लीए छे०॥ ५ ॥ पधारे देव वंदे, तीर्थंकर मलपता होलाल ॥ तीर्थं० ॥ आवी बेठो पदठाण, श्रीगौतम दीपता होलाल ॥ श्रीगौ० ॥ सूत्र तणो जलधार, वरसावे वेगशुं हो लाल ॥वरसावे०॥ विबुद्ध दर्शन वृक्ष, वधारे नेगशुं होलाल ॥ वधारे० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ पर्यूषण स्तुति एकशो आरंभी ॥

॥ परव पजूसण पुण्ये पामी, श्रावक करे ए करणी जी ॥ आठे दिन आचार पलावे, खांमण पीसण ध

रणी जी ॥ सूक्ष्म बादर जीव न विणासे, दया ते म नमां जाणे जी ॥ वीरजिनेसर नित पूजीने, शुद्धो समकित आणेजी ॥ १ ॥ व्रत पाळेने धरे ते शुद्धि, पाप वचन नवि बोळे जी ॥ केसर चंदने जिन सवी पूजे, जवजय बंधन खोळे जी ॥ नाटिक करीने वा जित्र वजाडे, नर नारीने टोळें जी ॥ गुण गावे जि नवरना इण विध, तेह्ने कोइ न तोळें जी ॥ २ ॥ अठम जक्त करी लइ पोसह, बेसी पौषध साळे जी ॥ राग द्वेष मद मछर ठांडी, कुड कपट मन टाळे जी ॥ कल्प सूत्रनी पूजा करीने, निशदिन धर्मे माळे जी ॥ एह्वी करणी करता श्रावक, नरक निगोदिक टाळे जी ॥ ३ ॥ पडिकमणुं करियें शुद्ध जावें, दान संवत्सरी दीजें जी ॥ समकेत धारी जे जिन शासन, रात्र दिवस समरीजें जी ॥ पारणवेळा पडि लाजीने, मन वंछित महोत्सव कीजे जी ॥ चित्त चोखे पजूसण करशो, मन मान्यां फळ लेशो जी ॥ ४ ॥

॥ अथ गहूंली एकशोने नवमी ॥

॥ वीरजीने वचने अमृत रस जरे रे ए देशी ॥

॥ जक्ति करीजें रे जवि श्रुतधर तणी रे, जेह्नी सा ख जरे जिनदेव ॥ संदेह पूछीजें नित मेव ॥ जक्ति०

॥ १ ॥ तुंगीया नामे रे नगरी अति जली रे, जिहां श्रावक बारे व्रतधार ॥ जेहनां मोकलां घर तणा बार ॥ जक्ति० ॥ २ ॥ गुणना रागी रे जाण नवत त्वना रे, जिनमत रंजित जेहनी मींज ॥ वाव्युं स मकित सुरतरु बीज ॥ जक्ति० ॥ ३ ॥ तेणहिज नयरें रे थिविर समोसख्या रे, पाश संतानीया श्रुत जंमार ॥ साथें पांचशे बे अणगार ॥ जक्ति० ॥ ४ ॥ पुप्फवई चैत्यें रे अवग्रह अवग्रही रे, ते सुणी श्रा वक हरषित थाय ॥ गुरुपद वांदवा संघ तिहां जा य ॥ जक्ति० ॥ ५ गहूंली करे रे शुन चित्तें श्रावि का रे, गुरु मुख निरखी हरखित थाय ॥ वांदी बेसे यथोचित गय ॥ जक्ति० ॥ ६ ॥ धर्म सुणीने रे श्रा वक वीनवे रे, संयम फल तपफलथी होय ॥ पूछ्या प्रश्न तिहां एम होय ॥ जक्ति० ॥ ७ ॥ संयम केरुं रे फल अनाश्रव कह्युं रे, तपफल निर्झराते होय॥ इम कहे उत्तर मुनि सहु कोय ॥ जक्ति० ॥ ८ ॥ वली ते पूछे रे कहो तुमे पूज्यजी रे, तो किम देव गति ते जाय ॥ गुरु कहे सांजलो महानुजाय ॥ ज क्ति० ॥ ए ॥ सुरपणु होवे रे सराग संयमें रे, शेष करमथी ते थाय ॥ इम सुणी सहु निज निज घर

जाय ॥ नक्ति० ॥ १० ॥ नगवती अंगें रे नांखे वीर जी रे, एहमां नहीं कोइ संदेह ॥ श्रीविजय उदय सूरि मुखथी एह ॥ कहे मुनि रामविजय गुणगेह॥११॥

॥ गहूंली एकशो दशमी ॥

॥ साहेली महारी राजगृही उद्यान, प्रनुजी समोसस्या रे लोल ॥ सा० ॥ गणधर मुनिवर सहस, चौदशुं परिवस्या रे लोल ॥ सा० ॥ करता नवि उपकार, दया मन धारीने रे लोल ॥ सा० ॥ सकल जंतु प्रतिपाल, बिरुद संनारीने रे लोल ॥ १ ॥ सा० ॥ लीधो ठे अवतार, जगत प्रतिबोधवा रे ॥ लोल ॥ सा० चउगइ दुःख जंजाल, प्रतिमल रोधवा रे लोल ॥सा० अणहूंते सुरकोडी, सेवामां नित्य रहे रे लोल ॥सा०॥ कर जोडी मोडी मान, आणा शिर निरवहे रे लोल ॥ २ ॥ सा० ॥ चार निकायना त्रिदश, मली त्रिगडो करे रे लोल ॥ सा० ॥ चार गाउ परमाण, चतुरमुख उच्चरे रे लोल ॥ सा० ॥ जिनमुख पूरव पायपीठ, विराजे गणधरू रे लोल ॥ ३ ॥ सा०॥ आठ परपदा सुरराज, चार तिहां नर वरू रे लोल ॥सा०॥कहे वनपाल नूनाथने, नाथजी पधारिया रे लोल ॥ सा० ॥ मगधाधिप नूपाल, नूजाल मनरंजीया रे लोल ॥ सा० ॥ देइ

वधामणी सारके, जिनगुण गावतो रे लोल ॥ सा० ॥ कंचन रजत ते आठ, दूरथी वधावतो रे लोल ॥ ४ ॥ सा०॥ हय गय रह नड चतुरंग, सैन्य नरनार शुं रे लोल ॥ सा० ॥ शेठ सेनापति अंते, उरपरिवार शुं रे लोल ॥ सा० ॥ धुरथी त्रण प्रदक्षिणा, वंदे सुख करू रे लोल ॥ सा० ॥ पामी यथोचित ठाम, बेसे तिहां नृधरू रे लोल ॥ ५ ॥ सा० ॥ मुक्तिक स्वस्तिक राणी, चेलणा पूरती रे लोल ॥ सा० ॥ विच विच जिनमुख देखती, दुखडां चूरती रे लोल ॥ सा० ॥ धाराधर जिम वीर, वाणी प्रकाशतां रे लोल ॥ सा० ॥ तप जप संयम करी, सुख पामी शाश्वता रे लोल ॥ ६॥सा० ॥ सर्व विरति देश विरति, जिनमुख उच्चरे रे लोल ॥ सा०॥ रयणी नोजन केइ, ब्रह्म चर्य मन धरे रे लोल ॥ सा० ॥ नंना सारादियादि, पुरजणी आवीया रे लोल ॥ सां० ॥ विजय लक्ष्मी सूरिंदके, गुरु गुण गाइया रे लोल ॥ ७ ॥

॥ इति श्री गहूंली संग्रहाख्य पुस्तकस्य प्रथम नागः समाप्तः ॥